

122/4-A Erandavane
PUNE 411 004
24-2-88

Dear Arvind,

My last letter to you received no reply, and so we lost touch. I don't know whether this letter will find you, but I'm writing in hopes that it will.

At any rate, I must write to congratulate you most warmly on the ^{receipt} of the Nehru award for Popularisation of Science*. Most richly deserved, if I may say so. I have never ceased to admire your "educational toys" which you have pioneered in our country, and wish all success to your future efforts in this direction.

I have now become really "old", and cannot move around as I used to do. In spite of that, the high cost of living has forced me to accept a half-day job with Pratibha Advertising—in my 83rd year!

How are you, and Sunita, and little Dulari who must now be nearly 4 years old? I hope you are all flourishing, and would like to have news of you. Please convey my blessings to S & D.

With best wishes, and hoping this letter has not been written in vain!

Dada (T. Gay)

* which I read about in yesterday's "Maharashtra Herald"

24 ਮਾਰਚ

ਮੇਰੇ ਗੁਰਮਤ ਸਾਥ,

ਮੇਰੇ ਮੁਠੇ ਗਾਥੇ ਦੇ 96 ਨਿਮਾ ਅਤੇ ਨਿਮ
ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਗਾਥੇ ਦੇ ਲਿਖਾ ਗਏ ਹਨ। ਪੁਰ
ਪੁਰ ਗਾਥੇ ਅਤੇ ਨਿਮ ਅਤੇ ਗਾਥੇ ਦੀ ਲਿਖੀ
ਲਿਖੀ ਅਤੇ 12 ਗਾਥੇ ਅਤੇ ਨਿਮ ਅਤੇ
ਗਾਥੇ ਦੇ ਲਿਖੀ ਦੀ ਲਿਖੀ-ਲਿਖੀ ਦੇ ਗਾਥੇ
ਅਤੇ 'ਲਿਖੀ' ਅਤੇ 1 ਦੇ ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ।

ਅਗਲਾ, ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ। ਗਾਥੇ ਤੇ
ਲਿਖੀ ਗਾਥੇ ਦੇ ਲਿਖੀ ਅਤੇ 12 ਲਿਖੀ-ਲਿਖੀ
ਲਿਖੀ ਹੈ।

ਗੁਰਮਤ, ਲਿਖੀ, ਮੁਠੇ,

ਗਾਥੇ,

ਗੁਰਮਤ

ਪੁਰ ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ ਅਤੇ 12 ਲਿਖੀ-ਲਿਖੀ
ਲਿਖੀ ਲਿਖੀ।

नंदन

नई पीढ़ी का सप्ताह मासिक

हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

तार : हिंटाइम्स, फोन : ३३१९०६२, ३३१८२०१.

23 फरवरी, 1988

श्री अरविन्द गुप्ता
योगी पार्क
12-ए, कोरेगांव पार्क
पूना- 411001

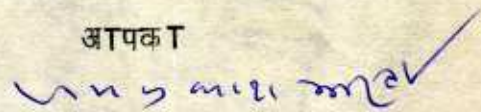
प्रिय भाई अरविन्द जी,

आपको विज्ञान का लोकप्रियता पुरस्कारमिला, हार्दिक
बधाई । मंगलकामनाएं भी कि आप इस राह पर निरन्तर
बढ़ते जाएं !

अपना फोटो भेजिए और कुछ विवरण भी ताकि नंदन
के पाठकों तक यह ख़ुशख़बरी पहुंच सके ।

सानन्द होंगे,

आपका



NANDAN : A HINDUSTAN TIMES PUBLICATION

Hindustan Times House, 18-20, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110001, Phones: 331-9062, 331-8201 (10 Lines)

Bombay: Industrial Assurance Bldg., Opp. Churchgate Station; Calcutta: 7, Kiron Shankar Roy Road;

London Office: London International Press Centre, Shoe Lane, London E.C. 4, 3 J8.



धर्मयुग

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

Replied
25/2/88

22 फरवरी, 88

प्रिय भाई,

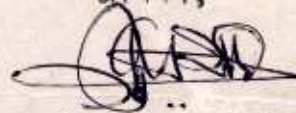
श्री कृष्ण कुमार {नयी दिल्ली} के पत्र से आपकी जानकारी मिली और आपको पत्र लिख रहा हूँ.

मालूम नहीं आप "धर्मयुग" देखते हैं या नहीं. उसमें हम "तरुण मंच" नाम से एक स्तंभ चलाते हैं. क्या आप "धर्मयुग" के पिछले कुछ अंकों में उस स्तंभ को देखेंगे और फिर सोचेंगे कि उस स्तंभ में आपकी क्या-क्या मदद मिल सकती है ? आसपास की चीजों से खिलौने बनाने की विधि सिखायी जा सकती है ? आपकी किताब भी देखना चाहूंगा.

कृपया इस विषय में लिखें. आपका पत्र व आपकी सलाह पाकर खुशी होगी.

शुभकामनाओं सहित,

आपका,



{कुमार प्रशान्त}
सहायक संपादक

श्री अरविंद गुप्ता
पूना.

E-184,
NARAINA VIHAR
NEW DELHI.
9-3-88.

Dear Arvind,

It was indeed a pleasure to watch you receiving the award on TV. Accept our congratulations. Kshamata & children enjoyed the fete.

I think this is after a spell of three years that we lost track and then I went to Department of Science & Technology to locate you & they gave me your address.

I left Delhi in 1985 for Jamshedpur on one of the site postings, worked there for 2 years & returned back to Delhi in 87 July and am continuing here since then.

Lot of things have happened in between, I have 2 daughters now, the Younger one has completed her 3rd Year on 24-2-88.

Dev is growing fast & fine and goes to school. Kshamata stays at home & runs things as usual.

How come you are at Pune, what all transpired between Dilli Rajhara (That's where you were when you visited us last at Delhi) & Pune? How is your family? How are your folks at Barnully? Apart from winning acclamations what are you doing? & lastly when are you next coming to Delhi?

विष्णु गिंजाजकार
३९ सेनाद नगर
नीलरवा, इन्दौर
४५२००९
२ मार्च १९८८

प्रिय अरविन्द,
स्नेह नमस्ते.

बधाई, बधाई हार्दिक बधाई.

ये लम्बे समय से मैं सोचता रहा कि आपसे सम्पर्क रखूँ,
पर हर बार बात टलती ही गई। जैसे लिरवापड़ी के मामले में
काफी कमजोर हूँ मैं। परंतु इस बार शुरुआत के लिए बस
अच्छा बहाना मिल गया। टी.वी. पर न्यूज सुनी और फिर
तो पुरस्कार समारोह भी देखा। बड़ी खुशी हुई।

दो साल पहले मैं पुणे आया था, जिन्-जयु यटवर्धन से
पूछताछ की पर समय कम होने से सम्पर्क नहीं बन पाया।

किसी मौके की तलाश में हूँ कि पुणे आने को मिले और फिर
बातचीत और नई गतिविधियों के बारे में पत्रों का दौरा चले।

मेरे पास भी अब काफी सामग्री इकट्ठा हो गई है। लगभग
दो सौ-रंगीन स्लाइड्स, प्राकृतिक सामग्री से बने चित्र, शिल्प
तथा देशी ढंग के खिलौने और प्रायद्वीपों के साथ बातचीत के
माध्यम से 'बच्चों में सृजनात्मकता' विकसित करने का मेरा
प्रयास रहता है। 'चक्रवर्त' में आपने देखा ही होगा।

दिल्ली में छिटाए के चौधरीजी के निमंत्रण पर 'दिनास्त्र'

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



डॉ० अरविन्द गुप्ता
201/D6 सोनी पार्क,
12-A कोरेगांव पार्क, पुणे
पुणे 411001
पिन PIN

PUNE

पत्र का तृतीय फोल्ड

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

विष्णु चिंमलकर
3C संतादनगर, नौमस्ता
मुम्बई
पिन PIN 402001



के बारे में चर्चा के लिए गया था। दूसरा दौर 98 से 100 मार्च '77 को है। क्या आप भी पधार रहे हैं? वैसे जोधरीजी का एक सुझाव यह भी है कि मैं हफ्ते भर के लिए वहां बच्चों का एक वर्कशॉप लूं याने अपने बंग से रोज़ें और वे मेरा इमारा पाला करता रहे। सुझाव बड़ा अच्छा है। देखना है क्या कार्यान्वित हो-
रें, देरवो, इस मई के आसपास पुणे आनेकी योजना बना रहा हूं-
वाकी सब कुछ ठीक है। पारिवारिक शुभचिन्तन के साथ-

आपका

विष्णु चिंमलकर

III: 8th: 88.

Sincerely
Dina

Dear Arvind:

Its 'Woman's Day' - the feminists must be
Vocal in global and local Circles! Then what!

I want to thank you for a number of
things. (1) for being so kind and phoning me
from the airport - it was so appropo - I was just
wondering what to do, when you said you didn't
have any money ... after written again to Winnie Pereira,
and Siddhartha in Bangalore who is doing the Asian
drama - work for P. Freire. Anyway! (2) thanks also
for being a stimulus; for Dr K.K. wrote at last.

Krishna said your well deserved Nehru
Award - Constd, of Rs. 50,000/- Many hearty-
congratulations! you have done outstanding
work! What you wrote about your first science
teaching project in Hosangabad, sounds wonderful!
Poems on trees - in metal plates ... you have gone a
long way since then! I still can't figure out
what you are > being a man of many talents - parts,
but an engineer - or scientist or artist by training!

I've written and told Winnie you don't need
the money! Now with Rs 50,000/- isn't it greater
You'll be able to fulfil many of your projects - !!

Don't forget. I'll sell at least 15 bks here - but
a reprint is going to be needed for 1000 more!

I knew 'Science Age' was folding up. I have
known 'Jha' for long years - when he was in T.O.I. -
and going to see there.

Yes, yes, I will come to Pune soon. But then you travel so much - I have
Kunlins are having their show at Jamnabai Varne + at Godrej school - Dina

and I a teacher in that elitist 'Cathedral School'
 The things one did never got heard off - but the
 exhibition I held of the children's art - in the Infant
 School - got very well reviewed. So the Principal -
 a Mrs B. hated me ever after! Do you have any
 suggestions for putting together this art work -
 in a book form - that I've hung on to - before another
 sewage-seepage-flood - destroys more stuff here?
 Also want to publish my Maths Syllabus for Jr.
 Schl. Orient Longman's here - seem so vague!
 Panikkar comes 9-12th - & 11th is a big thing
 at St. X's - you should have got an invitation. I
 then went to get lost for about 10 days - just for
 a break - & then will face my bleak future!

Mayone hand-written - she must be
 going berserk & she must be

अन्तरदेशीय पत्र कार्ड
 INLAND LETTER CARD



Shri Arvind Gupta
 201/D6 - Yogi Park
 12-A - Koregaon Park
 PUNE.
 Maharashtra.
 पिन 411001

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
 पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
 प्रेषक का नाम और पता : SEND YOUR NAME AND ADDRESS :-
 B. Desai
 201/D6 - Yogi Park
 12-A - Koregaon Park
 PUNE.
 Maharashtra.
 पिन 411001

Havent seen Aruna Thakkar's reading book - it
 must be pre-reading. How does one get one?

Arvind GUPTA

22-11-88

34/1/46, VIDYANAGAR

509 Area, Air Force, PUNNA 411032

प्रिय विमल,

आशा है आपको नेशनल बुक ट्रस्ट, A-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली 110016 से डा. सार्वता जाजोदिया का पत्र मिला होगा। उसकी एक प्रती उन्होंने मुझे भी भेजी है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। पिछले लगभग 3 साल से प्रयास करने के बाद अब NBT ने दिवास्वप्न का हिन्दी/अंग्रेजी संस्करण छापना स्वीकार किया है। इसके लिए मैंने बहुत भाग-वैड की है। मेरा सपना है कि अगर एक दिन इस महान पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद छपेगा तो यह अवश्य फ्रेंच, राशियन, जर्मन और दुनिया की अन्य भाषाओं में अनुवाद होगी, और सारी दुनिया इस महान शिक्षाविद् गिजुभाई की जान पायेगी।

NBT की अनुमति में एक खोली का विशेष छाप है - श्री अनिल बोर्डिया - वर्तमान शिक्षा सचिव। वह 'दिवास्वप्न' से प्रभावित अभी मृत हैं। उनकी मदद के बगैर यह सम्भव न होता। अब दादाजी और चितरंजन भाई भी लुप्त हो गए।

मैं आपसे बिनती करूंगा कि आप जल्द ही NBT की अपनी अनुमति और Terms & Conditions का पत्र लिखें। उनको यह भी लिखें कि इस पुस्तक के अनुवाद/छापने की अनुमति आपने अन्य किसी प्रकाशक को नहीं दी है। इस समय कुछ ऐसी परिस्थिति है कि NBT जल्दी ही इसे छापना चाहता है। जल्दी में ही अच्छाई है, क्योंकि सरकारी संस्थाओं का क्या भरोसा, आज जो है, कल उनका कहीं तबादला हो जाये। इसलिए आप इस शुभकाम में विलम्ब न करें।

मेरे लिए इस महान शिक्षक की कृति को अपने देशवासियों तक पहुँचाने से अधिक खुशी और किसी चीज में नहीं है। मैं 1-11 दिसम्बर तक UNESCO/Bangkok जा रहा हूँ। कृपा मुझे पत्र अवश्य लिखें।

दार्दि शुभकामनाओं सहित अरविन्द

MARATHI VIDNYAN PARISHAD

Vidnyan Bhavan, V. N. Purav Marg.
Sion, Chunabhatti, Bombay-400 022.
Phone : 52 47 14 / 52 62 68

Registered under Societies Registration Act, Bom. : 81/66/GBBSD/12-8-1966

Registered under Public Trust Act, F-142 / BOM. Dated 6-9-66

All cheques in Favour of MARATHI VIDNYAN PARISHAD

TRUSTEES

Dr. S. S. Ajagaonkar
Shri J. G. Bodhe
Shri V. V. Deshpande
Shri R. P. Shroff
Shri S. V. Vaze

OFFICE BEARERS

President

Prof. B. M. Udgaonkar

Vice Presidents

Dr. V. V. Kale
Prof. R. V. Sovani

Hon. Secretaries

Shri A. P. Deshpande
Shri S. S. Naik

Treasurer

Shri Y. M. Ankolekar

Membership

Open to scientists, non-scientists, individuals, institutions, students, Network of Members in Maharashtra and outside

Main Aims

Popularization of science and Promotion of scientific outlook by means of lectures, seminars, exhibitions, competitions etc.

TO
Mr. Anand Gupta
34/1/46, Vidyannagar
509 Area, AIR FORCE
POONA 411 032

22/10/88

SII-50-646

Dear Mr. Gupta

You have already given your consent for the participation in insuing 22nd Marathi Vidyan Sammelana at Chalisgaon which is to be held on 25, 26, & 27 December 1988. On 26th December 1988 the three hours morning session is devoted to "विज्ञान शिक्षण साधने" (Equipment / appliances for science education) under the chairmanship of Prof. V. G. Kulkarni.

You are requested to participate in oral-session by giving a talk with demonstration on the topic "कागदापेरी ते कागदी मॉडेल्स" (Matchbox to paper models). The time allotted for your presentation is half an hour. We expect in the same manner which you decided the topic at time of Haribhakti Mote prize presentation at Bombay in February 1988. Your travelling expenses from Poona to Chalisgaon (by second class railway) and stay, lodging / boarding will be taken care of by the organising committee.

Please communicate your acceptance again as earliest. The detail letter regarding "Vidyan Melava" for students at Chalisgaon from 27-31 December 1988 is followed.

With best wishes

Yours sincerely
S. S. NAIK
Secretary

C.C. 1. Dr. Purnapate
Chalisgaon
2. Prof. V. G. Kulkarni

TELEX: 031-73034 NBT-IN
GRAMS: NABOTRUST



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए 5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

A 5 GREEN PARK, NEW DELHI 110016

PHONES : 664667 664020 664540 669962 668052 663188 663189 662124

ARVIND KUMAR
DIRECTOR

No.F.4-PA/Dir/Edit/88/ 2975

October 16, 1988

Dear Arvindji:

I am pleased to inform you that it has been decided that DIVASWAPNA by Gijubhai may be published by the NBT in English and Hindi. It is quite possible that the Trust may also undertake publication of this book in other Indian languages.

Normally a lumpsum amount @ Rs. 80/- per 1000 words is paid to the translator. However, before writing to Shri Chittaranjan Pathak and Shri Kashi Nath Trivedi, translators of DIVASWAPNA into English and Hindi respectively, I would like to be advised by you about the terms to be offered to them. Moreover, your advice is also needed to identify someone capable of writing an Introduction to the book which will provide biographical notes as well as an insight into Gijubhai's philosophy/pedagogy.

Kindly let me have your views as soon as possible.

With regards,

Yours sincerely,

Arvind Kumar
(ARVIND KUMAR)

Shri Arvind Gupta
201/D6 Yogi Park
12 A Koregaon Park
Pune-411 001

TELEX: 031-73034 NBT-IN
GRAMS: NABOTRUST



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए 5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016

NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

A 5 GREEN PARK, NEW DELHI 110016

PHONES : 664667 664020 664540 669962 668052 663188 663189 662123

ARVIND KUMAR
DIRECTOR

No.F.4-PA/Dir/Edit/88/

3068

October 27, 1988

Dear Shri Arvind ji,

I received your card of October 24 today. Meanwhile, I hope, you must have received my letter of October 16 which was despatched on October 19, 1988.

Kindly let me have your suggestion regarding terms to be offered to the English and Hindi translators of DIVASWAPNA, because now we also very keen to publish the two editions as soon as possible.

Going through DANGER SCHOOL was fun. I have now given it to a friend to read.

With regards,

Yours sincerely,

Arvind Kumar

(ARVIND KUMAR)

Shri Arvind Gupta
34/1/46, Vidyanagar
509 Area, Air Force
POONA-411 032

Grams: "UTIYEF"

Phone: 66840



**ANDHRA PRADESH
UNITED TEACHERS' FEDERATION**

(Regd. No. 109)

U.T.F. Bhavan, Domalguda, Hyderabad - 500 029.

President :

D. RAMI REDDY Ex. M.L.C.

General Secretary :

A. VENKATA SWAMY

Hyderabad

20/9/88

● Arabinid Gupta Ji,

Namaste. I regret very much for not giving early reply to your letter of 12.8.88. I am not in the Headquarters for the last 1 1/2 months. Today I am attending to the Tapa and saw your letter.

I thank you for your prompt sending to you book Dargu School. The same is being translated into Telugu by our headmaster cell Dinata Sri T. C. Sanyalvaran.

● ~~It is~~ ~~in~~ ~~underprint~~. I will come out by 1st November 1988. We will have copies of the same soon after publication.

We are conducting Science Teacher work shop from 3.10.88 to 7.10.88 at Janta Gunter (near Vijayawada) on behalf of AP Janta Ujyog Madika. We hope

you are also attending the same
as a reserve person from E K & LAYA
group or person personal. we did not
recount the list by this date.

If your name is not included
in the list for any reason, we will
request you to attend the same by
phone. I request you to make it
convenient to attend our workshop
which is first in our state.

I once again thank you
for your able guidance at Kopal

yours sincerely
M. C. R.



सचिव
SECRETARY

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग
भारत सरकार
नई दिल्ली - ११०००१

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
DEPARTMENT OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

11 July 1988

Dy.No.ES/88/R-3802

Dear Arvind,

I have just received your letter dated 8.7.88. I attach herewith a copy of the letter I have sent to Director, NBT.

We would be very much interested in the book on low-cost Science experiments on which you are working. The book could be one of the inputs in the programme of improvement of Science teaching for which we have prepared a detailed scheme. Could you please let me know whom you propose to give your book for publication ? It may be a good idea to ask Unicef to bring it out. If you so desire, I would be happy to write to them in the matter.

I have closed the P.O. Box. All correspondence may, therefore, please be addressed to my office address. I expect to be in Pune on 23rd and 24th of this month. I would be staying at the Indian Institute of Education, Kothrud. I will be taking your address and phone number with me. I would also be very happy if you could please contact me there.

With warm regards,

Yours sincerely,

(Anil Bordia)

Shri Arvind Gupta,
34/1/46, Vidyanagar,
509 Area, Air Force,
Poona 411 032.

Encl: as above

My dear aravind.

Sorry for the long delay in replying.

Radha Krishnan had told me that you had met at Bhimbaneswar.

Lot of things are going on. Our Balutsar Yathras are planned for October. This time there will be 7 Jathras and altogether around 600 points will be covered.

During this month we are doing another programme — "bringing life to classrooms". This programme will be conducted in over 1500 schools.

We have brought out 10 beautiful books for children. It includes Haldane stories (2 stories) and Amazing experiments by Martin Gardner. I am sending you a set.

"Divaswapna" was reprinted - 5000 copies more. It is circulating very well. A copy of the second edition is being sent to you.

Teacher, Tatabachan, & Letters to a Teacher — All are being translated we hope to bring out all these three books in a set. It is expected to be out in January.

"Soap Bubbles" is being printed now. It will be published soon.

You may send 100 ~~copies~~ more copies of Tanger school. All the earlier copies are sold out.

Hope you have received Second issue of "Science for Social Revolution". I have put you on the mailing list.

Have you finished the Khel Mein second part? Please send us the English version, as soon as it is ready.

Its days of hectic activity and I don't even get time to sit down and write.

This time we are popularizing books worth 40 lakhs with the

Belotsara Jalte. we are also
popularizing a few science toys.
(Telescope, Tangram, Rubberized
magnets etc.)

Early next year we must start
making our own toys. You must
come for a few days and help.

"How you began" is getting
ready for print. It is to be
released in November or December.

~~we are selling~~

Please do send new books
worth translating.

~~Though I am not writing~~

~~regularly,~~

Don't feel bad about this hasty
letter. I am writing in detail
soon.

So write

with love & regards

Krishna Kumar

एकलव्य

EKLAVYA

ई 1/208, अरेरा कालोनी
भोपाल (म. प्र.) 462 016

E 1/208, ARERA COLONY
BHOPAL (M. P.) 462 016

OCT. 6, 1988

Dear Arvind,

I presume you would have reached back by now. I have the estimates for कवयि से जुगल (lovely title).

Yes, we could go ahead with 5,000 copies - so go with the printing. The price of Rs. 5 could be printed at a suitable place.

I am sure you can take care of the title page, acknowledgements, credits etc. without problems.

Regarding Danger School - could we wait for about a fortnight? We are planning 4 more publications this year (children's stories & poems) & after adding

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



ARUND GUPTA

34/1/46, VIDYA NAGAR

509 AREA, AIR FORCE

PUNE

पिन PIN 4 1 1 0 3 2

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

EKLAVYA

E-1/208, Arera Colony, BHOPAL

पिन PIN 4 6 2 0 1 6

पिन PIN

जब तक हो सके माँ बच्चे को अपना दूध पिलाए, बच्चे के लिए
माँ का दूध सबसे अच्छा है। नवदुग्ध में शक्तिशाली प्रतिरक्षक
गुण होते हैं। यह प्रत्येक नवजात शिशु को अवश्य पिलाएं।



पहला मोड़ FIRST FOLD

I am going to Delhi/Chandigarh tomorrow
for a fortnight. If there is any urgency,
you can reach me at E13/1, Varant Vihar,
New Delhi 110 057, ph: 674858.

With much love
Vinod.

Ahmedabad

23.2.88

Dear Arvind

I was very happy to hear news about you on T.V. National news. It was indeed expected. I think such award would make your tasks little smooth and the money is always needed among people like us. The recognisations & money can make things smoother so that one can concentrate on work. Sulpha was much more delighted. ~~that was~~

You might not yet have got my Card from Tashkent (USSR), I had spent 3 weeks for an exhibition under Festival of India. It was indeed good to spend sometime in an different social system. People didn't know English (Hindi, hence didn't go to talk much. But ^{what} was visible, was quite impressive. I didn't see a single beggar, or pauper or a drunkard on the road. People seemed much care free and much more relaxed than people here. The basic needs are met, The Food is plentiful & very cheap so is the transport. ~~but~~ Every item of luxury is exceptionally high priced. There is much to learn. There was not a single signboard in English in the whole city & it seems so good, it is indeed a part of pride of a society.

I have been on & off going to Delhi. I am planning to move to Delhi in future and to have the city as the work base. Hence trying to meet some Institutions. Also there is a youngest sister for whom the family is looking for suitable match, hence I have to be in Delhi more often.

Would you please send me ^{one} a copy of Dargah school, I am sorry I am not in a position to make ~~sub~~ contribution of ^{even} few hundreds ^{Rupees} - this moment. would have liked it.

Also any other Publication of D D Kosambi and any other, kindly send me along with a bill (we get 50% allowance for books against bills)

Do please write me when you are likely to be in Delhi, I will be in Delhi from 13th march for a week or more, I have asked for a month's leave from mid march to mid April.

There is much to talk when we meet
Meanwhile with love Shalhan.

From:
Arvind Gupta
201/D6, Yogi Park
I2-A, Koregaon Park
Poona 411 001, INDIA.

31.03.1988.

Dear Elisabeth & other friends in IDAC,

A few days back I'd posted you a copy of the Indian edition of Danger School. Please do let me know whether you received it. We are all also very anxious to know about your reactions to the Indian edition. As we did not have the original artwork, we had to make all the negatives and plates based on one copy of Danger School that you sent us. We all heartily thank you for the permission, which has been duly acknowledged in the Indian edition. The single copy of Danger School that you sent me has now multiplied into 1,000 copies. We could only print a limited edition of one thousand copies, because of tremendous resource constraints.

You might be interested in how Danger School got printed. Once we obtained permission from IDAC to reprint the book, we wrote to several friends in our network. Earlier we had xeroxed copies of Danger School and circulated it in our network. We wrote to our friends to contribute the cost price for 100 copies each. The cost of printing one single copy came to Rs.15/- (which is equivalent to one American dollar). The book has been priced at its cost price. Within a month 4 individuals and 5 organisations in our network sent us money in advance for the cost price of 100 copies each. Within a month we were able to print it, and deliver it to these various individuals/organisations who are distributed in various parts of India. Among the organisation is also the Kerala Sastra Sahitya Parishad (KSSP) - a unique People's Science Group in Indian. The KSSP's mass organisation waged a prolonged struggle and saved the SILENT VALLEY.

The first limited edition of Danger School is almost over, considering the resounding response that it got. We invested about Rs. 5,000/- in the negatives, which we will not have to incur in our subsequent reprints, and so we will be able to price to even lower than one U.S dollar and reach it out to more of our people.

One newspaper editor liked Danger School so much that he has reprinted some subversive cartoons by Claudius and the article ' On mice and children ' in the special issue on education and science.

We all thank you and hope that we'll have many more fruitful collaborations like this in the months and years to come.

A unique effort was made to network 26 different People's science Movements/Organisations working in different parts of India, in OCT-NOV' 87. I'm enclosing a report titled 'Science for the People' written by me. On 28 Feb'88, I was awarded the inaugural Jawahar lal Nehru award for science popularisation amongst children. The award carried a prize of Rs.50,000/6.

We all do hope that you will continue to send us relevant material. So shall we. Let us all endeavour to make this world a better world for our children and future generations.

With lots of love, warmth and peace.

Arvin d Gupta.

Institut d'Action Culturelle



27, chemin des Crêts
1218 Grand-Saconnex
Genève - Suisse
Tél. (022) 98 91 77

Idac

Télégrammes : ACTION

Arvind Gupta
20I/D6, Yegi Park
12-A, Koregaon Park
POONA 411001 INDIA

Geneva, 25th of November 1987

Dear Arvind Gupta,

Thank you for your letter of 4th October.

We have pleasure in according authorization to publish
a limited edition of IDAC document No 16/17 in english,
on condition that "republished by permission of IDAC"
is clearly marked. We hope you to agree with the
above conditions.

We wish you a great success.

Kind regards,

for IDAC

Elisabeth Hallauer



Orient Longman Ltd.

R. Kamani Marg, Ballard Estate,
Bombay 400 038 India
Grams : Longmans Bombay
Phones : 261811 / 262416

Ref. No. : P-140/BX-1

Date : 22 March '88

Mr. Arvind Gupta
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park
PUNE - 411 001

Dear Mr. Gupta,

If you recall, you had offered us a publication proposal of the English translation of your Hindi book *खेल खेलने* in March '87.

We had subsequently written to you soliciting this translation, but have to date not heard from you.

Will you kindly let us know when we may expect to receive this translation.

Hoping to hear from you soon,

With best wishes,

Yours sincerely,

Meena S. Pai

Meena Pai

MP/akp

Registered Office : 5-9-41 / 1 Bashir Bagh. Hyderabad 500 029
Other Offices : Bombay / Calcutta / Madras / New Delhi / Bangalore / Hyderabad / Patna

On the contrary, the experience of the Hoshangabad Science Programme conclusively demonstrates that science learning need not be expensive. Hoshangabad Science attempted to make school science more stimulating and creative. Here science was to be learnt by actually doing experiments. Textbooks were replaced by workbooks, and monologous lectures were substituted by dialogues and experiments. It was felt that children learn best from material with which they are familiar - material which is not alien to their socio-cultural moorings. A science laboratory with a lot of fancy glassware and plasticware might be more mystifying than liberating for a village child. For only with familiar material will a child feel at home to interact with freely. It is only when children play with common things, that they develop a feel for them and start looking for patterns and similarities. Slowly, they begin to discern trends and sequences in phenomenon and things, and begin to categorise the world around them. In short, children begin to discover an order in the world around them.

The proposed TV programme should be able to bring out the child centred, activity based approach to science teaching. It should also be able to give a glimpse of the materials - ordinary daily life objects, which if viewed critically could be used to great advantage in science learning. Such an approach will rescue science from the confines of specialised laboratories and enable children to do experiments with anything and everything that they find in their immediate environment.

The only licenced manufacturer of Montessori educational equipment in India (M/S KayBee School Equipment, Hyderabad) sell the Montessori kit, adequate for 30 children for a whopping Rs.50,000/- . Which Indian school can afford it ? Because, most Indian schools cannot afford such astronomical sums for children's play, so, Kaybee School Equipment exports almost all its output. In the process, it is the Indian child who gets negated.

On the contrary, the experiences of the Hoshangabad Science Programme have conclusively demonstrated that science learning need not be expensive. Hoshangabad Science attempted to make school science more stimulating and creative. Here science was to be learnt through actually doing experiments. Textbooks were replaced by workbooks, and monologous lectures were substituted by dialogues and experiments. It was felt that children learn best from material with which they are familiar - material which is not alien to their socio-cultural moorings. A science laboratory with a lot of fancy glassware and plasticware might be more mystifying than liberating to a village child. For only with familiar material will a child feel at home to interact with freely. It is only when children play with common things, that they develop a feel for them and start looking for patterns and similarities. Slowly, they begin to discern trends and sequences in phenomenon and things, and begin to categorise the world around them. In short, children begin to discover an order in the world around them.

Need : Today there are a number of voluntary agencies , Popular/People's Science Organisations/Movements who are engaged in education.-From running balwadis, to formal or informal learning structures, to consciousness raising. These structures run by self-motivated, dedicated individuals and groups are more receptive to innovations and experimentation. If the germ of an idea takes roots, these agencies are the best means of taking it to the people.

The need is to take ideas/innovations/science teaching aids/learning equipments/experiences in education to these agencies, so that one can start from the vast pool of experience that already exists, and does not start from scratch. These ideas/aids will have to be suitably adapted and modified in accordance with the local specificities. The local organisations will further refine and hone these teaching aids in close collaboration with the local teachers and children. Once these aids have been creatively adapted and tested, then the next step of making them at the local level by the voluntary organisations can be taken up.

There are, thus, three distinct phases in this exercise

1. Designing of teaching aids, and making a few prototypes, based on local material and involving local skills.
2. Practical demonstrations and dialogues with educators/children in voluntary agencies.
3. Helping voluntary agencies in setting up small cottage units, for making teaching aids.

Project: The proposal is to set up a small experimental workshop (SEW) where science teaching and other low cost educational aids can be designed out of locally available, readily accessible material. The workshop will have some rudimentary facilities like a wooden lathe, Fret saw, a small press, shear, and other handtools to work on wood, rubber and soft metals.

Office Tel. 2049131, Ext. 206

Project Tel. Mhasvad 55

VILLAGE DEVELOPMENT PROJECT

(Rural Welfare Board, Sir Dorabji Tata Trust, Bombay.)

Office :

Rural Welfare Board,
Sir Dorabji Tata Trust,
Bombay House, Homi Mody St.,
Fort, Bombay-400023.

Project :

At & Post- DEVAPUR
Via Mhasvad
Taluka - Man, District-Satara.
Maharashtra State, (India)
Pin Code : 415509.

23rd February 1988.

Dear Arvind,

I wish to congratulate you for getting the First Jawaharlal Nehru Award instituted by the National Council for Science and Technology Communication.

I am happy that atleast your hard work in the field of popularising science and technology particularly amongst the young Indians, has been rewarded by conferring on you this honour.

We are all very glad and wish that you continue the good work you are doing with more and more such honours.

But, you will pardon me, if I were to raise my doubts and express my cynicism about how long it would take to reach our ultimate goal of creating a New Society or achieve real Social Change, through such methods. I think you are very well aware of my differences of views, even with Kishore Bharati Group or Anil, when we were involved in the Science Teaching Programme. Some how I am not convinced and I do not know Anil's views clearly after his Bhopal experience. At the same time, if you were to ask me, I must frankly admit that I do not have any other alternative to offer. I think the real crux of the matter is how to connect Science Education with Political Education. Please do write back, if you have any thoughts on this problem. Do you really think that we have moved in the right direction, after so many efforts in popularising science through several People's Science Movements in our country? Have our people really got any scientific temper? I feel, on the contrary fundamentalism has proliferated in all spheres. Please do educate me, if I am wrong. With best wishes,

Yours sincerely,
Suresh Suratwala
(Suresh Suratwala.)

Shri. Arvind Gupta.
201/D6, Yogi Park,
12 A Koregaon Park,

CCMB

CENTRE FOR CELLULAR AND MOLECULAR BIOLOGY

Hyderabad 500 007, INDIA



Prof D BALASUBRAMANIAN
Deputy Director

Ref: DB/Gen/88

March 11, 1988

80585

14 MAR 1988

Mr Arvind Gupta
201/D6, Yogi Park
12A, Koregaon Park
POONA 411 001

My dear Arvind,

Thank you for your post card which makes me sound bigger than I am! I hope you also got our telegram. We are so happy that you have got the Nehru Award this year.

Arvind, incidentally, Mr Vikram Rao ^{here} has just initiated a small science centre, somewhat along the lines of the Vikram Sarbahi Science Centre in Ahmedabad. It just got started last week and he is quite receptive to a variety of ideas. We are at the moment trying to see if we cannot have a full-time person to run it. You know how difficult it is to get such a person who is committed to science, who is very good with children and who is innovative to the ideas and looks to the future. Should you have anyone, please let me know. In the meanwhile, may I, on behalf of our ^{CCMB} Institute, invite you to come over to Hyderabad sometime in early April'88. While you are here, we would have a show by you on your toy kits, match sticks and alike. We could have it for a day or two when you will be with us sitting in the Centre and children will come to you just like we had last time. Do let me know if this is possible. Of course we will take care of your travel and other expenses.

With best regards,

Yours sincerely,

(D. BALASUBRAMANIAN)

This is on behalf of the Science centre, not CCMB!

1
A few responses to the book KHEL KHEL MEIN
- written by Arvind GUPTA (201 / D6, Yogi
Park, 12 A, Koregaon Park, Poona 411 001;
illustrated by Avinash DESHPANDE, and
published jointly by the National Council
for Science & Technology Communication,
Department of Science & Technology, New
Mehrauli Road, New Delhi 110 016, and
Eklayva, EI / 208, Arera Colony, Bhopal,
462 016 (M.P.):

It is a delightful book. I'm sure it will
catch on. It would be more interesting if
the figures could be done in colour. Then
it would attract more children.
It was a pleasure and profit to meet you
while you were at Dharwad.

Prof. M.I. Savadatti, Vice president
Karnataka Rajya Vigyan Parishad
Department of Physics, Karnatak University
Dharwar 580 003.

Great to see your book in print. Hope it
gets wide dissemination in the country.

Dr. Anwer Jafri
Klavya, Nehru Colony, Harda, Dist. Hosh-
angabad, (M.P.)

..the book looks very good: the get up and
the diagrams are excellent. I note that
sometimes the figure captions and labelling
are in English alone, this suits me, but
will it be OK for Hindi readers?
I do hope that the book gets the wide
readership that it deserves.

Dr. P.N.Shankar, Asstt. Director
National Aeronautics Lab., Bangalore.

It's a beautiful book, well designed and
printed very nicely. I'm glad to see that
the contents are as exciting as those you
discussed with me earlier. Yes, we would
certainly translate and publish this in
Telugu..

Gita Ramaswamy, Hyderabad Book Trust
3-6-697, Himayatnagar, Hyderabad 500 029.

It has come up extremely well and I must
congratulate you. It is actually a great
service to children.

D.R.Baluragi, Director, Belgaum Science
Centre, Shivabasavanagar, Belgaum 590 010.

Well done indeed. The material is very well
presented. The drawings are clear and lay-
out is good.

On the whole the book has its own character.
Its strength, of course still lies in the
context and approach of the basic idea.
I also liked the quotations and the intro-
duction. It tells much about your line of
thinking and goes very well with the content
of the book.

I have yet not read the full book but what-
ever chapters I have, the hindi is simple
and very readable.

I think the publication of this book will be
greatly received by the schools. There is
no parallel work to my mind done by either
an Indian or by someone from outside.
I'm really happy to see this important work
finally put together and circulated in a way
it should have been years ago.

Sudershan Khanna
(author of ' Dynamic Folk Toys ')
Faculty of Industrial Design
National Institute of Design
Paldi, Ahmedabad 380 007.

Hyderabad Book Trust and was simply delighted. Congratulations on a fantastic piece of work. Gita Ramaswamy of the HBT is quite keen on publishing a Telegu translation. Ravi Chopra, editor State of India's Environment, published by the Centre for Science & Environment. Home address 184 SFS PDA Flats, East of Kailash, New Delhi 110065.

It looks very neat, a good job really. Some responses have come here too, all favourable. Dr. Vinod Raina, Eklayva, EI/208, Arera Colony, Bhopal 462 016 (M.P.).

Many thanks indeed for the 3 copies of your lovely little toy book. Aruna has seized one copy for herself, and I shall show one copy to the right kind of people. My hearty congratulations on this effort.

Thomas Gay, Retired ICS, was the Revenue Officer of Poona 50 years back, 122/4-A Erandvane, Poona 411 004.

.. the books will be very useful to the members of the library, in particular the teachers.

The various different concepts have been clearly brought out in the book. The illustrations and the easy explanations are excellent. The idea of using simple inexpensive materials which are easily available locally is commendable. I hope it will reach many teachers in this country and they will benefit by it.

Mrs. Visha Gangadharan, People's Science Movement activist, and Prog. Co-ordinator Homi Bhabha Science Teachers Library, Bombay

.. Received your booklet through Shri S. Rajagopalan. As you know some of these items have been converted into Science Kits by Shri D.R. Beluragi at Belgaum. I shall be discussing with him about the utility of translating this booklet. M.A. Sethu Rao, Hon. Sec. Karnataka Rajya Vigyan Parishad, I.I.Sc. Campus, Bangalore 560 012.

I have gone through your booklet Khel Khel Mein, and am very highly impressed by the beautiful simplicity with which, you have compiled the work. I shall try to approach the State DST for getting funds to be able to translate it into Gujarati.

Dr. Mala R. Chinoy, Scientist, Vikram A. Sarabhai Community Science Centre, Navrangpura, Ahmedabad 380 009.

.. Hearty congratulations and good wishes to you on publishing such an excellent and useful booklet and that too at an unbelievably reasonable cost. The print letters of 'How to do it' are relatively small. Had that been slightly bigger, the script would have been more impressive.

Yours is a pioneering and highly creative effort of creating beautiful low-cost or no cost material for science and maths teaching. I wish that you continue such efforts and make a major contribution to science teaching in developing countries. Please send a copy to UNICEF.

Dr. C.J. Sanchorwala, Vikram Sarabhai Community Science Centre Navrangpura, Ahmedabad 380 009.

2
Many thanks for sending 'khel khel mein'.
My own hindi isnt upto reading it, but I'll
get one of my staff to translate it. Even
at first glance, though, I like your
matchstick mecanno very much, and all the
work with patterns and geometric shapes.
I'm very much into that myself at the
moment.

I'm sure TARGET readers will enjoy many of
the simple models that develop concepts as
well as give the satisfaction of making
something.

It was good to hear from you. If we, or I
can be supportive in any way of your work,
just let me know.
All good wishes to you, and congratulations
on bringing out such a clear and attractive
book.

Rosalind M. Wilson, Magazine Editor, TARGET,
316, Competent House, Middle Circle, T-14
Connaught Place, New Delhi 110 001.

Thanks for the books. I liked it a lot and
so did Lata. Many people have seen it and
would like to buy one. So, can you send
10-12 copies to the Women's Centre.

Jaxmi Murty, Women's Centre, Bombay 400055.

This is a very good contribution and repre-
sents a new approach to producing education-
al pamphlets. I expect that your ideas will
be of immense value in developing training
methods for technology transfer for rural
areas.

K.R.Datye, Consulting Engineer, Rehema
Mansion, 44S, Shahid Bhagat Singh Road,
Bombay 400 039.

Thank you for the books. Because of the
demonstration that you gave last year it
will be much easier to use the book. I would
write about the book and the experiments
therein in the local newspapers. This will
help the marathi medium science teachers and
children. Hope you'll give your consent for
that.

A.B.Rajmane, Principal, 'JIVHALA', School
for the Mentally Handicapped, Janta Shopp-
ing Centre, Navi Peth, Solapur(Mah)413007.

These books will be most useful for our
KRVP unit. I assure you to make maximum use
of these books. In fact I am getting it
translated to Kannada by a hindi lecturer.
I am also thinking of giving a proposal to
the State KRVP to publish the translated
version.

H.S.Niranjanaradhya, Lecturer, Sri Siddha-
Ganga College for Women, Tumkur.

Thank you for favouring me with copies of
your marvellous booklet. My first impression
on receiving them was the excellence seen in
printing of letters and illustrations. Imme-
diate query that arose was the availability
of the book in other major languages of
India. I wish the booklet had carried both
English and Hindi versions. The blank spaces
could have been better utilised and the book
also would had not become bulkier. I think
even now this improvement or facility can be
provided when printing the next edition.
When I went through the contents I saw how
improvisation technique was beautifully and
elegantly explained.

For mathematical concepts at school level,

I have no doubt that the content of your book will be extremely useful to the teachers. I would like to assure you that we will use these materials extensively in the training programmes.

Dr. B. Ganguly, Professor & Head, Department of Education in Science & Mathematics, NCERT, Sri Anurobindo Marg, New Delhi 16.

I am really overjoyed to have the book.

Thank you for sending the book. I will try and absorb and radiate something. I'm going to my home in Dussehra. I have already made some models and shall demonstrate them in the local highschool.

A.K. Rath, Lecturer, Production Engineering, Institute of Engineering & Rural Technology, 26, Chatham Lines, Allahabad (U.P.)

I liked khel khel mein very much. My only suggestion is that the book should have been more toy oriented, specially mobile toys. The tipper truck, battery engine, pump, would be more interesting for children than bottle cap gears or triangles. You must also indicate how to convert the triangles into houses and the gears into machines. And can't we put rubber bands to creative use? As children we used to make a tractor using a cotton reel, rubber band and a pencil.

Danu Roy, Vidushak Karkhana, Anuppur,
Dist. Shahdol (M.P.) 484 224.

Improvisation will be still simpler and faster and I would suggest that the DST bring out a supplementary booklet to show that rules need not be learnt by acceptance of authority but could be seen to emerge by virtue of experience in accomplishing certain tasks.

The booklet whets one's appetite and creates a craving to ask for more and to look for more from you.

P.K. Srinivasan, Math Education Consultant, ALARSI, Plot No.5, 25th Street, T.G. Nagar, Madras 600 061.

Your book is beautiful. I can't say more at the moment until I actually try out the experiments with the children. How will the booklet be distributed? please let me know. Will the booklet be available at the book stalls? If we had received 'khel khel mein' earlier, we would have given them as gifts to children on 15th of August.

Sadhana Saxena, Kishore Bharti, Post Bankhedi Dist. Hoshangabad (M.P.) 461 990.

Received 'Khel Khel Mein'. Perhaps there were five copies in the packet. Friends took away four copies even before the packet could be opened. The fifth copy has returned today after passing through several hands. We had some glimpse of your good work earlier, but that it was so well organised, we understood from the book.

Anupam, Environment Cell, Gandhi Peace Foundation, 221/3, Deen Dayal Upadhyaya Marg, New Delhi 110 002.

3

The booklet has many good features in that it is compact, the cover is eye-catching and the hindi simple enough for even me to read !

The illustrations are self-explanatory too. I have given a copy for translation into Telegu and will give my copy to the school as soon as soon as we have a science teacher in the staff.

Ervi Gaur, Director's Residence, National GeoPhysical Research Institute, Uppal Road Hyderabad 500 007.

I found these books very interesting and educative. I am sure, that children in schools in Uttar Pradesh will certainly like these books. I will contact you infuture for having more copies of the same on payment basis if possible for us.

Dr. A.N.Pathak, Director, Council of S & T U.P., B-I44, Sector C, Mahanagar, Lucknow 226 006.

..I am sure these books will be of much use in popularising the spirit of doing by themselves. I'm passing these books on to the Education Secretary, Chandigarh Administration, Chandigarh to consider using such booklets amongst the young children reading in our schools.

K.Banarji, Adviser to the Administrator, Union Territory, Chandigarh.

I am delighted to receive two copies of your latest book which has come out very well. Congratulations.

Dr. M.M.Chaudhri, Joint Director, Central

I was very thrilled with khel khel mein. Gowri (my wife) and I poured over it till late last night. I'll write to you seperately about some people who should meet you. Please keep up the beautiful work.

Anjum, Centre for Education & Documentation 3, Suleman Chambers, 4 Battery Street, Behind Regal Cinema, Bomabay 400 039.

'khel khel mein', indeed is an excellent effort, and one which I believe will go a long way in guiding interested teachers towards organising more lively and meaningful science education at low cost.

Geeta Verma, UNICEF, 73, Lodi Estate, New Delhi 110 003.

Many of the contents I had seen before in Chakmak as well as in some other popular science magazines, but I like the comparison you have made with actual objects one sees in our day to day life with the models you have made from matchsticks. I personally I feel the booklet has been extremely well brought out and I do hope that the response will be encouraging.

Since the DST has been able to provide the catalytic help, we would very much like to know the response you receive to this booklet.

Congratulating you once again on your innovative approach in science popularisation. Dr. P.J.Lavkare, Adviser, Secretary, Science Advisory Council to the Prime Minister, Depatment of Science & Technology, New Mehrauli Road, New Delhin 110 016.

Institute of Educational Technology, NCERT,
Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110 016.

The book is very interesting though we
already had known some of these from your
earlier reprints. I think I will try it
for the work experience classes in the local
school. If it works well, we will spread
it through to other schools in the block,
because now we have contact with the
association of school masters.

Dr. S.S.Kalbag, headed the engineering
division of Hindustan Lever for 20 years.
He now works at Vigyan Ashram, Centre for
Science Education & Research, Pabal, Dist
Poona 412 403.

आपकी पुस्तक मुझे मिली, मैंने

धन्यवाद । आपने जिस निष्ठा से काम
किया है, वह मूल्यों में नहीं आता जा
सकता । हम लोगों के ऐसा व्यक्ति सदा
आपके साथ है और रहेगा । बीच बीच में
पत्र लिखते रहे और हम लोगों का सम्पर्क
बना रहना चाहिये ।

D. P. YADAVA
MEMBER OF PARLIAMENT (LOK SABHA)
8, Pt. Pant Marg,
NEW DELHI-110001
Phone : 386912

This brochure of yours covers various aspects
of improvising low cost activities and is sure
to provide the much needed help in this area
to the science teachers. I am passing a
copy of this brochure to a school for their
trying out the innovative ideas described
therein. My congratulations for such a
good contribution. Please do let me know
how can schools/science teachers procure
copies of your brochure. It becomes some-
times difficult for schools to obtain
copies of unpriced publications, as per
our past experience.

K.J.Khurana, Professor (Physics), Department
of Education in Science & Mathematics,
NCERT, Sri Aurobindo Marg, New Delhi 110016.

I liked your booklet on experiments in
basic science. I was for six months a sci-
ence teacher in a school called Jeevashram
started by a breakaway group from Krishna-
murthy Foundation. ..I was using the UNESCO
source book for experiments to teach the
kids. Your booklet is much better though
less comprehensive.

S.Satyanarayan, Correspondent Indian
Express, 11/1 Charles Campbell Road,
CoxTown, Bangalore 35.

Your effort is laudable. This book will be
of help in the intellectual growth of
children. You've written that your book
has been distributed only in the schools
in Madhya Pradesh. If you wish to send it
to schools in Bihar, Rajasthan, Gujrat,
Uttarnpradesh, Himachal and Haryana etc.
then please send us 400 copies. We will
send khel khel mein along with VIGYAN (the
oldest hindi science monthly journal pub-
lished since 1916.)

Gangadhar Tiwari
Vigyan Parishad Bhawan, Aligarh 201002

4

I find this publication extremely interesting and useful for the children. I intend to publish a News Report on this publication in Invention Intelligence and if possible in our Hindi magazines Awishkar and Gram Shilp.

B. Khan, Senior Editor, Invention Intelligence, NRDC of India, 20-22, Zamroodpur Community Centre, Kailash Colony Extn. New Delhi 110 048.

Many thanks for the book Khel Mein which you sent me recently. I enjoyed going through it, and we are trying to see if the Marathi Vidyan Parishad could undertake the Marathi translation and printing of the book. I will get in touch with you again very soon.

Prof. B.M. Udgaonkar, President, Marathi Vigyan Parishad, TIFR, Homi Modi Street, Colaba, Bombay 400 005.

I am forwarding two copies to DST, Gujarat State, and State Government Education Department for getting their help in procuring funds for translating/printing 'khel khel mein' in Gujarati. One copy has been given to Lok Bharti's Mr. Arun Dave, who has expressed his willingness to translate this book into Gujarati.

Dr. Mala Chinoy, Scientist, Vikram Sarabhai Community Science Centre, Navrangpura, Ahmedabad 380009.

Your book will be of immense use in our 30 night schools. We are impatiently waiting for you to come to Tilonia.

Neelesh Desai, Education Co-ordinator, Social Work Research Centre, Tilonia, Madangunj, Dist Ajmer (Raj) 305816.

I received the books you sent and am quite excited about it. We have already begun work on translation (into Tamil) and it will be ready by a week or two.

Will the DST finance a Tamil version? If the Department of Education here takes it up will there be any copyright provisions? Please do let me know so that I can organise publication and sales of this book as soon as possible.

Dr. T. Sundaram, Sec, Pondicherry People's Science Association, II5 - A, 3rd Cross Street, Venkatanagar, Pondicherry 605 011.

It was a great pleasure to receive Khel Mein. Though I'd read most of your articles in the 'Science Age', receiving the book was a great thrill. The beautiful production with all its simplicity speaks volumes about the long and patient efforts that have gone into its production. Today I showed the book to friends in 'Vigyan Granthali', and their response was equally spontaneous. The book should reach a very large number and should appear in other regional languages.

C.D. Deshmukh, Lecturer in Physics, VJTI, Matunga, Bombay..

Your compilation 'Khel Mein' is very interesting and nice and is being liked by everyone who comes across it. Our auditors, too, happened to see it and they were all praise for it.

R.K. Bhatnagar, Accounts Officer, Eklaya, El/208, Arefa Colony, Bhopal (M.P.) 462 016.

Congratulations. Khel Mein is a unique and splendid effort. Perhaps, a maiden and original contribution in Hindi literature for children. This will make science learn-

It appears to be a very interesting book. The three kids in our (joint) family are unanimous in their opinion about the book - it is very good. If you send me a few more copies I'll be very grateful.

Bharat Dogra, Free Lance Journalist,

Dr. Raksha Kunj, Paschim Vihar, New Delhi 63

It is a very beautiful production - extremely clear and the drawings speak for themselves. I read the introduction 'Bachhon ki Duniya'. Its a gem - it is very very appealing and powerful in its simplicity. Some critical comments:

1) The first photograph of kids with ties on - coming from the upper middle class seems to appear odd for this kind of a project.

2) Sri Aurobindo's quotation, was it really necessary? After all his philosophy is so bloody nebulous. You should have quoted from some other libertarian thinker.

3) The backpage quotation and photograph is also ambiguous. Dilip Hota/Singhbhum.

I'm very happy to see Khel Khel Mein.

Excellent job! I'm also aware of the

possibility of improvement, but it is also

important to bring out the stuff in time.

Vijayendra T., B-2, Marg 2, Saket, NDII0017.

ing exciting for children, at the same time it will help them gain confidence by doing things with their own hands. Today we only dazzle children but seldom help them gain self confidence. This book has raised hopes. If the type size of the book was the same size as that in the introduction then it would have been much easier for children. Another thing which is bad is the use of english subtitles with the pictures. If hindi subtitles had also been used it would have been much better.

One more small comment. The introduction 'Bachhon ki Duniya', has more of bal manovigyan (psychology) in it than vighyan (science).

Devendra Kumar Tripathi, Librarian

Centre for Development of Rural Technology

Institute of Engineering & Rural Technology

26, Chatham Lines, Allahabad 211 002.

Heartiest congratulations over the publication of Khel Khel Mein. The love and care with which the book has been printed is obvious on every page. Raising the issue of games and toys, and the context of this book I'll soon write an article for 'Navbharat Times'.

Dr. Krishna Kumar (Nehru Library & Museum

Fellow), B4/226, Safdarjung Enclave, New

Delhi 110 029.

5

Received two copies of Khel Khel Mein. I was heartily happy to see them. If you allow us we would like to serialise it in our magazine 'Palash', so that some other readers can gain inspiration.

Ramesh Dave, Palash, State Council of Educational Research & Training, Jhangirabad, Bhopal (M.P.)

.. I felt a bit sad on seeing the book. Here are some critical comments.

- 1) The type size is very small - not only for children, but also for adults.
- 2) The printing on one side is visible from the other side of the page.
- 3) The use of english alone in the illustrations is very disturbing. The readers will feel that the illustrations instead of being made specially for this book have been copied from some english book.
- 4) At a few places the sentences appear as if they have not been written originally in hindi but have been translated from english. I shall await the other reactions to this book which you have been receiving.

Dr. Narendra K. Sehgal, Head, National Council for Science & Technology Communication, Department of Science & Technology, New Mehrauli Road, New Delhi 110 016.

Many thanks for your three books - and congratulations. They seem to be very well presented, and I hope that our teachers will use them. I wish they were in English. Kumkum Somani, Trustee, G.D.Somani Memorial School, Cuffe Parade, Bombay 400 005.

Thank you very much for your book. It is very interesting.

Sumati Sampemane, Associate Editor, Science Age, Nehru Centre, Dr. Annie Besant Road, Worli, Bombay 400 018.

I like the layout- the illustrations are ~~are~~ clear - should be easy for teachers to follow. All I wondered about is why did you then put some english captions here and there - then why not all the way in a consistent manner. Of course, you have your good and sound reasons for doing the book khel khel mein in hindi - but my personal (personal and subjective) opinion is that the text one pages could have one column in hindi - one in english - that way it would enable more sales, usefulness plus, the hindi readers improve their english, and the Angreyziwallas - could polish their Hindi syntax. What do you feel about this suggestion?

Dina Guha, E/4, Ben Nevis, B. Desai Road, Bombay 400 036

It was really a very happy surprise to get khel khel mein. I was wondering whether you have gone underground. But now I could imagine the amount of labour you have put in during the past few months to bring out such a useful and innovative literature. I think it will give a new direction to our people who are in power.

Don't you think that these books should also be translated into marathi and Gujrat? I think people in Maharashtra and Gujrat would appreciate it more if the books are in their mother language.

I went through your book with great joy and pleasure. I've already presented the third copy to a friend of mine who works with an organisation named 'Ankur' - they have undertaken several educational activities in the slums around Delhi. I've also shown the book to a lot of people who now want to know from where they can order copies.. Thanks a lot for giving me a copy. I'll always treasure it.

Snehlata Gupta, Centre for Education & Communication, B-1A/7A, JanakPuri, NDII0058.

It is a beautifully produced little book - crisply written and easy to read. Avinash Deshpande's graphics add considerably to the charm. Sujit's printing, of course, is impeccable.

Just one or two minor critical comments: the essence of your method is to give notional approximations of measurement units. It would therefore have been more appropriate to stick to one system (cgs) rather than using both cgs and fps. It could bring in erroneous ideas of equivalence which might be difficult to wipe out later. The other point is regarding the model of the methane molecule. I feel it risky to convey what is essentially an abstraction in such concrete terms. It is always a better idea, I think, to let children work out their own abstractions of reality than to ask them to arrive at reality from a ready - made abstraction. This is a very debatable point, of course.

Vivek Khadnekar, Centre for Environment Education, Nenu Foundation, Thaltej Tekra, Ahmedabad 380 054.

Suresh Suratwala, Post Devapur, Taluka Mani,
Dist. Satara (Mah).

I'm delighted to receive two copies of your book - it is beautiful and congratulations to you and all those who contributed to make it. I'll like to have more copies and shall like to distribute them to about 50 action groups in Bihar and East U.P. A number of them are doing work on non-formal education with children.. and some will get some new ideas from this book.

I think you should follow this up and develop a series - going from the first stage to the next.

Vikas Bhai, Post Box 1003, Varanasi 221 001

You must have certainly seen a stone dropping in water and causing ripples. But it might surprise you to know that disturbing water in this way is closely related to sound, light, radio and even earthquakes.

Lets drop a stone in a placid pool and see what happens. The weight of the stone pushes down on the water immediately below it causing a depression. As water is virtually incompressible, so room must be made for the water that is pushed downward. This can only be done by raising the water in the immediate vicinity of the fallen stone. So the centre is now surrounded by a rim of raised water. This ring of raised water falls back under the pull of gravity and its weight acts like the original stone. It pushes the water underneath downward and throws up a wider ring of water a bit further from the original centre of disturbance. This process continues and the ring of upraised water moves farther and farther out from the centre. As it moves outwards, the total mass of upraised water must be spread out in larger and larger circumferences, and the height of the upraised ring is therefore lower and lower. Ultimately, this disturbance will be evened out by friction. The initial potential energy of the stone would be lost as heat - the pool would be a trifle warmer than it earlier was.

To produce a wave, then, we need an initial disturbance. If the initial disturbance, in correcting itself, disturbs a neighbouring region in a fashion similar to the original disturbance, a wave is propagated.

In the case of the water waves, it is important to realise that the water is only moving up and down. It is only the disturbance that moves out while the water remains at its original place. A cork, floating on water that has not been disturbed into ripples will rise and fall with the rise and fall of water it rests on, see (Fig. 1). But the moving ripples will not carry the cork outwards with it.

The cross section of the ripples would be a 'wavy line' akin to the familiar sinusoidal curve - having a high point, called the 'crest', and a low point called 'trough'.

A wave like the water wave, in which the motion of each part is in one direction (up and down in this case) and the direction of propagation of the disturbance is at right angles to that direction (outwards across the water surface in this case) is called a Transverse wave (Transverse is from the Latin words meaning 'lying across', the motion of the water itself 'lies across' the line of propagation.).

A different kind of wave

Long metal springs called slinkies, have been very popular as toys in the west for several years. However, they are being manufactured in India now and cost about Rs.30/-. The metallic slinky, see (Fig.2) can provide you many-many hours of fun and joy. The metal slinky can climb down a staircase. It pours out from one hand to the other as if it were a metallic 'siphon'. Its motions are truly intriguing and fascinating. No wonder that thousands of scientists and teachers throughout the world have used the slinky to learn more about waves.

Fasten one end of the slinky to the leg of a desk or a chair and stretch the spring along the floor. With your other hand, gather 5-10 coils until they are tightly compressed. Release the coils and notice the disturbance. Do the slinky coils move at right angles to the disturbance that travels down the length of the spring? How would you describe this motion?

When the direction of motion of the disturbance is parallel to the back and forth motion that causes it, the wave is called ~~shlongix~~ a Longitudinal wave.

Hang the slinky from the wall by a nail. Allow the slinky to hang freely. If it is necessary place a small weight on the free end.

Squeeze 3-4 coils together near the bottom of the spring and then quickly release them. What do you observe happening? The movement that you see is caused by the 'bunching up' and 'thinning ~~xxxx~~ out' of the coils. How does this coming together and ~~thinningxxxx~~ spreading out of the coils explain the movement of a wave through the spring?

Although the air molecules are not like tiny slinkies, the particles do seem to behave as if they were perfectly elastic. The disturbance that travelled through the slinky after you released the squeezed coils helps you to picture what happens in the air which is disturbed by a vibrating object. The regions of 'compression' and 'rarefaction' can be easily visualised.

Bangle Slinky

Many a veteran slinky players would have noticed that if by mistake the metal coils at any point are stretched beyond the elastic limit, then the slinky doesn't return to its original shape. While the rest of the slinky neatly coils up, the stretched part stands out like a sore thumb.

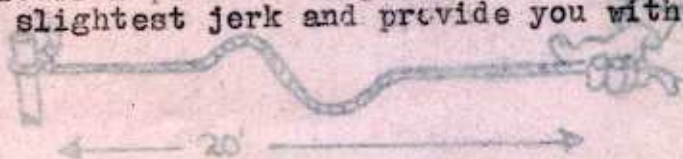
Metallic slinkies apart from being expensive are also difficult to procure. A low-cost slinky can however, be made by joining together three plastic spring bangles, see (Fig.). Each spring bangle costs around one rupee and has 24 coils. They come in bright colours and ~~xxx~~ can be bought in any village fair. The bangles can be coupled together using bits of cycle valve tube. The diametrically opposite end of the joint is tied with a bit of thread.

If you ~~xxxxxxx~~ vertically hold one end of this bangle slinky and give it a jerk, you can see some very beautiful oscillations which gradually dampen and die out.

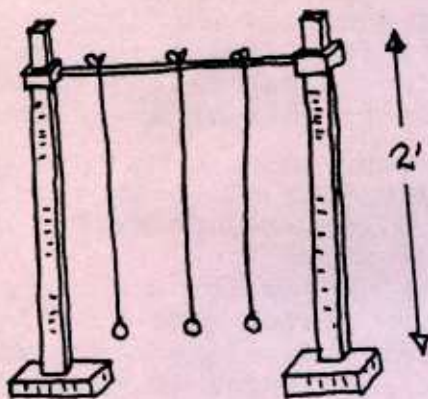
If one end of this slinky is held stationary and the other end is stretched and jerked, then an incident wave will proceed towards the stationary end, strike it and return back as a reflected wave.

If both ends of the stretched slinky are held and 'jerked' - in together, then two incident waves will move in opposite directions and collide in 'destructive interference' in the middle.

The colourful plastic bangle slinky will slither like a live caterpillar at the slightest jerk and provide you with hours of entertainment.



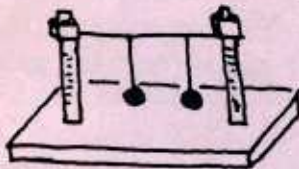
part and stretched slightly. The other end is given a quick transverse motion, and a pulse is observed traveling down the rope. The speed of the pulse increases if the rope is pulled more tightly.



Sa-1. COUPLED PENDULUMS

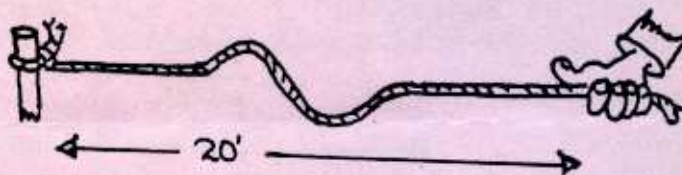
A slightly flexible support is made for three identical simple pendulums. When one is put into motion with the others initially at rest, the motion is slowly passed from one pendulum to the other in a cyclic manner.

Sa-2. PROJECTION COUPLED PENDULA

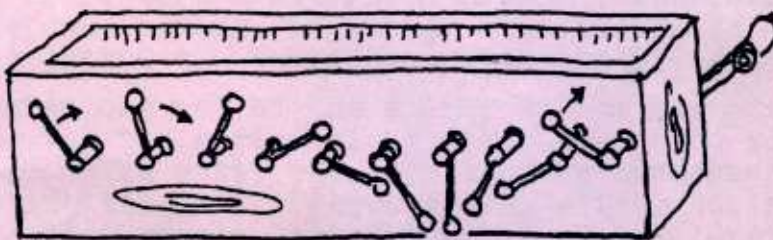


This is the same as Sa-1, except the apparatus is small so it may be placed on an overhead projector. The base is made of clear plastic.

Sa-3. WAVE PULSE ON A ROPE



A piece of heavy clothesline is attached to a support and stretched slightly. The other end is given a quick transverse motion, and a pulse is observed traveling down the rope. The speed of the pulse increases if the rope is pulled more tightly.



6a-4. WATER WAVE MODEL-PHASE VELOCITY

Several horizontal shafts are coupled together by a crankshaft arrangement so they can all be rotated at the same rate. Rods are connected to each shaft, and can rotate in circles. Each rod is offset from its neighbor by a fixed phase angle. As the rods are rotated in one direction, a wave is observed to travel in a particular direction. If the direction of rotation is reversed, the wave travels in the opposite direction depending on whether the phase angles are leading or lagging. One can observe the motion of a fixed phase angle.

Vinay and Sonal Deshpande

Parashuram Niwas

Tarabai Park,

KOLHAPUR - 416 003

Dt - 3/2/89.

My dear Arvind,

I hope this letter finds all of you in the best of health & cheer. Thank you for giving us Mr. Sudharshan Khanna's name at NID. He was very helpful in finding some contacts for Sonal's ceramic studio project. Please thank him too, when you write to him next.

The other day while I was talking to Sonal she mentioned that you have not sent Shiradi to Dalasi to school as yet. I would very much like to share your views on the reason as to why you haven't sent her to school.

Here are a few points which I strongly feel about & hope to put forth to you. Since both of us have seen

what the best schools in the north can offer (and I doubt if there will be much change in their pattern of education in the next decade).

I feel that the schools around here ~~have~~ ^{take} a very narrow view of the word education. 99.9% of them are schools, where there is a classroom concept of education (The teacher teaches & the student takes it down as the gospel truth). Which not only, restricts the mental development of a child but creates unwanted reservations in their minds. Instead a child should be left on his own with minimum help from us, the child should enjoy & learn (teach) himself. There is no point in spoon feeding him. For example suppose a child is doing a colour ~~class~~ test or a animal puzzle & instead of calling the colour red he says, "that's green", or instead of putting the parts of the cat right he puts the horses head to the cats body & so forth. What is the usual practise is to correct him, which I feel is not ~~correct~~ ^{right} since a child might have a much more vivid imagination & concept of colour & matching, that should be

Vinay and Sonal Deshpande

allowed to develop on its own even though it might look wrong to us.

A few months back the magazine 'India Today' featured a report on integrated schools in India. I wonder if you have read about them or visited such schools in the south.

They are mainly (experiment & learn) schools, where the blackboard & classroom is missing. The student is free to go in any workshop & practice his skill with a number of mediums. In this process of experimental development, he learns what other schools teach through a text book. There is group discussions & the teacher acts only as a guide. What are your views about such schools?

I would be most grateful if you can drop in a line. My respects to Mamma & Mami & Tai & to Dulani from both of us.

Your affly
Kunras. Deshpande

TELEPHONE: MADANAPALLE 37
KURABALAKOTA 22
TELEGRAMS: TF 37 MADANAPALLE
517 325

RISHI VALLEY - 517 352
CHITTOOR DISTRICT
ANDHRA PRADESH
INDIA

14th February, 1989

To:
Mr. Arvind Gupta
34/1/46, Vidyanagar
509 Area, Air Force
POONA-411 032 (Maharashtra)

Dear Mr. Arvind Gupta,

Thank you for your letter dated 7-2-1989.
Mr. Vohra and his son can, on their way back to
Bangalore, get down at Neelbagh and spend some
time there and perhaps at Sumavana also. Since
our vehicles are constantly in demand because of
the admission tests and interviews which start
to-morrow, I am not very sure that we will be
able to spare a vehicle for them.

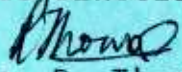
I shall speak to Mumtaz about their proposed
visit.

It is very encouraging to know that you are
prepared to come and do a workshop here with
children. Will July or August suit you?
After hearing from you, we shall fix up a week
for your workshop.

Radhikaji is still away in Canada and returns
only by the end of May. School will be closed
for a summer vacation on 31st March.

With very warm regards from all of us here.

Yours sincerely,


(Mrs. R. Thomas)
Acting Principal.

INLAND LETTER CARD

अन्तर्देश्य पत्र

NO ENCLOSURES ALLOWED



Mr. Arvind Gupta
34/1/46 Vidyanagar
509 Area, Air Force
POONA-411-032
(Maharashtra)

PIN

Second fold here

RISHI VALLEY SCHOOL

RISHI VALLEY - 517 352

CHITTOOR DIST. ANDHRA PRADESH





SRI AUROBINDO SOCIETY

SOCIETY HOUSE PONDICHERRY - 605 002

TELEX: 0469-221-SAS-IN

GRAMS: SOCIETY * PHONES: SOCIETY HOUSE: 24382 * CHAIRMAN'S OFFICE: 24668 * BEACH OFFICE: 26396-26397-26398

V.P./Gen./2 - '89

14th Feb.1989.

Dear Arvind,

I am very happy to receive your letter dated 6th Feb. 1989.

Enclosed is a copy of my letter to Tara Jauhar who is the person over all incharge of Mirambika. I think it will be good if you can meet her. You should, I feel, first plan to stay for a year, so that you and the institution can both judge for yourselves. Then you could take a final decision for a long period. I do hope something gets worked out. In fact I believe that Mirambika should be happy to have you/ work with them.

I hope my letter reaches you in time.

Wishing you and Dulari and the family all the best and a bright future.

Yours,

Vijay
(Vijay)

Shri Arvind Gupta,
34/1/46, Vidyanagar,
509, Area, Air Force,
Poona - 411 032.

Encl: Copy of letter to Tara Jauhar.



SRI AUROBINDO SOCIETY

SOCIETY HOUSE PONDICHERRY-605002

TELEX: 0459-221-SAS-IN

GRAMS: SOCIETY • PHONES: SOCIETY HOUSE: 4382 • CHAIRMAN'S OFFICE: 4668 • BEACH OFFICE: 6396-6397-6398

V.P./Gen./2 - '89

14th Feb.1989.

My dear Tara,

I am writing to you today to introduce to you a friend of mine from Pune. Shri Arvind Gupta. He is a very fine, sincere and ~~gifted~~ person, looking for something new in education. I have worked with him in a workshop with great pleasure and have been in regular touch with him for several years. The NCERT has made films about his work. He is also the author of several books which I have found very useful.

Arvind would like to shift to Delhi and participate in the teaching experience at Mirambika. He has a little daughter, Dulari, whom he would like to get admitted in Mirambika.

I feel that he would be able to contribute in a very positive way to the beautiful work you are already doing. I have asked him to meet you. He will be coming to Delhi soon from Pune.

With affectionate regards,

Shri Tara Jauhar,
Sri Aurobindo Ashram, Delhi Branch,
Sri Aurobindo Marg,
New Delhi - 110 016.

Yours,

Vijay
(Vijay)

Cppy to Shri Arvind Gupta.



कैम्पस स्कूल
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर
No: 3660 Dt: 14.03.88

Sh. Arvind Gupta
46 Vidyanagar
509 Area, Air Force
Pune - 411 032

My dear Gupta Ji

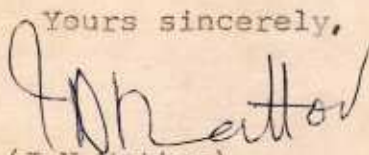
Ever since I heard about the thrilling and announcement of the Science and Technology Prize in your name. I was so delighted that one of our devoted social workers involvement has been so recognised and at the highest level.

Congratulations once again. I had ultimately to contact Dr. A. P. Shukla who was unaware about it. He gave me the present address of which he was not sure.

I would feel grateful having details of your actual idea which must certainly have taken some printed format. I remember some such which you presented during the NCERT Audio-Visual Conference held some years back.

With best wishes and once again CONGRATULATIONS.

Yours sincerely,


(J.N. Mattoo)
PRINCIPAL

दिनांक: 12/4/84

प्रिय गुप्ता जी,

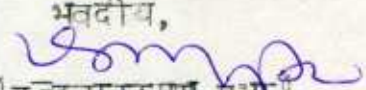
नया शिक्षक का वांछित अंक अब तक आपको
प्राप्त हो चुका होगा। वढ़ कर पूरी बात कहेंगे ही।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि एक लम्बे अरसे तक
आपने मजदूरों के बच्चों का शिक्षण किया है। निश्चय
ही इससे हुए ऐसे अनुभव आप पाठकों में प्रसारित करना
पसंद करेंगे। लिखें, हमें उनमें हमारी सवि रहेगी।

दरअसल हम आपके शैक्षिक लेखन का स्पर्श चाहते हैं, सोचें,
आप लेखन स्तर पर हमारी क्या मदद कर सकते हैं।

आशा है आपका स्नेह सहयोग हमें मिलेगा।

भवदीय,


इन्दुनारायण मथा
वरिष्ठ संपादक

श्री अरविन्द गुप्ता,
द्वारा पी० के० पाधि
46, विद्यानगर
509 ऐटिया, एअर फोर्स
पूना-411032

Dr. Arvind N. Das
Senior Fellow

Centre for
social studies

South Gujarat University Campus,
Udhna Magdalla Road, Surat 395 007.

Gram : Research
Tele. : 86173/86174
September 13, 1985

2435
Arvind Gupta,
46 Vidyanagar,
509 Area, Air Force,
PUNE - 411 032

Dear Arvind,

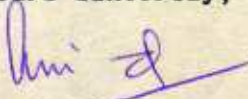
Thank you for sending me the photocopy of
Kosambi's review of Dange's book. It is very
exciting to read, isn't it ?

Here I have got off-prints of a few
papers of Kosambi, copies of which I am enclosing.
The copies are themselves made from copies, so
they are not very clear; nevertheless, I hope
they will be of use.

Thank you also for sending me details
of your documentation service. I am circulating
it among other colleagues here and I am sure we
will all find it very useful.

With best wishes,

Yours sincerely,


Arvind N Das

Encl:- As above.

P.S. I was in Pune for several days last month
but could not get in touch with you. Maybe
we will meet soon.



united nations educational, scientific and cultural organization
organisation des nations unies pour l'éducation, la science et la culture
PRINCIPAL REGIONAL OFFICE FOR ASIA AND THE PACIFIC
BUREAU REGIONAL PRINCIPAL POUR L'ASIE ET LE PACIFIQUE

REF. 133.39.3/AC/1645/89

Postal Address: G.P.O. Box 1425, Bangkok 10501, Thailand
Cable: UNESCO, BANGKOK
Telex: 20591 TH
Facsimile: 391-0866

6 September 1989

My dear Arvind,

Subject: *APEID Newsletter - Science and Technology Education*

We are now collecting articles for the next Newsletter in Science Education. Would you please find time to send me, by 30 October 1989, an article on Popularization of Science for the general public (about 10 pages).

Being a Newsletter, we are unable to pay for the article, but will publish it under your name.

You may wish to consider, under the topic a wide range of science related inputs (printed as well as electronic media) by various agencies and not necessarily the Education Ministry. Generally they could be of the following types:

- informational, to get things done, such as agriculture extension services; or informational, regarding scientific events, such as space travel;
- explanatory, which provide scientific principles that explain phenomena such as earthquakes; pollution; industrial production of plastic; as well as phenomena of every day occurrence in life situations;
- critical thinking/problem solving, which assist in developing science process skills in the general public.

Specific examples would be helpful in illustrating the above.

.../2

Mr. Arvind Gupta
341/46 Vidyanagar
509 Area, Air Force
Poone 411032
India


Mr. Arvind Gupta, Poone 411032
Ref: 133.39.3/AC/1645/89

Page 2
6 September 1989

Any black and white photographs or line drawings illustrating points in the article would be most useful.

Thanking you and with best wishes.

Yours sincerely,


Ratnaike, J.
Specialist in Science and
Technology Education

प्रिय अरविन्द,

स्वप्न नमस्कारः.

क्रिश्चिं ईलमी में बात हुई थी उसकी याद आपको होगी ही. 11-12-90 दिशम्बर को गरबारे बालमवन में मेरे चित्रों की प्रदर्शनी तथा बच्चों का वर्कशॉप होने जा रहा है. मैं 11-12 दिशम्बर को पुणे पहुंच रहा हूं. पहुंचने पर आपको फोन पर सूचित करूंगा ही. मैं आशा करता हूं यदि आप सपरिवार दिल्ली न जाएं तो आपकी भेट तथा वर्कशॉप में सहयोग मिलेगा ही.

दिल्ली से CIET की ओर से एक प्रस्ताव आया है। श्री हरमेश जी ने यह लक्ष्य रखा है कि मेरे पूरे कार्यक्रम को वही डिजिटल रिकॉर्डिंग की जाए, और इस-हेतु ETV की टीम इन्दौर आएगी। 11.22 से 24 दिसम्बर के दरमियान उनमें आनेकी संभावना है। Low cost Teaching aids यही केन्द्रित है। देखें इसबार कैसे क्या होगा है।

मदरास में श्रीनिवासन जी के साथ ही डॉ. ललित किशोर
व मैं- ठहरे थे। वे हमें 'हिन्दू' कार्यालय ले गए तथा
वहां पर भी हम दोनों ने कुछ प्रात्यक्षिक बगौर बानगी के
कर दिए। जिसकी रिपोर्टिंग 'हिन्दू' में प्रकाशित
भी हुई। मेरा एक छोटा लेख 'निर्मल' रानवारा के

दिवाली अंक से प्रकाशित हुआ जो
आपने देखा हो होगा. कारण आपका
प्रयोग भी तो मैंने उसमें देखें:-

चिन्मय जय को भी मैं पत्र लिख-
बहाई. यदि वे पुणे में होंगे तो भेट-
होगा. वैसे आप भी सूचित कर दें:-
मामा जी तथा कुमारी को खेह.

रामक-

c/o U.S. Kulkarni
artist.

"USEEKA" 27

Kranti Society

Sahakar Nagar no 2
Pune

PUNE - 9

Phone = 448038

अन्तर्राष्ट्रीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD
सेशन-सालरी शुल्क 15
STATIONERY CHARGE



श्री. अरविन्द गुप्ता.
34-1.46 विद्यानगर-
509 हरिया (अरकोस) 411032
पुणे PUNE

पिठा नीचे THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न लिखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

विष्णु चिंचाळकर
38 सबादनगर, इन्दौर-
पिन PIN 452001





mirambika

Research Centre for Integral Education and Human Values
Free Progress Unit of Sri Aurobindo Education Society

Dear Arvind,

23 November 1989

Thank you for your letter. I am looking forward to meeting you. It will be useful for you to know that Christmas Holidays are from 22 December till 9th January 1990. Many of us, me too, will be out of station till Sunday, 7th of January 1990.

I do hope it is possible for you to find some accommodation near by. In case you won't succeed before the 9th of January and it would be possible to be sure of accommodation from the first of February onwards, I think I would be able to request Tara to let you stay for three weeks only. So please try to come with not too much uncertainty about the place where you could stay in the vicinity of the Ashram.

Regarding the admission form for your daughter: It can be filled up in January 1990 only.

Kind regards,

Neeltje

13/8/

My dear Aravind,

Thank you very much for the book. I was running here and there and didn't get any time to reply. Please bear with me. The book is really good. I showed it to many friends and they are all interested. Please send me 20 copies of the book as a first lot. I hope to ask for more copies soon. The amount will be sent in a day or two. We would like to take up Malayalam translation of the book. Hope the publishers will not have any objection. Please discuss and inform me.

A lot of work is going on here. Recently we organised something like a children's version of Sasthikala Jatha. We call it "Balotsava Jatha" (ബാലോത്സവ ജാത). It consists mainly of Puppet shows and group songs (like "Enthukundu"). We chose some of the primary school lessons and converted them into puppet dramas. The whole exercise was a big success. Children were very happy and they sang along with us. I ~~have written~~^{wrote} half a dozen songs for children. Shall send you the translations soon. ~~As~~ As in the case of "Sasthikala Jatha", there were two teams one travelling from south and the other

from north. Altogether we visited 150 schools, while the jathra was moving several auxiliary programmes were conducted in several schools. This mainly consisted of your projects as well as a few projects that some of our teachers had fashioned.

Has your book come out? Please send me a copy. Our translation would have been easier if the English book were available. But it's okay. By the way, I have not yet seen a copy of "Chak Mak". Vinod had promised ^{to} send us copies. But alas! Can you send me a copy, I am so eager to see it. 'Divasvapna' will be out (in Malayalam) in September.

Sastrakalajatha is visiting Tamil Nadu and Pondicherry for 15 days from 1st September. We are organising a rehearsal camp in Tamil Nadu from next week. Most of the programmes can be easily done in Tamil.

Lot many things are happening. It seems that something like a bulletin is very essential to share experiences with friends, as you suggested. We have taken it seriously. The bulletin may start appearing from October or November.

Another programme is on health classes and drug information campaign. We have prepared some material about banned drugs and the idea is to visit doctors (just as the Medical representatives do) ^{to} distribute and discuss the drug information soon, we are starting the 10000 health class programme also.

Lot of discussion is going on about Nuclear Plants. We had a very serious power cut this year and the govt is using this opportunity to sell the idea of Nuclear plants in Kerala. We may have to strongly react. You should support with materials.

Hope you are fine. Any new ideas, activities?
books?

I shall keep in constant touch.

Yours

Krishna

Please send the books in
My name to KSSP Office.

KSSP,
Parishad Bhavan

Trivandrum - 695037

~~night~~ ~~20/20~~ ~~10/20~~ ATAR S. MAVINKURVE

16/250, AZAD NAGAR

JAYPRAKASH ROAD,

ANDHERI - WEST

BOMBAY - 400058

27-7-1986

My dear Arvind Bhaiya,

It has been a long time since we wrote to each other. I had thought that I had lost you in this huge world but a rather lucky coincidence, that I came to know about you.

The magazine 'stree' issue June 86 luckily fell into my hands. We even didn't know of this magazine but at a friends place, I just picked it up lying on the table and just was going over the pages and just as I was going to close the book, I saw a familiar face, and it was to my greatest surprise that it was your photo. I had known you only for a few days and I came to know more about you through your letters, but believe me or not I would have recognised you even if I had seen you after another twenty years, because I am a great fan of yours and I still remember the astronomy book you had given us and because you had no pen in your hands you wrote your name with the tip of a matchstick. I still remember every instance of my days with you. It was a little unfortunate that we could not meet each other afterwards, but I want to be continuously in touch with you and hope that we

do not lose each other again

I am not the same Ajay that you knew in Jamshedpur. I have grown up. I just finished my graduation and on the way to become a Chartered Accountant. Sanjay (my elder brother) has joined Merchant Navy and is presently serving with the Shipping Corporation of India. My daddy is working here in a private company called Dalal Projects and Services (P) Ltd as their General Manager. Mummy is also fine and she manages the house.

Ours is a long story. After working for twenty four years in Telco Jamshedpur, ~~we~~ ~~was~~ a company of very high standard, daddy could not suit himself in companies ~~is~~ running on corruption and mismanagement, so we have been moving around India. After Pune, we went to Delhi and were there for a year or so and then we again shifted to Bombay, and now we plan to remain in Bombay as daddy is around his retirement age.

I am presently doing my articleship with a chartered accountant. It is sort of an apprentice where we have to work for a period of three years with a chartered accountant and we get a small stipend of Rs 150/- per month as our pocket expenses. So I have thus started earning also. We have ~~to~~ two exams to clear after which we will be getting the degree of A.C.A. I will be giving my first exam in November this year. /92/93, 1993/94

How is Bhabiji? Your last letter that I

received was with the good news that you had married. How many times am I going to be called uncle now?

I came to know a lot about you through the article and it is my greatest honour and pride that I know you so closely. I hope that we meet someday. It was a real pleasure of reading about your methods of teaching. I too would like to come to your place whenever I get leave, but do visit us if at any time you come to Bombay.

Do write to me in your spare time. I will be anxiously waiting for your reply because I don't know whether this letter will reach your safe hands.

Hope that this letter finds you all in the pink of health.

With love to you and all

Yours affly
Ray Shankar

P.S

MY OFFICE PHONE NUMBERS

CO M/S. S.P. JAIN & ASSOCIATES

TELE :- 224945 or 231571

MY DADDY'S OFFICE NUMBERS

CO M/S DALAL PROJECT SERVICES (P) LTD.

TELE :- DIRECT LINE : 4934374

INDIRECT : 4931891/92/93, 4935724

If by any chance you come to Bombay do ring up at any of the numbers.

Ambarnath
22nd Aug 86

Dear Arvind,

Recd. your Books and a note. Infact I have written to ~~on~~ 20th. you on 20th.

Yes, I did attend Sagar's workshop. met Sunu there. Workshop was ok. Met Viju also there. Did not get time to discuss with him much.

Well, Book 'खेल खेल मे' seems to be ok. If you ask me about it, it would have been thousand time better than this. ~~Subject~~ Subject treatment, presentation, layout, and various aspects. May I give my ~~comments~~ ^{on the} working experience with you? Yes I should. And I consider it my duty to do so as a friend.

You bloody well get that tension out of you. ~~You are~~ ^{get it} You are used to get tense in every moment. Why? don't know! I had this experience in Anuppur also with you. Whether its planting trees or working in workshop. Secondly, I think you like every thing to be done with your own hands. So others become or tends to become a just observer, and no role. Though I worked with you, but ~~as a~~ my imagination many time was so conditioned because of your worries which were unnecessary. With the given resources ~~and~~ time ~~and~~ my freedom as a creative person, we would have achieved more than what it is. As a matter fact I felt ^{like} ~~freedom~~ ^{freedom} ~~it~~ everything that time. But I did not tell you because you were in hurry so much (You do observe how other good visualisers work) Well there are many things besides this. We will discuss it in details sometime ~~when~~ we meet again.

I have dropped the idea of writing the project proposal, for the time being. I think. ~~I need some~~ I was just economic survival in my mind which led me to do the initial writing. But I think I would like to study the whole subject of Communication in details. There are many things in mind which I am sure I will do slowly. At present I feel very bored here in Ambarnath. Secondly the depression phase has not vanished as yet. I think I will move out in the next week. Where I don't know! I will think over in coming three four days. But I will meet you sometime. What else?

Love
Avinash

अन्तरदेशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Avinash Gupta,
46, Vidyanagar,
509 area, Air Force,
Poonah

पिन PIN

4	1	1	0	3	2
---	---	---	---	---	---

दीर्घा को तुरन्त फोल्ड

इस पत्र के भीतर कुछ न लिखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पत्र में पिन कोड लिखिए WRITE PIN CODE IN ADDRESS
पेडके को नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

पिन PIN

--	--	--	--	--	--



277, 8th Main,
Wilson Gardens,
Bangalore-560030
28/7/86

Dear Aravind,

I am ~~Dr~~ Satya, a friend of Jogin Sengupta. He has been asking me to write to you for a long time and for one reason or the other I haven't been able to do so till now. My apologies.

I am a reporter with the Indian Express here. I know Jogin because of a whole lot of people I got to know when I was working with the Zahreeli Gas band Morcha at Bhopal.

At that time I was doing a course in Journalism at Bagan University (M.P.) where my parents teach.

Jogin tells me that you make educational toys and gadgets for children. And also that you come to Bangalore often. So write and tell me when you are coming here next.

I ~~am~~ My main area of interest, apart from politics, is science. I am at present reading several critiques of the Scientific

establishment and even the very scientific method! I do some discussion with friends who share my interest in these issues.

I am planning to read Marxist political and economic theories. My knowledge of Marxism is confined to the rhetoric of Party pamphlets and the progress publishers booklets.

Jogin also wanted me to read some anarchist literature. I remember him telling me that you also run a bookshop in Pune selling such literature. Do send me a brochure or a list of the books and their prices.

Could you also give me references of people whom I can meet here in Bangalore? with possible -

With love

Satya

PS: Could you give me George Chitra's address?

P. B. 435, TRIPLIKANE P. Madras - 600 005
Aug 2, 1986.

Dear Comrade Gupta

Thank you for your letters and for sending me 'Against
the West' as well as Kaur's essays. The former is in very small print, but because
I am short-sighted, I can read it without much effort. I can understand that
for many readers, small print may pose insurmountable problems.

This year I spent a considerable time in Madras, I was
to India in early May while I spent a few days in Madras. I was
on the loose by yourself.

I am glad to note that you are putting on with your
work unimpeded by his handicaps and discouragements. It is good to know that
you will be coming to Madras some time. As soon as you plans are firm,
please inform me of the probable date of your visit. My own work involves a
considerable amount of travel within the state. If I know that you are going to be
here, I shall make it a point of being in Madras at that time. I am anxious
not to miss the pleasure of meeting you. At present I share my house
house along with my mother in a place on the outskirts of Madras. Now, if
you are in need of accommodation please let me know, I shall try to
find a suitable place in a reasonably central location in the city.

The organization as mentioned in Comrade's
HP has to be, but I shall take him up on my next trip to
Comrade's.

Regarding the sale of my publications, I have been busy
in activities in the frontier. I shall try to do so. But on at the moment
is markedly lower. Several persons need copies, but he has not paid for them.
One V.P.P. to Calcutta was not honored. Since I was visiting
pre-arranged for individual orders. Since the books are
very inexpensive (Rs 10 & 15), it would be nice if we could include
them in your bibliography, I shall be happy to send you several copies of them.
I must be made after the books have been ordered. We will discuss
this and the matter in person when we meet.

Best wishes

Chand

अन्तर्राष्ट्रीय पत्र कार्ड
INTERNATIONAL LETTER CARD



Arvind Gupta

46, Vidyanagar

509 Area, Air Force

Poona.

411032

ZIP PIN

एन पत्र के भीतर कुछ न रहिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पत्रों में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता : — SENDERS NAME AND ADDRESS : —

ZIP PIN



STANDARD POST FOLD

interpersonal relationships are structured by the ideology
of a person. That is dichotomized in 'Subjective-Objective'. After
returning to Nov. I read a review of a book in French :
"Objectivité et Subjectivisme in the philosophy of Science
with Special Reference to India" by Dale Riepe
(K.P. Bagchi & Co. 1-1698 Chittaranjan Park, N. Delhi)
As you can well imagine, I am greatly fascinated
by the subject matter the book deals with. I know I am
over-burdening you with so many demands on your available
time. But Arvind, I must insist you please go
through it - a fast run-through the pages will do. And
please let me know how you value it for Xeroxing -
for a Cost-Point & view of course!
In Cal. I enquired with Subash Ganguly (the one
I know who's really & seriously interested in
Education among school-going age kids) if he has
received any of the materials you have sent for you.
So far he has not. Please contact him: Subash Ganguly
B-22/8, Karunamoyee Housing Estate, Salt Lake City, Cal-64
'Waiting your reply. Love to you, Sanita & the
kid.
- Dilip

PS When is your 'Maths & Mechanics'
exam? I am eager to extend waiting
for it.

Alternative

Dear Arvind,

'Received your letter and' hope you have received my second letter as well in the meanwhile.

Right now, we are a bit 'squeered' of purse — sending you a D.D of Rs 400/- only. If the small balance is sufficient to cover for the expenses of the xeroxed copies I have mentioned (including the 'Kosambi Memorial' book which I have been eagerly waiting to lay my hands on), please send them.

'buying your library' with Rs 200/- extra!

I am bloody tempted (as who won't be??)

— if the proposition is not a joke!
please send 3 copies (to start with) of your book as soon as it's out of the press. Also

I am eagerly waiting for your valuable opinion (besides the proposition of Xeroxing them) about some of the books I have mentioned.

'Received a letter from Vign

Yesterday He's coming this side in Oct. I am
looking forward to meet him after such a long
time. His work in 'एनई स्टेट एजुकेशनल बोर्ड'
(with the joint collaboration of MFC & Eklanga)
is super! Have you sent the educational
materials we had talked about to Subash Ganguly?
Please do. He's quite fairly competent in
translating from Hindi to Bengali and also interested
friend in Cal will help him doing it.

By the way, I have lost track of Rakesh
I lost his address as don't know the new one (if
he has any). Wrote a letter to him c/o Shrikant
Kantare but unfortunately have not heard from him
as yet. If you happen to meet Rakesh
please tell him to write me - giving his
address. Also tell him to send me a copy
of his fantastic poem (on environment) in
original (Hindi) written by the great one for
Anuppur - forget his name.

Love to you, Sumita & the kids.
Dilip

Dear Arnold & Family.
Linda & Dallas

Hello!

Morag Watchman Storrer was born
at 4:00pm Thursday July 10 by
epidural caesarian. She weighed in
at 6lb 4oz, has fair wavyish hair,
dark blue eyes, dimples in chin &
cheeks. She's a real cutie & good
most of the time. At 2½ weeks old
she's filling out & quite active.

Jim was there for the big event
I found it all fascinating, especially
when they stapled the surface of the
wound instead of using stitches as
underneath.

I still haven't got around to
sorting out that material you
wanted, I'm sorry for this neglect
& will endeavour to get to it next
week. now I can do a bit more.

Our Love to you all. Keep well
& happy. Jim, Mary & Lynne.

June 27,
July 9, 1986

Dear Vijay Singh ji,

Greetings,

I hope this finds you in the best of spirits and you are spending your time fruitfully. I was in Delhi for $2\frac{1}{2}$ weeks (21st May to 7th June) and spent my time quite fruitfully. I have obtained the video recordings of 40 programmes (12 hours duration) on school science teaching from NCERT and a promise for making video prints of about 90 of their 16 mm films (about 30 hours duration). This will take about a year. But the good thing is that they have agreed to do it. I also got a promise for about 10 programmes (about 5 hours duration) from CENOT on social movements. This we should get for a nominal cost (about Rs. 200.00) and should have next month. I bought 18 video cassettes (3 hours duration) costing about Rs. 190 each. They are original National cassette and so the quality of prints from NCERT is excellent. Thus most of the programmes we are getting are in colour and their technical quality is good. Unfortunately, the NCERT films are more suitable for children or science students. So most of the material with us is of restricted use on the whole. I am quite enthused by my experience in Delhi. The task of obtaining suitable video cassettes is a difficult one, particularly because we cannot afford the commercial price. But I am convinced more than ever that this is the medium of the future and so gaining experience with it is very useful. In this your remarks give me a lot of strength and sustenance. Unfortunately, because much of my time in Delhi was spent in fighting the friction of the govt. machinery, many tasks remain undone. Like two other important sources for good films are foreign missions like USIS and British Council, on one hand and Govt. agencies like Films Divn. Doordarshan and UGC centres like Jamia Milia. Exploration in them with suitable personal contacts may prove highly productive. Also I could not spend any time on developing the 35 mm slide medium. Looking at the cost and the sophistication of video we must work in this direction also. I also bought the video prints of two (somewhat progressive) commercial feature films (). The quality of prints is poor, but the price is low (about Rs. 120 with cassette).

In Kanpur Misraji, Dr Khanna and Sri Narendra Kumar (of the TVC, IIT/K) were quite happy at my Delhi trip. And now we are trying to buy a VCR and TV set at the earliest. NK also worked hard and transferred the set of 35 mm slides of Hist. of Sc. fiction on video cassettes. He put in a lot of effort (the programme is about $1\frac{1}{2}$ hours) and now the onus is on me to prepare a good Hindi script.

Also in Delhi I felt that we will benefit if we can get official support for our work. In this connection, IIT has at least two proposals for expansion of the TVC, and I am suggesting the inclusion of a good video library. This could be a big help for us. Both N Kumar and Dr Mani have reacted positively to the suggestion, and now a concrete proposal has to be made.

We have submitted the papers for the registration of JVS, and have been asked by the office to contact on June 27th. Thus I hope that we should get our registration next month.

सुन रहा,

सुन रहे,

...2 4/8/86

NCERT के video प्रोग्राम मिला। उन्हें देखते प्रोग्राम में है।
एक-एक करके देखीं और फिर (देखें) सभी युब आदि प्रोग्रामों को। आगे
होते हैं। उनमें से कुछ प्रोग्रामों में अलग-अलग अलग-अलग प्रोग्रामों में।

In the light of this I will like your help in the following tasks :-

1. Obtaining recorded video cassettes : The topics on which we will want them are a) Social movements and contemporary history, b) Gen. history and biography c) Anthropology and historical evolution of social institutions d) Natural History and Geography and e) Popular Science and hygiene. Obviously you should explore voluntary organizations and commercial sources. Note that here we need 1/2" VHS-PAL Video tapes and in USA one has NTSC. The conversion from NTSC to PAL is possible here, but difficult. So if you can get the conversion there, so much the better. Also please explore the possibility of getting good 35 mm slide-cassette sets on the above topics. Even if you cannot bring these with you please buy them, and leave them with some one, so that we may get them later. R.Sahay (Berkeley), A.Mohan (Syracuse), and C K Mohan (Comp.Sc., Deptt., SUNY, Stony Brook, N.Y.) could be helpful. I am sending photocopies of this letter to these people.

2. Catalogs of material from commercial sources. From NCERT, I found the names of some companies selling instructional A-V's. I do not have complete addresses. The names are - i) CORONET instructional films, Chicago; ii) Encyclopaedia Britannica Films, Inc, Wilmette, Ill; iii) EXXON; iv) KCET/TV, Hollywood, Calif.* vii) N.Y.Natural History Musseum; and viii) Walt Disney Production, Hollywood, Calif. May be you can get the complete addresses from the SUNY library, or asking some one else. If you can get them please ask them to send these catalogs to us directly. This information will be particularly useful for making suggestions for a video library of IIT/K.
(* v) McGraw-Hill, New York; vi) Institute of Inter-America Affairs).

3. A good book on use of video equipment by amateurs (cost not more than \$10).

4. Source for the availability of progressive feature films (Hindi and otherwise), If you respond positively on this, then I can send a list of about 20 films.

5. Unrecorded cassettes. The best one available here in the market is National NV-E180PS-A and costs about Rs.200. It should be 3 hours duration and VHS-PAL. There are obvious customs restrictions on this. So bring what you can, if you cannot bring anything does not matter. So please suit your convenience.

I am writing this detailed letter, and not waiting for your reply as your stay is short. Rest is all well. Please write back as soon as possible.

Yours affectionately,

(A P Shukla)

Ahmedabad 28/8/86

Dear Arvind,

Thank you so much for the three copies of લેઠ લેઠ #. I have passed on to Mamata and Kartikeya respectively the two copies you had inscribed to them.

It is a beautifully produced little book — crisply written and easy to read. Arvind Deshpande's graphics add considerably to the charm. Sujit's printing, of course, is impeccable.

Just one or two minor critical comments: the essence of your method is to give notional approximations of measurement units. It would therefore have been more appropriate to stick to just one system (cgs) rather than using both cgs and fps. It could bring in erroneous ideas of equivalence which may be difficult to wipe out later. The other point is regarding the model of the methane molecule. I feel it risky to convey what is essentially an abstraction in such concrete terms. It is, ^{of course,} always a better idea, I think, to ~~ask~~ ^{let} children work out their own abstractions of reality ~~than~~ ^{rather} to ask them to arrive at reality from a ready-made abstraction. This is a very debatable point, of course.

Darshan Shankar of the Academy of Development Science, near Karjat, wrote to me some time back regarding a problem he was facing in the matter of weatherproof signage for trees. I remembered your aluminium-sheet-and-workshop-punch idea, and have suggested to him to contact you.

and another Poona friend, Raman Chitale, who might be able to help in making the punches in Devanagari. I believe ~~Arund~~ ^{Sarshani} has already written to you, and I hope you will be able to spare some time for him. He is doing useful work in tribal medicine, and deserves sympathetic help. I also hope that you will discover in Raman Chitale another creative mind.

I shall be in Poona for some time during the next two weeks, and hope we can meet. Nirmala lost her father on the 12th, and I had been there on a ~~very~~ ^{very} wished visit. My trip this time is to ~~visit~~ ^{visit} our establishment in Poona and to bring ~~Nirmala~~ ^{Nirmala} and Ananta to Ahmedabad.

My best wishes to your wife and child.

yours sincerely,

Nivetha

8 AUGUST '86

Dear Arvind,

Sincere apologies for the delay in replying to both your letters. I did receive the copy of DIVASWAPNA and was really happy to do so.

Unfortunately, I cannot understand Marathi, so cannot have the pleasure of reading it. I did show it to my parents who were excited to know that Gijubhai's masterpiece is being taken up seriously. Have you any idea how the copies in Marathi which have been distributed to the school teachers are being used? It would be interesting to get some feedback.

Although I haven't yet been able to do much, I am truly interested in translating Gijubhai into English. I would need some guidance on what to take up for translation and how to go about getting it published. I'm sure you can help in to do this. Is it better to take up his children's stories or his other writings on education? Do guide me and I can get started. It's a project that I've been wanting to do for a long time and I'm determined to make time for it.

Work at CEE is absolutely hectic. We're involved in a number of projects and working hard to meet all the deadlines. Our training workshops for teachers from Gujarat continue. We are planning a series of orientation workshops all over the country during November-December this year and are currently involved in planning the logistics of such a major venture.

Do keep me informed about the progress on the Divaswapa T.V. serial.

What are you involved in these days? Any chance of your coming this side? You must plan to trip to Bhavnagar also. I am likely to be in Bhavnagar during October and November, as I am expecting a baby then. If you could come around then, it would be nice. We can spend some time working out the translations of Gijikhai. I hope to have started on something by then.

Ahmedabad goes through sporadic bouts of riots. Its unfortunate that the climate of distrust and violence is gaining roots steadily.

Hope all is well at your end. Do keep in touch.

With best wishes

Nanata.

Dr. D. Bhatt

M.B.B.S., D.P.H., Lt. Col. (Ex-I.N.A.)

Chief Medical Officer (Petd)

Regd. No. 4486

HALDWANI

Date... Nov. 26, 1985

My dear Arvind,
I hope you have received my last letter which I wrote a few weeks ago. Enclosed is an ~~invite~~ invitation to my wedding. It will be a pleasure if you could attend any part of it. The address is

Dr. Damodar Bhatt.

Shree Niketan

Nawabi Road

Haldwani, U.P.

It is about 60 miles from Bareilly.

Devesh



॥ श्री गणेशाय नमः ॥

"मंगलम् नमस्तस्मै विष्णु, मंगलम् गरुड ध्वजः"
"मंगलम् पुण्डरी काक्षी, मंगलाय स्तनौ हरिः"

मान्यवर,
मेरे सुपुत्र,
चि० देवेश

ए
व
म
के

आयु० रश्मि
(सुपुत्री श्री पी०बी० गुणवन्त)

❀ दाम्पत्य-सूत्र-बन्धन ❀

की पावत बेला पर सपरिवार पधार कर तब-तबू को शुभ आशीर्वाद
देकर अनुग्रहीत करें।

दशनाभिलाषी :

जगमोहन भट्ट, दुर्गादत्त भट्ट,
केशवदत्त भट्ट, जनार्दन भट्ट
समस्त परिवारजन

विनीत :

डा. दामोदर भट्ट एवं श्रीमती भट्ट
राकेश कुमार भट्ट, भवेश कुमार भट्ट
श्री-निकेतन, नवाबी रोड, हल्द्वानी

❀ कार्यक्रम ❀

सोमवार, २ दिसम्बर १९८५

बारात प्रस्थान ---
(नवाबी रोड-हल्द्वानी से गुणवन्त लीज, भीमताल को)
वापसी बारात ---

प्रातः ७.३० बजे

सायं ४ बजे

मंगलवार, ३ दिसम्बर १९८५

जन्मपान ---

सायं १ बजे

Ambarnath
29th August 87

Dear Arvind,

Received your post card today. I have already written to you, after I got खेन खेन मे. My first reaction was that it could have been better than this. Well, I know, as ~~an~~ a visualiser, certain things. Such a outcome was anticipated. I could have made it little better than this with a little bit more time and freedom. We will do next time a better job.

I have been showing it to the kids around here. But bloody this T.V. culture in these cities is destroying all the creativity and imaginations of all the kids those who have T.V. sets at home. All their refreerers and thought-structures are slowly getting formulated on the basis of T.V. serials and other programmes. Even those who do not have TV sets at home, either they envy their fellow kids or go and see programmes at their friend's homes. Well this is my individual experience. Eklaya having experience, time and resources could try otherwise.

About proposal! Well it is not a proposal yet. I have written something which I wanted to do. It's like a background on which the proposal can be based. But the problem is it is more of a ~~so~~ exercise on which further perspectives on political education can be formulated. (At least I think so). And this sort of efforts will not be supported by DST (Sehgal). That is what Sagar also said. So either I will have to form a new one on science education, science communication etc. or work hard on my original concept and with patience wait and look for the support from other institutions. Sagar suggested that I should make a video film on your efforts in science education. And proposal of that kind will get supported by DST. (I had this idea since last year on my mind which I have to discuss with you sometime seriously). But for now I think I will ~~not~~ meet Narendra Sehgal first and find out his feels and what I can do within given constraints.

Well I said hallo! to goli but did not get much response
We saw each other that was all. I think he is happy
and he should be always like that.

I will be going to Delhi sometime in near future
of Depen It depends on various things. Am ~~in~~ very much
bored here in Ambarnath.

If ^{you} feel like writing to me do write on
Vijai's address, I will pick up my letters from him.
What else! The depression are still there which
make me sometime unbearable to myself.

How is Sunita? I would like to talk to
her sometime. Give my love to her and Dulani

P.S. I will return your money
as soon as I get in to the
position to do so. ~~enkepp~~

With best wishes and
lots of love
Avi

आंतरिक पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Arvind Gupta,
46, Vidyanagar,
509 Area, Air Force
Poonn

पिन कोड
4 1 1 0 3 2

आंतरिक पत्र कार्ड पर लिखें NO ENCLOSURES ALLOWED
पत्र में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
पत्र के बाएं ओर पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

पिन कोड
[] [] [] [] [] []



31
26 जुलाई

प्रिय अरविन्द,

तीन दिन से बिल्ट पर पड़ा हूँ। यह स्थिति एक लंबे काल से नहीं आई थी, इसलिए बेहद ठीक रही है। नींद तो अच्छे से मिल रही थी, पर अचानक नींद को बिल्ट ने पाप बहा। कल सुबह से पीठ में दर्द था ही थोड़ा ही जिम्मेदार दिन तो दिन, रात में भी सोने न दिया। आज फोर्मेशन का रूढ़ि के घर से दवा लई जिसकी तीव्र छुट्टी होने से यह स्थिति आई है कि उठकर चार कदम चल सकूँ। वरना तो शायद ही बढ़िया वक्त है पर लिफ्ट के बिना। लिफ्ट ने भी बेहद पड़ा है। पिछले हफ्ते हॉल में टीकमगढ़ में थे। हमेशा की तरह इस बार भी फोर्मेशन गये जहाँ बीकानेर शिक्षा के सत्रयुग में धूँली कोरे लफेदपेशा उपकरणों ने B.T.I बनाया था। मैं जब कभी वहाँ जाता हूँ, वहाँ भी हमारे (मजदूरों के कहना चाहिये) कोरे धातियों (झाड़ी-झाड़) के दोबदार ठीक उस तरह महसूस करता हूँ जैसा 'मिशन की कोरे' में कालीन इजानेबिच के नाम के फुल्ले हेली के कवचों में रही टंकी की कोरे दोबदार महसूस किया था। इच्छा होती है कि किसी तरह यह ठीक हो जाये तो कुछ कमाल करें।

१. अगस्त

पीठ के दर्द ने ठीक नहीं होने दिया। आज कुछ राहत है कोरे नाम फिर कुछ करने की लीज इच्छा हो रही है। बिल्कुल कुछ नहीं हो पायेगा, यह पत्र ही पूरा हो जाये तो बहुत है। काकास्वामी सोपने का भरपूर भरोसा देती है। कपड़े धोने की दूरी-दूरी हालत पर काफी निचार किया। यह तब पता कि अभी कई कोरे बरत बच्चों की हालत बेहतर बनाने के ज्यादा काम की तरह व्यक्तिगत होंगे। सोपाने का कि कपड़े को ही नहीं पता था रही है, नये बिजनेस की ताकत मुझे की ऊँची आस्था प्रकट है। म.प्र. जैसी पदवी का दोहन होकर रहेगा - ऐसा है तो तब उभरते आंतरिक उपनिवेश का के तलाक़्खाल में

२/ म-प्र. का हार्दिकतामि मिलेगा और विशिष्ट रूप से इस उद्दिष्ट की
 बाल-नेयरींग बनेगा। कनिष्ठ जेसा शुरू किसी समाज के गरीब
 भाग्यमन्त्री के साथ तो बात और है। कान्ति की तो जो अभी
 कोई संभावना नहीं। लिबरल उद्योगों से बच जायें, खूब पुराने
 छोड़कर ही चल जायें तो यही कान्ति होगी। हिन्दू समाज और
 अन्य हिन्दुत्ववादी किसी समाजवादी प्रणाली को हमारे देश के
 पास फेरफटके ल होगी। ऐसे में यही बड़ा ऐतिहासिक कार्य
 होगा यदि एक तबियत ने किसी समाज की लालित अपनी भाषा
 और अपने बच्चों की security बना ले जायें।

All this may be no more than a sick man's reverie.
 मैं मुझे तो शुरू में 10 दिनों के लिए जापान गया था। 22
 गांव में अपनी मकान में रात बिताते और कुर्यां वा जीवन
 देखने का सुनहरा ठाण्डा मिला। ओरीजिनली जब 4 वर्र्ड के
 कच्चे के साथ में दोरी तब जापान के औद्योगिक समाल वा
 राज्य पुनः प्रसन्न में आ गया। कान्तिवादी उस संस्कृति में भी
 बनेक हैं, पर दिवने की भी कपार समझ है। पहले दो दिनों में
 यह सुंघ दिमाग में हटी कि दुनिया में 'पवित्रता', और
 'पूरी' या पूंजीवादी और समाजवादी ये दो मुख्य टांके हैं।
 यह स्वीकार करना पड़ा कि जापानी जापानी (पर कल्ला बिस्व
 का सांस्कृतिक जीव है। वह परिणत की संकल मात्र नहीं है।
 पर सापेक्ष कान्ति से जापान को देखकर 22 भी बहुत लगता
 है। इसीसवीं सदी के महाभारत में तब यह शक्ति को
 निगलने का उपाय कर लेवेंगे, नौन यह एकता है। यही
 हमारी धृति है। जो जो है तो हमारा है।
 हमारी दुर्गति जगत्वादी हाथों से भी हो सकती है।

000

यह पढ़कर पुरी है कि जापानी पुनः तब हीन रूप में को

4 है। श्री पुत्र (मर 'बन्ने नी माका डी डायारा') नव
 लाल है साधु बगले माह नर का ही जाये। तमाम
 दुग्ध बाधाओं को वह पार कर चुकी है। 'राज, मन्त्र'
 के कौटिली माकाण पर काठ डमी गुह नहीं रिया है, पर
 हिंस्र नये माकाण की संभयना छुट उजली नर
 का रही है।

कुछ दि पहले रोवक जी से बात के लिये नर वीरियो
 इंटरव्यू लिया। वे पार भी जाए न। उनके साथ नर
 योजना भी बन गई है - ~~मि~~ विपरीतों को- वीरियो
 का नर नर। संकलन न-पु- कला परिषद् के तलाक़ात
 के बनाने की। कोशिश को लिख इस है। प्रीति नय
 होता है।

Lives of children कई वर्ष पहले पढ़ी थी। में पता है नहीं,
 पर मेरे फ़ायदा है चर्च American history के है। कुरियन
 के कारवाणों पर हमला के नर लोच पढ़ा था। लाल था,
 वे कभीभी सामान का आलीशान रूप रख/वेन रहे हैं। यह
 कुल नहीं है पर हमने हिंस्रता की डायारा की trapped
 पुर्जना पर नरें बाहर साधु ही पड़े। कि नर उनके उपरुप
 की पुर्जना डायारा नहीं है।
 दुसरी नर दिनों दिन चीजें से बेल रही है?

मिसे,

कुरियन

P. K. SRINIVASAN

As. Sec.,

**THE ASSOCIATION OF
MATHEMATICS TEACHERS OF INDIA**

(Regd. Under Societies Act XXI of 1860 - S. No. 143 of 1965)

Office:

Sri R. K. M. Sarada Vidyalaya Girls Hr. Sec. School,
Usman Road, T. Nagar, Madras-600 017.

Postal & Res. Address:

'ALAKSRI', PLOT 5, STREET 25,
T. G. NAGAR, MADRAS 600 061

Date: 7-8-86

Dear Shri Arvind Gupta,

Greeting to you, your wife and your newborn child.

It is long since we have been touch with one another. I was expecting to meet you at the recently held ^{NCEAT} workshop on Joint Venture between Govt agencies and Non Govt Agencies to explore avenues for making an impact in Maths & Science education. Perhaps you were not invited. However I met persons known to you and made enquiries about you & your welfare.

Please find herewith enclosed (1) a folder on Math Project Expo (2) ~~a pair~~ Hindi clippings containing two recent articles of mine.

I read your articles in Science Age. They are quite good. I leave with delight that Dept of Sci. & Technology is about to publish your book on 'Science for Fun' (?). Persons like you are rare and have a great role to play in spreading Science temper so that it could form basis of rational living. Is there scope for little Maths in P.T.O.

Sureme Age?

I repeat my request to you to become a life member of AMTI so that the Association could draw personal inspiration from your great life. I hope you would accept my ardent plea this time.

Wishing you success in personal life and public service and with my salutations,

Cordially yours
M. C. S.

Delhi - Ahmedabad
31-8-86 1 Train

Dear Arvind,

Hope you have got my earlier letter, after getting ~~2-2-2~~ ²⁻²⁻².

Last Monday i.e. 25th August, we were blessed with a new being - a lovely daughter. Sulbha is fine but still in the hospital recovering after a somewhat - ~~very~~ difficult delivery. But all is fine. I could visit them two days after the birth & both were well.

Whole week went in the TV. serial. The basic shootup went off well. There are 3 Serials ① Introduction ~~to our Indian toys & their significance~~ ② ~~Two serials on~~

② & ③ are about Toys & the Science principal.

② & ③ was done as interaction between me & Anita Ramphal (Raina)

Manoj (producer) seem to have been satisfied. I think content wise, the programme should be OK. Now much depends upon the editing & refining it. Manmohanji took considerable interest in all the phases of the series.

I briefly met KK just before leaving. We again talked about as to what should be done to develop and promote inexpensive, good toys and how to start some movement in this direction. I think a few of us; you, KK, Dharm Mohan & one or two more people committed to the

approach & having long term intent
in this matter should take about
what & how something should
be done.

Some very easy ideas have
been coming up; there are
to

a) put up a society for promotion of
kids & Toy makers

b) think about - a toy shop in
one of the major city like Delhi,
as of ~~we~~ - to explore the
possibility with someone who
is trustworthy and inclined.

This is a good proposition but
a difficult one. Besides the

Money angle - a sale outlet is

a good feedback place &
generate a stable activity.

But it needs more than one
committed full time involvement
of one/two people.

c) To initiate small level
but active R&D activities etc
linked with a) & b)

What I have written is very
vague notions which need
to be shared when we meet.

Now the best way is that—
when you plan to go to Delhi,
just drop me a card a few
as advance as possible so that
I can see if I can ^{also} ~~can~~
visit Delhi in that time.

Alternatively whenever I
am visiting Delhi next I
shall drop you a line, if
you could synchronize, then
4-5 of us can talk.

So much for now, the train
motion is considerable which
affects the writing of this
letter.
With love

Stalin

Devgpur P.O.
Dist. Sabar.

15-9-86

My dear Arvind,

It was really a very happy surprise to receive your small note along with the Capital of your Book "Tata Zangit".

I thank you not only for sending me these books but it is nice of you to have remembered me after a long time.

I was wondering whether you have gone underground. But now I could imagine the amount of labour you have put in during past so many months to bring

out such useful and innovative literature. I am sure it will give a new direction to our people who are in power.

Arvind, but don't you think these books should also be translated into regional languages like Marathi and Gujarati! I think people in Maharashtra and Gujarat would appreciate it more if the books are in their mother language.

What other news I have all of you, your wife, your baby and yourself are keeping good health.

I am as usual busy with my development work with

अन्तरदेशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



emphatis on developing maximum possible water resources in this drought-prone area. More than that I am also trying to my level best to bring together विचारक और श्रमिक by associating with friends like you. We have a small group of श्रमिक and one Vijay Singh is an active member. Recently we had organised a पुष्कराब्दी for the Waters of Krishna River System for 11th August. We planing श्रमिक from 18th to 18th. Let us see what we can do.

Some time when I am in Boma, I shall try to contact you. I shall be going to K's on 25th for our Executive Committee Meeting. Have not met you since a long time. That's all.

With love,
Yours
Suresh

To
Shri. Arvind Gupta.
201/DC, Yogi Park,
12 A, Kavegaon Park,
POONA - 411 001.

--	--	--	--	--

पिन PIN

इस पत्र के भीतर कुछ न भरिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

From: - Suresh Srivastava

Atk Post - Durgam, Taluka - MAN.

4	1	5	5	0	9
---	---	---	---	---	---

पिन PIN

Dist. Saharanpur

17th Sept-86

POSTBOX 1003
Varanasi 221001.

My dear Arvind,

I am delighted to receive two copies of the book 'Saraswati ji' -- it is beautiful and Congratulations to you and all those who contributed to make it.

I would like to have about ~~100~~²⁰⁰ copies of this book to be distributed to about 50 action groups in Bihar and East U.P. A number of them are doing work in non-formal education with children... and some will get new ideas with this.

It is difficult to send a list of all these people -- we will distribute it when I am or some one of us are travelling to meet these groups. Please let me know if this is possible. It will also help if you let me know where these groups should write to get more copies.

I think you should follow this up and develop a series -- going for four days to next.

Congratulations again
Much love — Vikas.

P.T.O

Send the copies - as
many as possible by
Registered bank
or parcel whichever is
cheaper to

VIKAS BHAI

B1/4 D-1-G. Colony
Mankul Alam Rd

Varanasi - 221002
U.P.

I will be quick happy to
pay for postage etc 'if
your budget doesn't cover them
Love V.

INLAND LETTER CARD



Arvind Gupta
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park
PUNE - 411001

Maharashtra पिन पिन 411001

दीर्घा चौक THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रल्लिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

पेसक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS

Post Box 903

Varanasi - 221001

पिन पिन

#14 Ben News, B. Desai Rd. Bombay 36
IX: 17: 86

Dear Arvind:

Yes I finally received your registered packet of printed matter. Do we now write to the Yogi Park address - and not to the former Air Force place? Confirm. I finally also heard from Krishna & Frances Kumar. Did they acknowledge R. Panikkar's article you sent them?

Your peace march sounded interesting. Saw bits of this of Delhi kids on TV. How can people stop the nuclear arms race, when they continue to foster "competition" "grades" "Asiads" - "Olympics" among children - and when they can't forgive one another in a family, among friends, in a community! Do tell me.

(M.D.) You want my candid opinions on the Xeroxed material and on your Sc. Book.

1) The Xeroxed stuff - esp. by Sybil Marshall - I can't read much. Well I can manage the very fine print in bright day light (have Vit A. deficiency) but the Xerox is so faint - so eye-strain does not enable reading it either. What should I do?

(2) Your science book - is in Hindi. Since I've forgotten all the Shud Hindi had learnt - so well as a child along with Marathi (brain cells are dying) - can't just estimate that at all - However - I like the lay-out -

Haven't I written this like a pedantic school teacher

- The illustrations are clear - should be easy for teachers to follow. All I wondered about is why did you then put some English Captions here and there - then why not all the way, in a Consistent manner? Of course you have your good and sound reasons for doing the book शेरी शेरी # in-Hindi - but my personal (yes, it's personal & subjective), opinion is - that I would have found it useful ~~if~~ you had done it in English & Hindi - i.e. the text on the pages could have one Column in Hindi - one in English - that way it would enable more sales, usefulness PLUS - the Hindi readers improve their English (Intern'l lingua franca) & the Angrezis/wallas - Could polish their Hindi syntax. What do you feel about this suggestion?

Since you've asked - I hope you'll respond too. Why can't our dear friend Krishna K - write that Hindi Story for Chan in equally Charming English? Tell him - oh please - he's capable of this task!

Am enclosing a short review - the paper lacks space of S. Kharma's - Dynamic Folk Toys. And - have sent him a Similar Clipping. Shall I return this Sybil Marshall to you for an eligible print - as I am lost - wanted it for my in-service Courses. With olive branch held high - yrs - truly - Aina Guha

Telephone : 652318

विज्ञान और प्रौद्योगिकी
संचार हेतु राष्ट्रीय परिषद्
NATIONAL COUNCIL FOR
SCIENCE & TECHNOLOGY
COMMUNICATION
(SECRETARIAT)



भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

Telegram : SCIENCTECH
Telex : 31-2096 DST IN
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY
Technology Bhavan,
New Mehrauli Road,
New Delhi - 110016

डा. नरेन्द्र सहगल,
अध्यक्ष, एन.सी.स्स.टी.सी. प्रभाग

दिनांक 15 सितम्बर, 1986

प्रिय अरीवन्द जी,

नमस्कार । "खेल खेल में" की प्रतियां पहले भेजी 20 और बाद में 100 मिलीं । धन्यवाद । अपनी प्रतिक्रिया लिखने से पहले अनुरोध करूंगा कि आप इसे व्यक्तिगत रूप में न लेकर हमारे ध्येय जिसके लिये यह किताब छपाई गई है को समक्ष और ध्यान में रख कर पढ़ें और विचारें :

किताब देख कर मुझे कुछ निराशा हुई । कारण:

- १। टाइप साइज़ बहुत छोटा है - बच्चों के लिये तो क्या, बड़ों के लिये भी ।
- २। पन्ने की एक ओर की छपाई दूसरी ओर भी दिखाई पड़ती है ।
- ३। चित्रों में अंग्रेजी ही अंग्रेजी बहुत खलती है - पाठक को लगेगा कि बनाये इसी किताब के लिये विशेष रूप से बनवाये गये न होकर ये चित्र संभवतः किसी अंग्रेजी की किताब से टीपे गये हैं ।
- ४। कई जगह वाक्य पढ़ कर ऐसा लगता है कि यह हिन्दी की मौलिक रचना न होकर अंग्रेजी रचना से अनुदित है ।

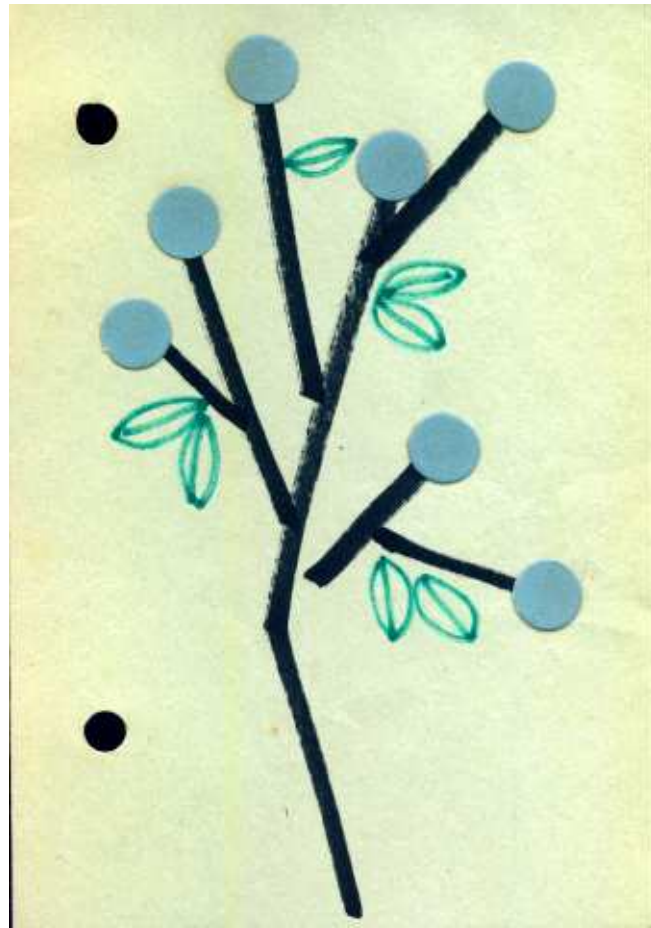
आपको जो प्रतिक्रियाएं आ रही हैं, उनकी मुझे प्रतीक्षा है । हैदराबाद बुक ट्रस्ट यदि तेलुगु भाषा में "खेल खेल में" का रूपान्तर प्रकाशित करना चाहते हैं तो पूर्ण प्रस्ताव बना कर भेजें - उस पर विचार किया जाएगा ।


आपका,

नरेन्द्र सहगल

॥ नरेन्द्र सहगल ॥

श्री अरीवन्द गुप्ता,
46, विधानगर,
509, क्षेत्र- वायुसेना,
पुणे - 411 032 महाराष्ट्र




 Dear Arvind,
 Many Thanks
 for your 3 books.
 — and congratulations!
 They seem to be
 very well presented
 & I hope our teachers
 will use them. I
 wish they were in
 English. All good
 wishes to your family.
 Affly, Kuntum
 P.S. What is the name &
 address of the brilliant
 Prof (your friend) from
 Delhi? He had come to the
 conference in Pune.

B-1A/7A, JANAKPURI, N DELHI. 110058
4/9/86.

Dear Arvind, I received 3 copies of your book and went through them with great joy and pleasure. I've already presented the 3rd copy to a very nice & new friend of mine - Mallika - who is also very fond of ~~the~~ children & works in an organisation called 'Ankur'. I've also shown the book to a lot of people who now want to know from where they can order copies & how much they would cost. So please do let me know. Thanks a lot for giving me a copy. I'll always treasure it.

How are you these days and what else are you doing? I was hoping I'd meet you ~~when~~ at the workshop in Bombay that Sagar & Co. had organised. But a very close family friend expired the day I was leaving so I didn't come. Maybe I'll be able to see you either when you come to Delhi or when I come that side. I am hoping to come in ~~the~~ October or November.

I am now working at a place called Centre for Education & Communication —

CEC. It had started in 1982 with Paul
Kuvien, Anurita Chakraborty etc. But then
after a while matters drifted. From
around April this year Deenadayalan
(earlier of Delhi Forum) has taken over &
is trying to reorganise & restructure to
support labour oriented research & studies,
& collection, documentation & dissemina-
tion of information. We still haven't thought
about what exactly we will do & how we'll
go about it. I am just sorting out the
earlier material & collecting the daily infor-
mation from newspapers, magazines etc.
we are trying to talk to people to see
what can be done that will serve some
purpose. Everything is quite open & flexi-
ble. Will you please let us know your
ideas on this. I would also like to
meet you & discuss this thing in greater
detail and I am quite pleased to discover
that at last I am getting interested in
something.

Hoping to hear from you soon.
With best wishes

Yours affectionately,
Bulbul.

Managua. July 23, 86

Dear Arvind:

Hope everything is going well for you. I arrived here almost exactly two months ago, and immediately started work. My employer here is called INE -- the equivalent of an Energy Ministry and Electric Utility, and I am working in Energy Planning, and currently, on a project for ~~the~~ future Electrical system Expansion Planning.

Basically, things are going pretty OK with me. Work, looking for housing, learning the language better etc. have kept me fairly busy so far. Now that I've found a place to live, and my Spanish is sort of OK, I'll try to participate in ~~the~~ local grass roots organizations.

Oh yes! ~~thanks~~ thanks a lot for having sent me all the material promptly. I received it before leaving India, and have brought some of it with me here. Kasambi's "Exasperating Essays" were particularly good. The small print makes it difficult to read an article for ~~for~~ more than 15-20 min continuously, but I guess that is the price one has to pay for compactness.

The political situation ^{here} is fairly stable as such. I mean the govt. has the support of a large majority of people, even in such difficult economic times. The war waged by U.S. is taking a severe toll, first in terms of the no. of people getting killed, and then, the economic toll in general is quite large. Since early 1980, the economy has been going down. Inflation is high (200-400% a year) and a lot of basic commodities are scarce. The danger of direct or indirect U.S. invasion at full scale is higher now than ever -- people guess that Reagan might try something severe if the "contras" (the U.S. supported mercenaries) do not succeed in toppling the govt. Almost nobody, both inside and outside

Nicaragua, believes that the contras will succeed even to the extent of posing a serious threat. In the ultimate analysis, I am very confident that the people themselves cannot be defeated, even with direct U.S. invasion. There ^{are} several hundred thousand people (in a country of 3.2 million) armed and determined to fight. The invaders will have to kill them all to "win".

I had mentioned to you if you would be interested in coming here for some time to work in the area of education. Within the last 1-1½ ~~the~~ years, the economic situation has become so bad that even

very basic programs are being cut. Illiteracy is again on the increase. Under these conditions, I don't see the government being interested in putting any resources in basic programs, like development of educational methods. Some work from international funding is going on, and that is the only possibility. The govt. does not even have money to pay salaries, not to speak of even a few dollars contribution towards the air fare from India. So, overall, the prospects look rather grim. If the economy goes into an emergency survival mode, which it might, I wonder what would be the use of all this planning work that I am involved in -- at least in the short run.

Do write to me. I would like to hear from you about what is going on with you, and India in general. My address is:

Anil Gupta (el Indio)
INE Planificación, OPE
Apartado Postal 55
Managua
Nicaragua.

My hello to Bhabiji (I've forgotten her name -- Manisha I think), and love to the little one (again, I forget the name).

In Solidarity,
Anil.

P.S. I am sending this letter through a friend from India, ^{via Nicaragua} who is returning to India ^{after his studies in U.S.} I will try to type up something about what is going on here, and if you find something else enclosed, do try to send it to Bharat/Gail and others you trust.

P. GOVINDA PILLAI

A K G CENTRE FOR RESEARCH AND STUDIES

TRIVANDRUM - 695 034

Phone : 66703

Phone : 74624

9 SUBHASH NAGAR

TRIVANDRUM-695008

5-9-1986

Dear Com. Arvind Gupta,

Thank you very much for your card dated 15-7-1986. I am sorry for this long delay in responding. When your letter came I was in Delhi, and I went on to Allahabad and some other places. When I returned I found myself very unwell and was admitted to a hospital. I am writing this from a hospital bed - and I may have to be here for two or three weeks more. So, ~~ex~~ kindly excuse me for the long delay.

Shri K.K. Krishnakumar of Sashtra Sahitya Parishat, with which I work in close cooperation, has received 100 copies of Kosambi's Science, Society and Peace. We will sell all of them and probably ask for more, before long. So you need not send a separate bundle to me. I am writing a review of the book in the mass-circulated organ of Parishat, to boost sales.

About Kosambi's books in Malayalam:

A Malayalam translation of *Myth and Reality* with a long introduction on the life and work of Kosambi by myself has just come out. The translation of *Exasperating Essays* is in the press - and will be ~~as~~ with the book sellers in a month's time. His other books including "Introduction", "Outline" etc are also being brought out in Malayalam. ~~It~~ They are published by a society, specially organised for the purpose. I don't have the actual street name and address now. But if you are interested I can send them as soon as I am out of this bed and in my office - say in two or three weeks. I can also send you "Myth", if you are interested.

I have not seen "D D Kosambi on History and Society: Problems of Interpretation" which you have included in the list of his publications in "Science, Society and Peace". ~~And~~ I don't know who published. Could you kindly ask the publisher to send me a copy by VPP?

Thanking you,

P. S. Sastry per 4 am Sunday

Sept. 10, 1986

Hochangabad

Dear Arvind,

I had assured in April/May that I will write soon. But then one gets tangled up in various things. And also the laginess to marshal thoughts - translate them into meaningful syntax. One also keeps attempting...

By now the book-post which I dispatched yesterday must have reached you. Mostly, it is history - the history of language programme highlighting various points of ~~var~~ views that were adopted at different times. Ramakant, Shobha, Suchnita, Ghanashyam, Hardy... Often the approaches are so diverse - that they seem to belong to separate programmes altogether. Some have been discarded, others molded and then some ride the crest at the moment. That is why the whole bundle is so jumbled up and not very readable.

2

I also know, even from my ^{own} experiences, that there is always a risk in sending 40-50 pages of this sort of material - that you might not be able to spare enough time to go through the whole bunch thoroughly.

This preface was important because in the past 4-5 months since we joined, an effort has been made to develop a proposed curriculum for the class I, which I have enclosed along with this letter. Ghaneshyam & Subir in Shahpur (70 km. from H'bad on H'bad-Betul highway) and Veena in Harda have started field testing it. All of them will be teaching class I students for the whole year using the proposed curriculum as a basis. We feel that this feedback and comments from people like you will give it a shape.

So please go through it thoroughly and write back in detail. We haven't filled in the activities yet.

3

Arvind, we need some help as far as materials are concerned - our major problem has been a replacement/alternative of paper that can be stored because it seems that more expensive item in this sort of a model is going to be paper.

We are also looking for a pliable material which can be easily molded and which is better than the traditional Inztl, yltl combination. So whatever ideas, information you have - we would like to have them too!

This letter is turning out to be a request-line. HSTP bulletin is back in our lap and there again we need for your contribution - puzzles, experiments, innovations, articles and bibliography of resource books. We are trying to convert it back into a bulletin for inhouse reading, an easy-to-read yltl and not an "intellectual" type.

Last week, Vinod had sent a copy
 of खेल खेल में. As we say in Hindi -
 "मेरे पास कुछ करने के लिये उपयुक्त साधन नहीं है।"
 Heard that it is being translated
 into 4-5 languages simultaneously.

- Vinod must have written that the
 सहयोग राशि for खेल खेल में is being
 kept at Rs 1/- per copy as per
 arrangement with DST. It seems
 since के लिये तैयारी and खेल खेल में are
 going to be two of major resource
 books for Primary Ed. Prog. (PEP).

We also want to start with Science and
 Social Science packages for the later

- Classes i.e. II, III, IV, V, which at the earlier
 classes might be apart of language itself.
 Any ideas or suggestions??

Best later,

Lijub

P.S. - Subbu has asked for photocopies of
 all the D.D. Kosambi's articles that
 you have except the ones in "Myth and
 Reality".

90 डिग्री

25-11-20

1. ਕਿਸੇ (ਚੁਣੇ) ਦੇ ਪ੍ਰਭਾਵਾਂ ਨਾਲ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 2. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 3. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 4. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 5. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 6. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 7. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 8. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 9. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।
 10. ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਨੂੰ ਧਰਮ ਦੇ ਧਾਰਮਿਕ ਬੰਨ੍ਹਣ ਵਾਲਾ ਕਰ ਲੈਂਦਾ ਹੈ।

[illegible]

६८ वल कोहि मिमि होत नाह है
 लीकल होयना है - सोय लेखत नी
 ६९ नीली मरत है, पर नाकली
 मिमि की मोलकमरत। कोह चुनिम
 ७० लीकली मरत है सो लोके ? सोम-
 कोहि नीन अलकन / मरवने की डाल
 ७१ लीकली है। दी- उह नलिम
 ७२ लीकली होत हो लो
 ७३ लीकली उह मरली- नीकली
 ७४ लीकली होत हो लो
 ७५ लीकली होत हो लो
 ७६ लीकली होत हो लो
 ७७ लीकली होत हो लो
 ७८ लीकली होत हो लो
 ७९ लीकली होत हो लो
 ८० लीकली होत हो लो

1) ਪਾਸਪਾਤਰ ਭਾਗੇ ਗਏਗੇ ਕੀਰ
ਮੇਰੇ ਲਿਖੇ 2 ਭਾਗੇ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਏ
ਦਿੱਤੇ ਹਨ। ਪੂਰਾ ਕਾ ਪਾਸਪਾਤਰ ਮਿਲੇਗਾ
ਪਾਸਪਾਤਰ - ਪਾਸਪਾਤਰ ਹੈ, ਬਣਨੇ ਦੇ
ਲਿਖਾ।

2) 'Mica' - ਇਹ ਨਾਮੀ ਕਾ ਪਾਸਪਾਤਰ ਹੈ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਦੇ 1962 ਦੇ 66 ਤਾ 67 ਦੇ
ਕਾ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਦੇ ਪਾਸਪਾਤਰ

3) ਲਿਖਾ ਕੀ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਦੇ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ

4) ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ

5) ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ
ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ ਪਾਸਪਾਤਰ

ਪਾਸਪਾਤਰ

दिनांक
10/11/2020

॥ ॐ ॥

पुणे

श्री. अरविन्दजी

सरनेह नमस्कार।

मैंने कलही आपने भेजी हुई दो
पुस्तकें - 'खेल खेलमें' प्राप्त की।

आपने याद रखकर इतनी अच्छी
पुस्तक भेजी देखकर बहुत बहुत
खुशी हुई। इसके लिये धन्यवाद।

पुस्तक बहुत उपयुक्त है। हमारे
विद्यालयों में उसका अवश्य उपयोग
करेंगे। मैं सायन्स की विद्यार्थिनी
नहीं हूँ तभी भी मुझे पुस्तक में स्वयं
करके देखूंगी।

मैंने इस पुस्तक का परीक्षण
एक मराठी पत्रिकामें पढ़ा था। इस
पुस्तक का मूल्य लिखा नहीं है। क्या
National Council for science & tech.

Communication के पते पर लिखने
से मिल जायेगी?

आपने 'गिनुभाई बघेका' की
'दिव्यस्वप्न' पुस्तक का मराठी में
अनुवाद के लिये लिखा था। आप
बढ़ कर अनुवाद हो चुका है और पुस्तक
भारतीय शिक्षण संस्था कोयंबूर से प्रकाशित
हो चुकी है। आपका नया पता नोट कर
लिया है। घर में सभीको शुभेच्छा
सुशील दाते

To
Arvind Gupta
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park
Pune 411-001
पुणे पिन 411-001





Dr.P.J.Lavakare,
Adviser.

Tel.651916.

तार/Telegram : SCIENCTECH
: 662628 (PABX)
दूरभाष/Telephone : 662626 (PABX)
: 662260 (PABX)
टेलिक्स/Telex : 31-66096 DST IN
: 31-61805 DST IN

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SCIENCE & TECHNOLOGY
DEPTT. OF SCIENCE & TECHNOLOGY, NEW DELHI

D.O.No.3/41/86-Adv.STP.

10th September, 1986.

My dear Arvind,

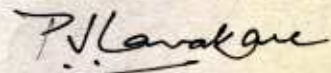
Thank you very much for sending me two copies of your booklet Khel Khel Mein. Many of the contents I had seen before in Chakmak as well as in some other popular science magazines, but I like the comparison you have made with actual objects one sees in our day-to-day life with the models you have made from match-sticks. I personally feel the booklet has been extremely well brought out and I do hope that the response will be encouraging.

Since DST has been able to provide the catalytic help, we would very much like to know the response you receive to this booklet.

Congratulating you once again on your innovative approach in science popularisation,

With kind regards,

Yours sincerely,


(P.J.Lavakare)

Shri Arvind Gupta,
201-D/6, Yogi Park,
12-A, Koregaon Park,
POONA - 411 001.

4th August, 1986

Dear Anand, Many thanks for your
affectionate letter and booklet.

The booklet has many
good features in that it is compact
the cover is eye-catching and the Hindi
simple enough for even me to read!
The illustrations are self-explanatory
too. I have given a copy for
translation into Telugu and will
give my copy to the School as soon
as I shall have a Science teacher
in the Staff.

Vinod has already commenced
translations and Soma's will be
in the next fruit.

I shall try to get as many people
interested as possible. Do you send
your publications to Dr Pandit at -

CCMB? I know he generally works
with older students but he may
be able to interest the Staff at
the Jadhav Memorial School.

These days we are having a
lot of trouble with demonstrations
against increased quota of
recruitment against S.C. groups.

By the way I have seen
Coven's book on trees is
available at Pocha's now.

I am going ahead with my
plans to make a mini-jungle
near our residence and we have
introduced a lot of new trees
here. I have planted them.

Sophie these days is at N.I.D.
Ahmedabad and Anila has
moved to Delhi. She is taking
her M.Sc. in Bio-Chemistry
from Delhi University and
is very happy now. Although

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

The liked Jengunman College she
had not been to well at
Pona and did not enjoy the
even at the University so left.

Balw and family are well.
Pon Dr Das has suffered a
heart attack at Jinhath but
fortunately is making a rapid
recovery now.

Vinod is as busy as ever
this month he is scheduled to
travel to Gahat, Gov, Bangalore
and Chandigarh as well as Delhi
as usual.

I shall close now, carry
on with the good work.

With love from us both
to all of you

Yours,
Gay!



Arvind Gupta,
46 Vidyavanagar,
509 Area, Air Force
POONA

पिन PIN 411032

पिन कोड नंबर THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न लिखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखिए WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

Director's Res: NCR/Edway
Uppal Rd, Hyderabad

पिन PIN 500007



अस्पर्शता ईश्वर और मानवता
के प्रति अपराध है।
UNTOUCHABILITY IS A CRIME
AGAINST GOD AND MAN

— यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE —



THE SOCIAL WORK & RESEARCH CENTRE (SWRC)
(Registered under the Societies Act 1860)

Director : Sanjit Roy

Office : Tilonia 305 816, Madanganj Dist. Ajmer. Rajasthan Tele.No.316

Ref. No.

Sh. Arvind Gupta
MUDRA
383 Narayanpet
Pune 30

Date 28/6/86.

Dear Arvind,

Anuma + I want to thank you very much for ~~letter~~ ~~letter~~ it, SWRC Tilonia is going to order copies from Eklavya.

Nitesh who is coordinating the Education Prog. in Tilonia wants to invite you for a workshop between 10-25th Sept. Could you come anytime inbetween for as many days as you can. The workshop is for 60 night school teachers. The workshop is nonformal and will deal with problems raised by the teachers.

If you cannot come on these dates, please let Nitesh know when you can come anytime ~~for~~ this year. Please do come for at least for a week.

We will pay you return fare + honoraria. How ~~much~~ ~~also~~ soon can you come. Please reply soon.

With affectionate regards,
Anuma

Delhi
24.8.86

SUDERSHAN HANNA
PROF. FACULTY OF INDUSTRIAL DESIGN
NATIONAL INSTITUTE OF DESIGN
PALDI, AHMEDABAD

Dear Arvind

Received your books just before leaving
for Delhi
So I could see it in the train.

Well done indeed.
The Material is very well presented.
The Drawings are clean and layout is
good.

On the whole, the book has its own
character.
Its strength, of course, still lies in the
Context and approach of the basic
idea.

I also liked the quotations and the
introduction. It tells much about your
line of thinking and goes very well
with the Context of the book.

I have yet not read full book
but whatever chapters I have, the Hindi
is simple and very readable.

I think, publication of this book will be
greatly received by the schools. There is
no parallel work to my mind done by
either an Indian or by someone ^{from} outside.

Just now my younger sister Reeta who is
in a Science (Chemistry) teacher in Delhi
Just looked at this and wanted to
trace a few pages for her class.

I am really happy to see this important
work finally put together & circulated
in the way, it should have been years
ago.

Whenever you can, please send me two/three
more copies! where are they available!

I came to Delhi to CIE work! Tomorrow I am meeting the producer
Mamaji - let us see how things go.
Sulbha is with her parents in Gurgaon. A new life is being expected
this month and. should be visiting you. My Delhi Contact telephone
(Residence) is 6441780. If you pass through next time - I can be reached
my brother Sudhir to check about me, so much for now - I'll love you

THOMAS GAY - A GREAT NATURALIST
RETIRED I.C.S.
WAS THE REVENUE OFFICER OF
POONA 50 YEARS BACK.

122/4-A Erandvane

P-4 411 004

23-8-88

Dear Arvind,

Many thanks indeed for the 3 copies of your lovely
little Toy Book. Anna has seized one copy for herself
and I shall show one copy to the right kind of people.
My hearty congratulations on this effort.

Apart from the books, it was nice to know that you
still remember us. The last communication I received
from you, I think, was your post-card of 10 Jan. 85.
I answered this on 10 Feb., but after that there was
silence.

I hope you and Sumita are very well and happy and
busy. How is your little Dulari, now 2 years old?
What are you & Sumita doing in the way of jobs?

My dear girls are flourishing - all except Asha,
who is not yet recovered from her recent appendix
operation. My own health is rather mixed: could
be better, could be worse. Among other troubles, I have a
duodenal ulcer which refuses to heal and gives me pain
very now & then. Still, I'm a lot to be thankful for.

If you are ever able to drop in here, we shall all be
most happy to see you - all 3 of you.

With warmest blessings, from
Dada.

Professor M. L. SAVADATTI
Department of Physics
Karnatak University, Dharwad-580003

2.9.86

Dear Gupta

Thank you very much for the 3
Copies of 'राम खेम मे'. It is a
delightful book. I am sure it will
catch on. It would be more interesting
if the figures could be done in
colour - and would attract more children

I have sent a
copy to Shi. Setukar.

It was a pleasure
and profit to meet
you while you were
at Dharwad. We have
formed a loose unit
with other organisations
to popularize science!
With kindest regards
M. L. Savadatti.



15

भारत
INDIA



Shri Aravind Gupta
46-Vidya Nagar
509 Area
Air Force

POONA

पिन PIN

411032

28th Aug.
Mumbai

Dear Arvind,

Great to see
your book in print.
Hope it gets wide
dissemination in the
country.

Our workshop will
soon be shifting out
to a regular shed.
Must talk to you
about many things
when we meet.

By the way, Philip
and I were talking

about the toys ~~and~~
in the booklet and
we wondered if you
had considered the
possibility of cell
leakage (from the train
engine) and their
possible corrosive effect
for children!

Best fine. All
send their love to
you. Affly Anwar.



Shri Arvind Gupta

46 Vidyanagar,
509 Area, Air Force

Poona

पिन PIN 411 032

Bangalore 560 001
28 August '86

Dear Arvind,

Thank you so much for the two copies of 'खेल खेल में'. I have not yet read the text but the book looks very good: the get up & the diagrams are excellent. I note that sometimes the figure captions & labelling are in English alone. This suits me, but will it be OK for Hindi readers?

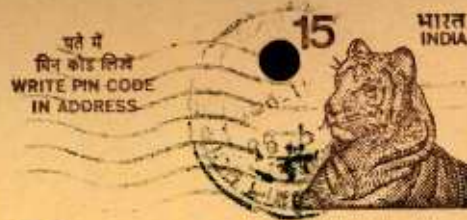
Could you kindly send me 10

more copies & charge me or my account if any money is left. Thanks

I do hope the book gets the wide readership that it deserves.

Trust you & your family are all well.

With my best regards,
Yours affectionately,
Shanker



To

Shri Arvind Gupta,

46, Vidyanagar,

509 Area, Air Force,

Poona

पिन PIN

4	1	1	0	3	2
---	---	---	---	---	---

184 SFS- DDA Flats
East of Kailash
New Delhi 110065
Aug 25, 1986

Dear Arvind:

I saw your book "रेखा रेखा में" at the Hyderabad Book Trust and was simply delighted. Congratulations on a fantastic piece of work.

I will be grateful if you can mail me 5 copies along with a bill and instructions on mode of payment. I am travelling now and will be back in Delhi by Sept end.

Gita Ramaswamy of the HBT is quite keen on publishing a Telugu translation.

When is Goti getting married? If you see him, please give him my regards.

With best wishes for your family and regards to you

Sincerely
Ravi Chopra



ARVIND GUPTA

46 Vidyanager

509 Area, Air Force

PUNE

पिन PIN

4	1	1	0	3	2
---	---	---	---	---	---

11911986

पदुनाथ बत्ते

शिवा, पत्रकारनगर,

पिन 411 016. टेलि. 50680

प्रिय अरविंद भाई

स प्रेम प्रणाम.

वेक वेक में पुलाक को लिये बहुत धन्यवाद,
बहुत अच्छा प्रवास है. किजिये आपने
जो प्रादवाहिक दिया उससे लोग बड़े
पुर्क हैं: आपकी पुष्टी कब होनी है?
पुर्क की कुछ पाठ शीलाओं में आपका
आलोकन करवाना लाभदायक होगा, ऐसा

लगता है. टेलिफोन से
संपर्क किया जा सकता
है।

सबको प्रणाम.

अमाहू:

33-1-11



श्री अरविंद गुप्ता
46 विद्या नगर
509 एमएमएल कोल
पुणे

411 032

पिन PIN

2/9/86

Dear Arvind,

10,000 received! Congratulations.
It looks very neat, a good
job really. Some responses have
come here too, all favourable.
Sahgal probably wanted NCSTC
to be added in the
financial support acknowledgement
too - what happened?

How many were finally
printed? Not that we need
more, 15,000 should be
enough.

DR VINOD RAINA
EKLAVYA

We pull on - Chalmers is
more than a full time
job.

When do we see you &
what are your plans now?
How is Julian?

With affection
Vinod.



ARVIND GUPTA

201/D6, YOGI PARK

12A, KOREGAON PARK

PUNE

411 001

पिन PIN

श्री अरविन्द गुप्ता
द्वारा ; एकलव्य
E-1/208 अरेरा कालोनी
भोपाल - 462016.

10.9.86

आदरणीय भाई अरविन्द जी !

बधाई । 'खेल खेल में' मिली ।
अपने ढंग की झूठी खं बेजोड़ । हिन्दी साहित्य में प्रथम और मौलिक
प्रयास । यह बालक में वैज्ञानिक ज्ञान के विकास हेतु उपयोगी उपकरण सिद्ध
होगी, बालकों को स्वयं करके सीखने की झोर ले जाने का मार्ग खोलने
वाली । सच है कि आज तक हम बालकों को चकाचौंध करते रहे हैं,
उनमें वह आत्मविश्वास जो जागना चाहिये कहीं गहरे अचेतन में दब
जाता है । आपसे आशाएं जगी हैं ।

पुस्तक के अक्षरों का आकार यदि
कुछ बड़ा होता — कम से कम उस आकार के होते जिसमें कि
प्राक्कथन दृष्टा है तो भी — जिनके लिए हैं उन्हें रुचिकर तथा सुविधा
पूर्ण होती । एक चीज और भी खटकती है, वह है चित्रों के साथ
अंग्रेजी का प्रयोग । यदि हिन्दी भी साथ में प्रयोग की जाती तो
और भी अच्छा निर्देशन हो पाता ।

एक छोटी-सी बात और कहूंगा —
पुस्तक भले ही बच्चों के लिए है पर 'बच्चों की दुनियां' के नाम
से लिखी श्रुतिका अपने में विज्ञान के उद्देश्य, शिक्षा एवं शिक्षा
के अर्थ तथा इनसे भी कहीं अधिक बाल मनोविज्ञान समेटे हैं । यह
मिथित ही मानवता के उस समग्र अंश के लिए है जो बालकों के स्व-
निर्मित अविष्य, मानवता के आनेवाले कल के प्रति सचेष्ट एवं सतत
जागरूक हैं ।

भारत सरकार का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
विभाग धन्यवाद का फत्र है कि उसने एक उत्कृष्ट पुस्तक प्रकाशित करने
हेतु भी कुछ अनुदान दिया । DST ने भी आशा जगायी है ।

मेरा सुझाव कैसा लगा ? अवश्य ही
लिखेंगे । आगे क्या करने जा रहे हैं यह भी ।

एक सहगामी —

देवेन्द्र कुमार

पता:

देवेन्द्र कुमार

सी डी प्रार टी, इंफार्मेशन सर्विस

२६ चैथम लाइन

इलाहाबाद - २०००२२.

P. K. SRINIVASAN,
Math Education Consultant,
ALARSRI
Plot. No 5, 25th Street,
Thillai Ganga Nagar,
Nanganallur (P O.) Madras-600 061.

Sep 29, 86.

Dear Shri Arvind Apta,

Thank you for favouring me
with two copies of your marvellous booklet
'Kheh kheh main'. My first impression on
receiving them was ~~the~~ excellence seen in
printing ~~and~~ of letters and illustrations.
Immediate query that arose was the availability
of the book in other major languages of
India. I wish the booklet had carried
both English and Hindi versions. The
blank spaces could have been better utilized
and the book ^{also} would have become bulkier.
I think even now this improvement or
facility can be provided when printing
the next ~~text~~ edition.

When I went through the
contents, ^{I saw how} improvisation technique was
beautifully and elegantly explained. One
thing struck me. I don't know if you can
bring out a second edition along these
lines: Giving different hypotheses and
fixing up the correct one by further
experimentation. This would pave for
scientific thinking and development of
scientific temper.

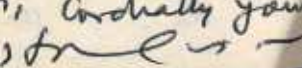
P.T.O

THE NEXT PROBLEM IS A TRAIN PROPAGATORS
AND SPREAD THE MESSAGE OF IMPROVISATION
FOR ACQUIRING KNOWLEDGE THROUGH
EXPERIENCE. YOU MAY BEGIN WITH
~~THE~~ SCERT AND SIE PERSONNEL. THE
TRAINING PROGRAMME SHOULD BE PATTERNED ON
THE ~~LINE~~ ^{LINE} FIRST AID TRAINING BY RED CROSS.

FOR MATHEMATICAL CONCEPTS
AT SCHOOL LEVEL, IMPROVISATION WILL
BE SIMPLE AND FASTER AND I WOULD
SUGGEST DST ~~BRINGING~~ ^{OUT} A SUPPLEMENTARY
BOOKLET A SHOW HOW RULES NEED NOT
BE LEARNT BY ACCEPTANCE OF AUTHORITY BUT
COULD BE SEEN TO EMERGE BY VIRTUE
OF EXPERIENCE IN ACCOMPLISHING CERTAIN SIMPLE
TASKS. YOU MAY SUGGEST ^{THE} A DST IF YOU
THINK IT WORTH WHILE.

THE BOOKLET WHETS ONE'S APETITE
AND CREATES A CRAVING TO ASK FOR MORE
AND LOOK FOR MORE FROM YOU.

I AM HAPPY YOU WOULD BE
ENROLLING YOURSELF AS A LIFE MEMBER OF
AMTI AND THE ANSHUKAR WILL CERTAINLY
BECOME RICH THROUGH YOUR ~~ANSHUKAR~~
MEMBERSHIP AND INSPIRATION
~~I AM ENVELOPING MY ANSHUKAR~~

WITH MY DEER REGARDS, CORDIALLY YOURS
P.S. HAVE YOU SEEN ONE-STRAW
REVOLUTION by a Japanese farmer? 

MARATHI VIDNYAN PARISHAD

Vidnyan Bhavan, V. N. Purav Road, Sion-Chunabhatti,
BOMBAY 400 022. Tele :

मराठी विज्ञान परिषद

विज्ञान भवन, वि. ना. पुरव मार्ग, शीव-चुनामट्टी,
मुंबई 400 022. दूरध्वनी :

PROFESSOR B.M. UDGAONKAR
PRESIDENT.

September 19, 1986

Dear Sri Gupta,

Many thanks for the book *स्नेल स्नेल में*
which you sent to me recently. I enjoyed going through it,
and we are trying to see if the Marathi Vidnyan Parishad
could undertake the Marathi translation and printing of the
book. I will get in touch with you again very soon.

With best regards,

Yours sincerely,

B. M. Udgaonkar

(B. M. Udgaonkar)

Sri Arvind Gupta
46, Vidyanagar
509 Area, Air Force
Pune 411 032.

Director's Residence
N.G.R.I. Colony,
Uppal Road
Hyderabad
500 007
27th September, 1986

My dear Arvind,
Many thanks for your letter. I shall
renew the matter of Telugu translation with Dr
Rama Rao who had been given your booklet
శ్రీలక్ష్మి శ్రీలక్ష్మి గారి. for translation a few weeks back
and ask him to contact the Hyderabad Book
Trust. I shall let you know how things proceed.

As I have greatly enjoyed the Cowen
book and know how much you will treasure it.
I am passing on my copy to you. The library has
a copy which I can always consult if need be.
I also managed to get Blatter & Millard for the
library as well as a secondhand Randhawa.

We are now engaged in planning a Botanical
garden here and are endeavouring to make as
beautiful an area as possible. I want to
introduce magnolias, the pink cassias and
liquorice as well as the brilliant coral
tree and flowering Asoka among others.

Vinod is planning to landscape the area
around the new Computer Centre beautifully
too.

It must be interesting to see the
development of this new garden. I have seen

Sympathie! We see the same thing here every day.

Here I am trying to instil a love of trees
in our school's tiny tots. On October 2nd some
4 dozen will receive Tree Recognition Certificates
- for being able to recognise at least ten trees.
The teachers are becoming interested and Cassi's
book has been borrowed and is being consulted
- quite an achievement! Today as we trotted
around the Colony there was great excitement
and I found quite a few could recognise
the wild cotton plant and all trees that
give fruit such as Sapote, Sitaphul and jamun.
Sow a seed and so much comes forth! Whenever
I feel low I go to the children and hope well's
up again! The hardest thing to fight is apathy

I am very happy Sophie got into N.T.D. She
just loves it and I feel will bloom there. Anita
is very happy at Delhi.

Vinod is as busy as ever. He sends his
affectionate regards to you all.

I shall write again concerning the
Telegraph translation.

With warmest regards from
both of us

Yours affectionately

Eug!

316, Competent House
Middle Circle
F-14 Connaught Place
New Delhi 110 001
Phones 3316357, 3313076—8
Telex 314724 INTO IN
Grams CIRCULATE NEW DELHI

October 1, 1986

Mr. Arvind Gupta
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park
Poona-411001

Dear Arvind,

Many thanks for sending your 'Khe! Khe! Me'. My own Hindi isn't up to reading it, but I'll get one of my staff to translate it. Even at first glance, though, I like your matchstick mechano very much, and all the work with patterns and geometric shapes. I'm very much into that myself at the moment.

I'm sure Target readers will enjoy many of the simple models that develop concepts as well as give the satisfaction of making something.

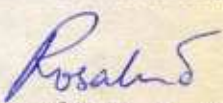
Let me go through everything carefully. Thanks for offering the ideas to Target. I'll certainly be happy to use some - on payment, of course - whatever our usual not terribly high rates are.

It was good to hear from you. If we, or I, can be supportive in any way of your work, just let me know.

All good wishes to you, and congratulations on bringing out such a clear and attractive book.

Best wishes,

Yours sincerely,


Rosalind M. Wilson
Magazine Editor

K. R. DATYE
B.Sc., B.E. (Civil), F.I.E.
CONSULTING ENGINEER

REHEM MANSION, BLDG. No.2, FIRST FLOOR,
44 S. BHAGATSINGH ROAD, BOMBAY 400 039.

Telex : 011-71618 LISI-IN
Grams : ROCKFILL
Phones : Off. 2020071/2029756
Resi. 6146720/6149626

Gen/358

October 1, 1986

My dear Gupta,


Thank you very much for sending a copy of
the very interesting pamphlet. २१/१० २१/१०

This is a very good contribution and
represents a new approach to producing educational
pamphlets.

I expect that your ideas will be of immense
value in developing training methods for technology
transfer for rural development.

Regards,

Yours sincerely,


(K.R. DATYE)

Shri Arvind Gupta
201-D/6, Yogi Park
12-A, Koregaon Park
PUNE - 411 001



फोन : 54413

विज्ञान परिषद् भवन

महर्षि दयानन्द मार्ग

इलाहाबाद-२११००२

संख्या १५७१/८६-८७

दि० २४ सितम्बर, ८६

मान्यवर,

आपका दिनांक १३।६।८६ का कृपा पत्र तथा ३ पुस्तकें खेड लेल में प्राप्त हुई। आपका प्रयास सराहनीय है। इससे बच्चों का समय एवं बुद्धि का विकास होगा।

आपने लिखा है कि अभी केवल म०पु० में स्कूलों को आपने बांटी है। यदि आप बिहार राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा आदि में भी स्कूलों में अपना पसन्द करें तो उसकी ४०० प्रतियां यहां

विज्ञान

सरल, रोचक एवं सचित्र वैज्ञानिक मासिक पत्रिका

वार्षिक मूल्य १०.०० रुपये

पाठकों से भेज दें। हम उन्हें अपने विज्ञान के पाठकों को विज्ञान के अंक के साथ भेज देंगे। आशा है आप सानन्द होंगे।

भवदीय

(गंगावर तिवारी)

कार्यालय-प्रमारी

विज्ञान
में,

श्री अरविन्द गुप्ता,
२०१-डी।ई, जोगी मार्ग,
१२२, कोरेगांव पार्क, पुणे-४११००१

(महाराष्ट्र)



Dear Anand,

9 October 1986

You may have given me up as a lost cause by now. I hope you will forgive my rudeness for not replying earlier. Your books were received in due time and both Vasudha and I enjoyed reading them. We have shown the books to some friends who have not only enjoyed the book but have asked whether they could have a copy for their children as well. But what would sound most reassuring to you is the fact that one Lalit Uniyal, about whom you may have heard, has expressed a desire to have the book available for his schoolchildren. In case you don't know about Lalit (he recalled having met you once) he joined the IAS about 12 or 13 years ago. Then threw up his job and decided to work full time among landless harijans in a village called Aan near Attarra in Banda district. After many setbacks he has finally got a foothold there through a school he has set up (and has been running for 6 years or so) especially for poor children. I have given him your address so that he can get in touch with you directly. Like many of us he is not a party person but is determined to do his bit, and has proved it.

In case he hasn't been able to write to you, you could send me some copies (say 10) for his school. I shall be visiting the school on its annual day 14th November.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Dr Arvind Gupta,
201/D6, Yogi Park,
124 Koregaon Park
PUNE

पिन PIN

4	1	1	0	0	1
---	---	---	---	---	---

पिन कोड THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रहिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पत्र में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

Arvind Banerjee, 33, J. L. N. Rd.,
Bottle Market, Alld.

पिन PIN

2	1	1	0	0	2
---	---	---	---	---	---



पत्र को FIRST FOLD

Since you mention that you have some spare copies you can send a few extra ones to me. Alok Rai, for instance was interested in a copy (he too seemed to know of you).

I thought your introduction was very beautifully written. As for the rest of the contents I can only say that it is fascinating. I do hope that you keep up this excellent work and wish you all the best for your book on birds. People I have spoken to about this are already looking forward to this book. There are several persons here who may be able to help you with it too. So in case you can make it to Allahabad some time, it will be a good experience for us & you. Yours Arvin.

Varsha & Kudu are well.

7-11-86

21-C, SHUBHACHINNA

Dear Com. Gupta,
Many thanks for the 5 copies.
The overwhelming response to the book
is not at all unexpected, but still it
makes one feel good. It was nice to know that
BNU has got interested in a ^{Marathi} version of the book.
If it is not possible to print the book, Zinn can distri-
bute it through its developed outlets all over
Maharashtra. Whether for Zinn will be a
problem to print the book will have to be thought
over. My income is not sufficient to print.
What I'd written to you was about making the
book available during the big distribution that

Vivekanand Rd,
Hauz Khas
New Delhi

Zinn is organizing in
December. Since you
can't sell it, some
other way may have to
be thought of. I'll
explore with Zinn &
other friends in Zinn.
With regards,
C. Chaudhary



Arvind Gupta

201/D6, Yogi Park

12A Koregaon Park

Pune 411007

197 PIN

दिनानाथ मनोहर, 61 लक्ष्मी नगर,
कोरीट रोड, नंदुरबार 425412
दिनांक : 7 आक्टो. 1986

प्रिय अरविंद
सस्नेह सलाम,

आपका खत और किताबें आकर काफी समय बिता है, चाहता था की जरा आरामसे और विस्तारसे लिखूं। लेकिन छोटी छोटी फालतू लेकिन तत्कालीक महत्व रखनेवाली बातोंमें फंसा रहा। एक तो बब में अपनी नुतनीकरण कियी हुवी रुममें आ गया हूं। उसमें कुछ दिनोंतक व्यस्त रहा। और अब ग्रंथालीके ग्रंथमोहोक कार्यक्रमकी तैयारी में हूं।

ग्रंथालीके इस कार्यक्रमके बारेमें आपने तो पढाही होगा। ~~नंदुरबार~~ नंदुरबारमें भी ये कार्यक्रम हो रहा है। कोशिश ये है की कवी नारायण सुर्वेजी यहाँ पधारे। उनका काव्यवाचन का कार्यक्रमतो होगाही, लेकिन सोच रहा हूं की यहं जो आदिवासी तालूका है जिन तालूकाओंके स्थानिय आदिवासी और दलित साहित्यिकोके साथ उनकी गोष्ठी आयोजित करे तो अच्छा असर होगा। प्रदर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रम यशदायी हो जिसलिये एक प्रारंभिक समिती कठीत हुवी है। जिसमें पांच तालूकाके ~~कुछ~~ कुछ प्राध्यापक और शिक्षक और अन्य लोग ~~हैं~~।

इस समितीकी चर्चमें ऐसा सुझाव आया की, इसी कार्यक्रम के साथ। अगर शिक्षकोके मिलये कुछ चर्चागोष्ठी आयोजित कियी जा सकती है तो बेह तरीन होगा। जैसे नंदुरबार विभागमें विंगनकी प्रदर्शनी होती रहती है। कुछ विंगन शिक्षकोको जिसमें काफी रुची है। कुछ साल पहिले कॉन्सिलने यहाँ एक सेमिनार भी आयोजित किया था, जिसमें विंगन शिक्षणमें अिंडीजिनस मठेरिजल कैसे अिस्तेमाल किया जा सकता है जिसपर चर्चा हुवी ~~थी~~ थी। आपकी किताब भी जिन लोगोंने देखी है। सुझाव ये आया की अगर आप उस वक्त फ्री हो और यहाँ आ सकते हो तो एक ~~दो~~ दिन शिक्षकोके साथ आपकी गोष्ठी रखी जा सकती है। विषय या तो शिक्षक, विद्यार्थी और आजकी शिक्षाप्रणाली हो सकता है या तो आजकी विंगन शिक्षाप्रणाली ~~हो~~ हो सकता है या आप जो ससंत करे, जिसमें ~~शिक्षकोकी~~ शिक्षकोकी रुची हो। मैं ~~समझता~~ समझता हूं की अगर आप आ सके तो अच्छा रहेगा। शिक्षकोका रिस्पॉन्स अच्छा रहेगा ये मुझे विश्वास है। और नारायण सुर्वेजी के साथ दो दिन, निकालने का मोका मिलेगा। चाहता तो था की छूद आकर आपको मिलू और कार्यक्रम निश्चित करू लेकिन ~~अब~~ अब नोव्हेंबरतक तो यह संभव नहीं होगा। जैसे मैं आजकी बंझी जा रहा हूँ और दो तीन दिनोंके लिये वहाँ रहूंगा भी। लेकिन पूना आना असंभव है। आपही इसके ~~बारेमें~~ बारेमें सोचिये और संभव हो तो आनेका प्रोग्राम जरूर फिक्स किजिये।

और क्या हो रहा है? काफी दिनोंसे गेलसे कुछ खबर नहीं, जैसे वाहास्से मुलाकात होती रहती है। ~~कुछ~~ वो भी डिसें 6/7/8 जिन दिनामें यहाँ रहेगा। ~~करोड़~~ गत तीन चार महिनोंसे कुछ खास लेखन नहीं हो पाया। छुटपूट लिखता रहा

सायन्स फिक्शन लिखनेका तय किया था , हो न सका । जिस साल कुछ कहानीयों भी न लिख सका । अब सोचता हूँ की काम करना पड़ेगा ।

बंबजीमे आपसे मुलाकात हंजी लेकिन जादा बाते ना हो सकी । वैसे ऊन दिनोमे मै जिस सेमिनार- शिबीर की तय्यारी की चक्करमे वहां आया था वो आदिवासी कार्यकर्ताओंका शिबीर जानेवारी तक पोस्टपोन करना पडा है । अब मालूम नही की जानेवारीमे भी होगा या नही ।

अगर आप आ सकते हो तो जरूर निश्चित किजियेगा , मै कोशिश करूंगा की डिसें के पहिले आपको पुना आकर मिलू । सुनिता और दुलारी कैसी है ? अब पुनामे और लो गोसे संबंध रखनेके लिये आपको सुछ आसान हुआ होगा । आपको वो टेक्नीकल अन्सटीट्यूटकी हव्हेल्यूसन का प्रोजेक्ट मिल गया क्या ? आप वहा आते जाते होगे । बाकी सभी लेम्स, लिखे ...

दिनानाथ

पहला और दूसरा फोल्ड

अन्तराष्ट्रीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

ARVIND GUPTA

201-2016 Yogi Park

12-A Karyoon Pl.

Panaji.

पिन PIN

411001

तीसरा और चौथा फोल्ड

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पत्र में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

Arvind Gupta

Panaji

पिन PIN

411001



रहा है।
 मिश्रितकारी गया था वहाँ की लड़की
 चिंतनमय है जो कुछ नया कुछ है
 मैं किसी निदा की आवाज़ थी।
 जो जो चले गये 10-15 लड़के रोना
 रहा है। सब दुखी करी है। शीतल
 है अपनी ही माँ को हँस कर चिल्लाई है
 काँपते पाँव में 12.15. कामकाज हुआ
 है। वह लड़के से पलात ली है। कोई
 जो आई-क्या भी नहीं है। जिसका
 महसूस होता है। वह कहते हैं, वह लड़का
 है। वह है। व कुम्हले पहले पलात है।
 चुकी है।

'बच्चे की माँ को कामकाज' इसी कामकाज
 पलात जाने की आवाज़ है। कामकाज को
 मिला है।
 सुनील जो हल लगे शीतली गौला के 'विश्व
 नेकता' में गले रहे हैं। उसकी दुष्टि से
 आज वे तमाम लड़कों को रोना है।
 लगता है क्षतिग्रस्त लड़कियों की कतार
 दौड़ रहा है।

गोपनीय। मधुब,
 श्रीराम

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
 INLAND LETTER CARD

श्री अरविन्द गुप्ता
 201-3/6 योगी पार्क
 12-A, कोरेगाँव पार्क
 पूना (महाराष्ट्र)

पिन PIN 411

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURE
 पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN
 प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME



पिन PIN

National Institute of Design,
Paldi, Ahmedabad-7,

19 Oct '86.

Dear Arvind Gupta

Thank you very much for your generous gift. I was very touched with the gesture of goodwill. The book is beautiful — a black & white classic and extremely enriching from the beginning till the end. Congratulations to you and the publishers.

The line drawings are excellent, the explanation just enough, the quote at the back is too good. One day I had gone to say hello to my neighbours — their two kids, — girl 6 years & boy in 9th. class were busy with match sticks & rubber tubes!! They had seen your programme on T.V & immediately got the things from the market & sat it for next few days. I lent them from our library the models you gave us to see — they wanted to know all about you & your models. The same week I got a copy from SK Khanna & also your packet for me. I will give the books (extra) to ~~some~~ one who can really use it. Thank you once again very much. The II year students have gone some interesting models & line drawings. By end of November I will be able to send you some copies of them. If you like you can use their ideas too. They do remember you well.

Convey my greetings to Mrs Gupta, your daughter must be grown up — she is lucky to have parents like you both. Hope to see you in A'Bad again. With best wishes. Yours sincerely,
Sleendola K-Shanappa.

१८५, सिविल लाइन्स

बोली - 243001

7. 11. 81

प्रिय माई अरविन्द जी,

दिवाली बाद सिद्धार्थ ने आपकी पुस्तक
'वेल वेल में' मुझे दी। आशा है दीपावली आपके भी सपरिवार
इसके सुखी मनाई होगी। मेरी शुभ-कापनाएं आपके साथ हैं।

'वेल वेल में' पुस्तक मुझे बहुत ही अच्छी
लगी। इसे मैं बच्चों के लिए अत्यन्त उपयोगी और
हल्का में जहां बच्चे हैं, एक अनिवार्य पुस्तक मंद
समझता हूँ। बच्चों के विकास में यह बहुत सहायक हो
सकती है। इसकी प्रस्तावना भी भी आपके बड़ी सुन्दर लिखी
है। इसके लिए भी आपको बधाई।

पत्र पत्र दो आवेदन कार्यों से भी आपके
लिख रहा हूँ। मैं इस पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ आपका
काल पाठकों के लाभार्थ 'अमल उजाला' में प्रकाशित करना
चाहता हूँ। इसका काफी एडवर्ट पादि आपके ही पास है तो
आप इसकी अनुमति दे सकते हैं। इसके आपके कुछ
अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है। आप कहें तो इस संबंध
में एक औपचारिक पत्र अमल उजाला से भी जा सकता
है या आप मेरे ही नाम इस पत्र के उत्तर में अलग से
एक औपचारिक पत्र भी लिख दें तो उसके भी लाभ चल
सकता है।

दूसरे बात यह है कि मैंने उच्च प्रयोग हिन्दी संस्करण
 को बच्चों के लिए एक संक्षिप्त ज्ञान मोक्ष तैयार करने प्रयासित
 करने के लिए सलाह लिखा है। अब काम इसे तैयार करने का है
 जिसमें लिए हर विषय के विद्वान् संपादक चाहिए जो एक ओर
 आश्चर्यजनक ज्ञान का चयन करें तो दूसरी ओर बच्चों के स्तर का ध्यान
 करें। उक्त सलाह पाकर मैं लिख भी दूँ। यदि चयन करने और लिखने
 वाले अलग अलग हैं तो भी काम चल सकता है। मुख्य काम तो
 विभिन्न विषयों के अलग अलग संपादक संयोजित कर देना है। एक
 के आप हो ही सकते हैं। डा. कृष्ण कुमार को भी मैं लिखूँगा।
 और देश भर में जो भी जहाँ उपयुक्त व्यक्ति हैं उनके नाम पर
 भी आप भेंट पाहूँ भेज दूँ। काम बहुत बड़ा है और समय भी
 बहुत लगेगा। मुख्य चित्र मा. पी. साथ लेना होंगे। पर काम
 एक बार शुरू हो जाए तो फिर होता ही रहेगा और एक
 हप्ता में मुख्य काम काम हो जायेगा।

आप इन लोगों बातों का उच्च प्रयोग प्रकाशित

लिखें तो और और बड़ा जोष।

अपनी पत्नी का पैसा गमनाया और बच्चों
 का प्यार मँडिएगा।

यह पुनीत, सुखा लक्षित लक्ष्मी हैं।

सन् १९६२ - निम्नलिखित लेखक



ગિજુભાઈ નર્મશતાબ્દી સમિતિ
નૂતન બાલ શિક્ષણ સંઘ, ગુજરાત.

કાર્યાલય :-

શ્રી દક્ષિણામૂર્તિ વિદ્યાર્થી ભવન,
ગિજુભાઈ બધેકા માર્ગ,
ભાવનગર-૩૬૪૦૦૨.

તા. 29 Oct 1986

બાવક નં.

To,

ARVIND GUPTA
201/D6 Yogi Park
12, A KOREGAON PARK
POONA-411001

Dear Mr. Gupta,

I understand from Mamata that DIVASWAPNA is going to be translated in Kannada, Malayalam and other languages. I further understand that ~~Mr.~~ Mr. Tripurari Sharma is doing a T.V. Serial on DIVASWAPNA.

I am glad that you are taking ~~so~~ keen an interest in Gijubhai's work and are promoting his literature. I should be happy to learn more about this from you.

There is ~~one~~ more point which I would like to draw your attention to. Copy rights of all of Gijubhai's writings are held by me. Any translation, adaptation, ~~and~~ dramatisation or production thereof in any audio/visual medium is subject to this copy right. I shall be thankful to you if you please convey this fact to all those whom you have suggested DIVASWAPNA and advise them to obtain clearance from me. ~~advise them to obtain clearance from me.~~

With regards,

Yours very truly,

Vimuben Badheka.
(Vimuben Badheka)



P.S. - I may add for your information that DIVASWAPNA has already been dramatised in Gujarati and staged.

CSE

CENTRE FOR SCIENCE AND ENVIRONMENT

807 Vishal Bhawan, 95 Nehru Place, New Delhi-110019

Phone : 6410454 & 6433394 Cable Add : ENVIRONCEN New Delhi

25th October 1986

Mr Arvind Gupta
201-D/6, Yogi Park
12-A, Koregaon Park
Poona 411 001

Dear Arvind,

Thank you for the two copies of
'Khel Khel Mein' which you had sent
me. It is a very nice publication.
Congratulations !

Why don't you send us a few copies
which we can send off to friends ?

Do keep in touch.

With my very best wishes,

Yours cordially,


(ANIL AGARWAL)

S/-

The Centre for Science and Environment is a non-profit, non-governmental, quasi-academic research organisation that has been set up to increase public awareness of the role of science and technology in national development. (Registered under the Societies Act XXI of 1860)

TATA INSTITUTE OF FUNDAMENTAL RESEARCH
HOMI BHABHA ROAD, BOMBAY 400 005

Telex : 011-3009

Code : TIFR IN

Telephone : 219111

Telegrams : ZETESIS

My dear Arvind Gupta,

Oct 17, 1986

Thanks for the two copies of खेले 2 से ।
It is good. Much of it the material
you had demonstrated here. The only
problem I see with this is that the
teacher himself/herself should be
enthusiastic about it, and should not
have the feeling that something cheap/
trivial is being passed off. It needs
a great deal of enlightenment to
realise that cheap and simple things
can, in some situations, be better
(or at least as good), and may, in
some other situations, be the only
recourse available.

I wish you luck in your endeavours.
With kind regards,

Yours sincerely,
Rama

I am passing these copies to my wife,
and see if she can make use of
them in her school. R

अन्तर्देशीय पत्राचार
INLAND LETTER CARD
BOMBAY 400 005



Arvind Gupta,
201-D/6, Yogi Park,
12-A Keshavnagar Park
PUNE 411 001

पत्राचार विभाग

Sender's name and address

RAMA
TATA INSTITUTE OF FUNDAMENTAL RESEARCH

HOMI BHABHA ROAD,

BOMBAY 400 005.



No enclosures allowed

Telephone :

विज्ञान और प्रौद्योगिकी
संचार हेतु राष्ट्रीय परिषद्
NATIONAL COUNCIL FOR
SCIENCE & TECHNOLOGY
COMMUNICATION
(SECRETARIAT)



Telegram : SCIENCTECH
Telex : 31-2096 DST IN
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY
Technology Bhavan,
New Mehrauli Road,
New Delhi - 110016

DR. NARENDER K. SEHGAL
HEAD, NCSTC DIVISION

D.O. No. CO/NC/A20/86

October 22, 1986

Dear Arvindji,

Thank you very much for your letter of 9.10.86, enclosing copies of photographs and a letter from Shri Krishnakumar of KSSP. I am thrilled.

It is heartening to know of the tremendous response "Khel Khel Mein" has generated and is generating.

Re: Translations into different languages (I would much rather have 'adaptations'):

What happens if, two, three or more organisations decide to bring out versions in any one language? It will cause lots of confusion.

ii) What if these language versions come out as priced publications?

iii) Will all these language versions carry the credit lines, as they appear in the Hindi original?

iv) Will all these versions acknowledge the fact they have been adapted/translated from the original Hindi Edition?

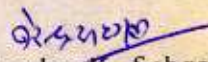
v) Will all these agencies seek permission from the publishers (i.e. NCSTC, Eklavya) to bring out other language versions?

Re: Serialising of articles from "Khel Khel Mein" in regional language and other magazines: basically there is no objection, provided they all acknowledge the source (writer & publisher).

Are you coming this side in the near future? I hope we can meet soon.

With warm personal regards,

Yours sincerely,


(Narender K. Sehgal)
ph: 652318

Shri Arvind Gupta,
201/D6, Yogi Park,
12A Karegaon Park,
POONA - 411001.

15th October, 1986

Dear Arvind,

Many thanks for your post card. I am glad to hear you are enjoying the Cowen book.

Your booklet has been translated - there is some delay in receipt of the drawings.

I met Prof. C.N.R. Rao who is very interested in Swastika text book production and he has invited me to a meeting at the weekend here.

I talked to Greta Panamony and as she mentioned an order of 10,000 copies minimum to sell at Rs 4 - 5 each Vinod feels the A.P. Government must be contacted. We are looking into this.

File 5

If some Naisan can be built up so future publications are automatically translated & published here that would be a very good thing.

You had sent me the Bole & Vaghari Field Guide published by O.E. Peters in 1977. What is the title of the Pina. Muchajie book? I have obtained "Some Beautiful Indian Trees".

by Blatter & Midland published by BNHS. For Rs 40 - most reasonable and informative as it is a hard cover edition. I have seen Polanin's book in the Mountaineering Institute at Tehri Garhwal - very beautiful - perhaps I would try for it next year - as I ordered a lovely set of Thine life guide.

Have you seen the
 books recently? You will be
 happy to know these books and
 the cover are being repeatedly
 consulted. I was happy to see
 our teachers reading them.
 Recently I gave Class III children
 Centipedes for recognizing 10
 trees. There were painted free
 by the poets which had printed
 our Annual Report as a
 goodwill gesture. When our
 botanical garden comes up
 we shall try to educate the
 children to recognize new varieties
 Have painted in your
 previous booklets to our
 Science Teachers at the school.

With love to you all
 from both of us. Grijay
 the challenges!
 Yours affectionately
 Grijay

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER CARD



Mr Brind Gupta
 201-D/6 Yogi Park
 12A Koregaon Park,
 POONA

पिन PIN 411001

दीर्घा से THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रहिए NO ENCLOSURES ALLOWED
 पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
 प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

Director's Res: No-R/ Colony
 Uppal Road, Hyderabad

पिन PIN 500007



अस्पर्शता ईश्वर और मानवता
 के प्रति अपराध है।
 UNTOUCHABILITY IS A CRIME
 AGAINST GOD AND MAN

यहाँ कागज को खोलने के लिए

P.V. SOWANI
"Anandi"
Savitranand Society
Anand Nagar
PUNE 411051
D/ 22nd Oct. 1986

Dear Shri Arvind Gupta,

Thank you for your letter of the 7th Oct. I am sorry for the delay in replying.

Your letter was placed before the meeting of the Executive Committee of the Marathi Vidnyān Parishad, Pune Vibhāg, and I am happy to inform you that the executive committee has wholeheartedly agreed to undertake the work of Marathi translation of your booklet 'kheh kheh Me'. The booklet was very much liked and appreciated by all the members. It must be made clear, however, that the Marathi Vidnyān Parishad, Pune Vibhāg, will not be able to bear the cost of printing the Marathi translation. The publication will have to be financed by some agency such as the National Council for Science and Technology or the D.S.T, or the I.I.E etc.

I am quite eager to see the book got translated into Marathi (Myself and Dr. V.D. Bokkar will undertake the work of translation, if it is entrusted to the Marathi Vidnyān Parishad). You are therefore requested to please contact Dr. V.D. Bokkar c/o M.A.C.S. (Phone No 56357)

Thanking you and Wishing you and your family a very happy Diwali and a prosperous and productive New Samvatsar.

Yours Sincerely
P.V. SOWANI

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Shri Arvind Gupta,
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park,
PUNE

पिन PIN

4 1 1 0 0 1

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

Prabhakar Sowani
'Anandi' Savitanand Soc.
ANANDNAGAR
PUNE

पिन PIN

4 1 1 0 5 1

दूसरा मोड़ SECOND FOLD



Dr. (Mrs.) Mehar Aziz
M. D.

Lecturer

Dept. of Pathology,

J. N. M. C.,

A. M. U., Aligarh-202001

Dated 27/11/86

Telephone - 7332.

My dear Arvind.

I was very happy to receive your letter. It is really two decades since we left school. I still remember the farewell party. I realize now, that our school - teachers and nuns have done a lot for us. The school years were important landmarks, which will be reflected in many facets of our life and career.

I left Bareilly in 1970 after Intermediate from G. G. I. C.

I passed M. B. B. S from Lady Hardinge Medical College, Delhi in 1974, followed by Internship and Housejob from the same institution.

I got married in 1976. you will notice the change in name. My husband's name is Jamal Aziz, and he has done Ph. D. Zoology (Ecology & Environmental Sciences).

See, how much news I have given you! Please give my fondest regards to your wife; (Still chg to mention her in your letter), and your kids. My children were thrilled with your book!!!
With regards & best wishes. Mehar.

He is Reader in University of Delhi.
We have our permanent home in Aligarh, where I am living with my in-laws.
My son is 9¹/₂ yrs old, and my daughter is 8 yrs old now. I finished my M.D (Pathology) from J.N. Medical College Aligarh in 1981.
I am a permanent Lecturer in JNMC since June 1982.

Nutan Singh is now Mrs. Nutan Tomar, she lives in Jaipur and is very happy, as she has always been full of laughter and gaiety. She took over Arts from Science and did very well after that. She got her MA in English Literature from Bareilly, the same year I had passed my MBBS.

Ram Kapoor is also a doctor. M.D (Medicine) from Maulana Azad Medical College, Delhi. He has a flourishing practice in Gaziabad. Pranod Chaturvedi has a job in State Bank of India (Bareilly). Shehla Abbas (still unmarried) is teaching in Central School (Mathura). Zareen Abbas is married and is in England.

You will be sad to know that Meera Chand passed away in 1972. She had just taken a penicillin injection at Military Hospital ^{for a small boil on toe;} Delhi when she had penicillin anaphylaxis. She left behind two sons who are 16 yrs & 14 yrs old now. They were brought up by Didi.

Anil Bordia
Additional Secretary
Tel. No.: 386451

Ministry of Human Resource
Development
(Department of Education)
Shastri Bhawan
New Delhi

30 December 1986.

Dear Arvind,

Many thanks for your letter dated 8.11.1986 and the second copy of खेत खेत हैं। . I had received a copy of this book earlier also and I had sent a reply. I have greatly liked this little book, which seems to me to be a real contribution to the methods of teaching of science to children. Recently, Mr. SH Umemoto and Ms. Geeta Verma of UNICEF had met me and I suggested to them that this book should be translated into all the regional languages along with Preparation for Understanding. I told them that if UNICEF can do this we would like to send a copy of each book to all the primary and middle schools and also give a personal copy to all the teachers during the proposed training programme next summer.

I have had a talk with Binoy Vohra, Executive Secretary, INSA about Indira Gandhi Memorial Award for Popularisation of Science. He said that a very large number of applications have been received and had been referred to Language specialists. He said he cannot say whether you have a chance to get the Award.

*
12/2/87
You will recall that I had had a talk with you about SANDHAN and the large programme of primary education and non-formal education through village youth.* That programme has now got off to a start. SANDHAN has been provided funds to set up a core faculty. Gautam Bhattacharya will function as the whole-time Coordinator. I expect that Prof. HN Gupta will take long leave from NCERT to join this programme. We are all very keen that you also associate yourself with this project, on whole-time basis if possible. If you and your family do decide to move to Jaipur it should be possible to find a satisfactory job for your wife also. If your moving to Jaipur is just not possible, please let me know what arrangement can be made for your association with this programme.

With warm regards,

Yours sincerely,

(Anil Bordia)

I shall
separately send
you cheque for Kosambi's
Science Society & Peace.

A.

Shri Arvind Gupta

144 January 1986

My dear Arvind,

Many thanks for the lovely book. To children I give my heart, which I have found most rewarding reading. The author's philosophy of life was so uplifting and fine.

I have put deep thanks a notice to our school which was copied from a magazine just listing the negative approaches in black such as

● If a child is criticized he will condemn" etc. then followed by a list of positive approaches in red - I hope it will have an impact.

I have persecuted slayers of banyan-like cultures and are are filling up the canyons roads with them - they look so colourful. We also collect seeds of as many trees as possible and keep planting.

In this way we save a lot and can use ^{the} money for rare and expensive varieties

I hope you booklet get published soon. Once the government starts then they can automatically be processed - the main thing is the start. Vinod is fantastically busy and has to travel a lot. He is very supportive of the

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Mr Arvind Gupta

201 - D/6 YOGI PARK

12-A KOREGAON PARK

POONA

पिन PIN

4 1 1 0 0 1

प्रीम फोल्ड थर्ड फोल्ड

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

Director's Res: NGR Colony

Upper Road, Hyderabad

पिन PIN

5 0 0 0 0 7



अस्पर्शयता ईश्वर और मानवता
के प्रति अपराध है।

UNTOUCHABILITY IS A CRIME
AGAINST GOD AND MAN

Canopus beautification scheme
We have been putting water
lilies and lotuses in the pools
and they look really lovely.
The bird population has
greatly increased and
diversified lately and I
am glad to count some twenty
varieties near the house.

I shall close wishing

you and your family a
very Happy New Year and
love from us all

Yours,

Gay!

3-5-820-Hyderguda
Hyderabad 500029.
Jan. 11. 1987.

Dear Arvindji,

Please pardon my delay in writing to you and in thanking you for the copies of खेत खेत ~~खेत~~, which you so kindly sent me. It really was very good of you to have remembered and taken the trouble. I was away from Hyderabad for a long time and quite preoccupied with illnesses and other problems within the family. But I also was able to ~~go and~~ attend a Teacher training Course organized by Orient Longman in Madras - in

ials that are so easily
available and so inexpensive

The book (खेल खेल में) has
been produced beautifully —
the instructions are clear
and simple; the diagrams
are also clear and simple.
You've done a beautiful
job (though I'm not
surprised that you have).
Congratulations and
good wishes.

Yours with love,
Shant.

138000
20000
21000
79000

21 दिसम्बर

प्रिय बरविन्द,

बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। इस बीच मैंने अपनी किताब के संश्लेषी संस्करण की 12 प्रति भेजी थी। मिली? कोसाम्बी की पुस्तकें मिल ही नहीं गईं, पढ़ भी ली गईं। इस दौरान उनकी Culture & Civilization in Ancient India के कई हिस्से भी पढ़े। बहुत अच्छे थे। उनकी कृति उनके लेखन में अलंकारी है। हार्डि से वचन में पढ़ने से काफी ऊर्जा कम नष्ट होने से बच गई होगी। ठाकुर चन्द्रावर (ठांती/सविज्ञानी) पर जो लोग पढ़ रहा था। पचास वर्ष से विश्वविद्यालय ने उनसे कभी कुछ 'कहने' को नहीं कहा। इतना बड़ा ऐसा है जो व्यक्तिगत ऊर्जा को जमा करता, बचने ही नहीं देता। अनिल ठाकुर दूर-से पढ़ा करते हैं। बीस वर्ष लफ्फा हिचे। विश्व की जगह बनी हुई है, बाप भी ही दूरने को बाध। दिमाग आती भी दूरने के कगार पर खड़ी है। कुछ हो सकेगा, इसकी जागरूकी है। 'एकलव्य' के बारे में सुचना लब्ध है। विनोद साहनी पुस्तकालय के लिये उद्ग्रीव हैं; जहाँ ही 'चक्रमय' को मिल भी सकेगा। मैं भी संस्था के कार्यक्रम में कोई ठान्ति नहीं करता। सामाजिक व्यवस्था की छठी की किताब भेजी थी, इसी बात है कि कहते नहीं बनता।

इस सब के बीच, बहुत बड़े अच्छे बात बताओ। इस व्यवस्था को अपनी आवश्यकता नहीं है, यह तो पहले से मालूम था, पर व्यवस्था के साथ-जितने इस अपनी आवश्यकता बताये लगी जा सकती है, यह ठहरेपान भी बाधक गायब रहने लगा है। हाँ, कहानी लिखने में जरूर अभी श्रम है। इस बीच तुम्हारी पर 12 पत्र लिखा है। अपने राष्ट्रीय व्यापार तैयार पर रहा है। दो जगह से सामान्य बातें हैं — कोई तो रोज़ है। बाप से इन्हें पुस्तक रूप में छपाई की भी इच्छा है।

12 दिसम्बर
OUP से एमिल मैजिल की The Teaching of Reading (1944) का संक्षिप्त संस्करण (संश्लेष) को मिला। संग्रहीत किताब है। उस वर्ष में सेग की उसे भी पहचान ली थी पर इलाज? कोन करेगा?
Xerox सुविधा (हंगा की) 2 1/2 दिमी दूर है। कई चीज़ें संजो

ਕੀ ਪਤਾ ਹੈ। ਜੇਕੀ ਹੀ ਰਿਸ਼ੀ ਹੋ ਖਰਾਬ ਕਾਰਨ ਮਨੁੱਖੀ।
ਪਤ ਕੀ ਪਤੀਮਾ ਆ,
ਸ਼ਰਮੀ,
ਭੋਜਨ

Anil Bordia
Additional Secretary

Ministry of Human Resource
Development
Department of Education
Shastri Bhavan
New Delhi

5 February 1987

Dear Arvind,

I am thankful for your letter dated 23 January.

I am delighted to note that you may be going to Tilonia in mid-March. I have had a talk with Goutam and have suggested him that he may discuss with you the possibility of your continuing association with SANDHAN. They should also try to send half of the Siksha Karmis of the Silora Block for your training at SWRC.

Regarding the English translation of the Divaswapna I will make enquiries from people regarding its publication and will let you know.

I am sending herewith a crossed draft of Rs.52/- being the cost of four copies of Kosanbhi's Science, Society and Peace.

With warm regards,

Yours sincerely,

(Anil Bordia)

Shri Arvind Gupta
201/D6, Yogi Park
12A, Koregaon Park
Poona-411001

TEACHERS CENTRE

SPRINGDALES SCHOOL, PUSA ROAD, NEW DELHI-110005 ☐ PHONE : 583248

10th Feb. 1987

Mr. Arvind Gupta,
46, Vidyanagar,
509 Area, Air Force
POONA 411 032.

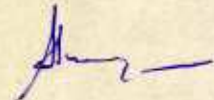
Dear Arvind,

I was very happy to receive your booklet "स्वैल स्वैल मै" - more than that I was happy also to get your address. You may remember that we met at the workshop organised at Dr. Choudhry's institute sometime ago. I was really fascinated by the work you had done. I was in the USA for a year & returned only last June. I spent a week with my nephew Joey(Vijaya Raghavan), your classmate at Kanpur. We were talking about you.

I understand from your address that you have shifted to Poona. I'm sure you must be doing very useful work there. Do keep in touch - When you come to Delhi next, you must get in touch with me. I would love to have you conduct a workshop for our teachers/students on your wonderful techniques.

God Bless you.

Yours sincerely,



S. Sundararajan

School Ph. 583248
Residence Ph:601192

Neen Arvind,

May thanks for your letter. Did you meet Professor Deshpande of the Audio-Visual Unit Poona University. He was very keen to see what you have been doing.

Gita Ramani came up and I put her in touch with the person at Vinod's office who is handling the file with the dept of Science and Technology of the State Government.

I am not surprised that you were disappointed with the proceedings of the Science Academy - Vinod never goes as he says the delegates just want a holiday!

I am glad you were able to see Kail Bagh. I saw it some twelve years ago but I would much prefer to see it now when I can recognize some of the trees.

This week we planted our first two trees in the Botanical garden - one *Ficus hirta* and one *Ficus krishnae* both lovely trees. I am very fond of the *Ficus* family. I have had quite a lot of success in propagating trees here and am now making seeds for saplings of all varieties. I want to have a lot of the pink *Cassias* and *Chorisia* here. We have ordered two *Magnolia grandifloras* and if they take I will be thrilled as so far I have not seen a single one in Hyderabad. I have also got *Alexandrian laurel* - *Calophyllum inophyllum* which has similar glossy leaves. It is to



sheds all over campus. As I write the scent of
Hani Shuyan a good 18 metres away drifts
through the window and I know I must put many
more of these. I love the perfume of magnolias and
gardenias and jasmine. Scent is equally important
when planning a garden I feel.

I have read extracts from John Holt's book
How Children learn. If only the teacher can become
like a child then so much would be achieved -
how difficult it is to sit still; how much
the outdoors beckon; how exciting the world is
and cater for it at that level but no they
so often try to feed in knowledge in the
dullest possible way until the small soul
loses all zest for life and most of potential
creativity goes for ever - a tragic waste.
But education must be of the sort that
keeps the zest for life alive. As Auden wrote
in old age "and the world can still astonish"
is what should be aimed for.

Vinod is in Delhi - he is out a lot these
days so I am trying to start writing again
something I did regularly once.

I have been reading a book Vinod borrowed
from a friend "You are the World" by Krishnamurti
(Mentor books) If you ever see this you must read
it - it is a marvellous book with so much love
and compassion. He seems like another Buddha
He tells us everything is within and we have
the key in our hands

Little things spread out. I see that
quite a few people are taking interest in gardens
now and even the little children spend

how much nature attracts them by carefully watering
Saplings and joining in Tree Rejuvenation contests.

Some of the Russian books as you probably
know are very good for young children 'Why is
water wet' is a good example. The Japanese are
also producing beautiful Maths books.

The art classes are still going on every
Saturday and some of the kids have won prizes
in city competitions which spurs them on to
greater efforts

The computer centre foundations
have been laid. The contractors have promised
it will be ready by October. The setting
is very attractive and I like Sumet Ghosh's
design.

Everyone is fine at CCMB. Mr
Pandit came one evening and heard everyone
amazed with his conquering tricks - he is
very good.

Well I shall close now trusting all
is well and your work is progressing

With love to you & your family

from
Eupl and Vinod.

Let us celebrate Ulzana & her achievements, for she's worth celebrating! When she arrived in California early this year, the songs of thousands of birds greeted her in the green fields & purple mountains of Sonoma where she put up at the place of Mary Anne A —, an Irish Emma Goldmanite, middling in years. Behind Ulzana lay 2 months of Travelling in the remote wilds of Kenya's Kikuyu & Maasai country including a hitchhiking to Lake Victoria, ~~then~~ ~~for~~ 3 months in England with the ~~Wages~~ ^{the} Wages for Housework Campaign ^{the} CND & the British coalminers, & a couple of winter ^{in NY, NY} moons² with Viet vets & American Indian activists ~~is~~ ~~was~~ including the Guatemalan Maya guerrilla leader Rigoberta Menchu. Ahead of her lay Turtle Island — the American Indian name for N. America. Ulzana planned to ~~open~~ ^{unlock} its doors & enter the Turtle's heart.

The first obstacle came from unexpectedly close quarters. Mary Anne was her best & contact person, but she was also something neither of us knew — a patient of Mancini's disease (or some such name), which ~~has~~ involves a harsh sound going on & on inside your head, sending you up the wall towards things like suicide. It also involves other terrible tendencies. Like an inability to focus ~~stay~~ ^{too} long on something, & vindictiveness & jealousy.

Neither of us could know about this, for Mary Anne was someone who'd begun corresponding with me after reading a piece by me in a Toronto mag. I'd written her among others hoping to aid Ulzana's efforts ~~in~~ ^{in N. America} towards sisterhood. She'd come up with initiative to encourage Ulzana in her travels — until Ulzana finally turned up at her doorstep in Sonoma.

With access to Ulzana's address list of friendships & contacts ^{that} my Ma & I had carefully formed over years, Mary Anne started sending off hate-Ulzana mail to ^{all} the contacts, raising questions like: Who's this woman? What does she want here? What are her motives? She hung up midway when an ^{old} friend phoned to try & help Ulzana & instead she rang up Ulzana's Elder Sis in England with her hate message. Much of Ulzana's precious sum of money also disappeared during her stay with Mary Anne, i.e.

me was Ulzana's emblem on Little Isle. No place to go, no shelter to find, in an alien, selfish society - whoever she went to meet would run away from her, warned by Mary Anne. On one of those days she stood alone at a bus stop, headed towards Sonoma. An Ethiopian woman came to the stand & stood there, staring at her. Then the woman said, 'How beautiful you are! What foods do you eat, to get such a lovely complexion?' (I must tell you specially that her stay with her Big Sis all over England had had considerable effect on her health & beauty.) And then the woman asked, 'Are you a spiritual person? You must be, for you attract everybody near you.' And she offered her two of the fruit she was carrying.

'I took the fruit', Ulzana later wrote ^{me}. 'And I felt ~~within~~ once again that great Power I know is in me. My sadness vanished, who knows where! And once again I plunged joyously into the work.'

Ulzana went to San Francisco. She was the Wild Woman Who Walks - the name given her in her travels about this time. '... ^{all} ~~at~~ a sudden', she wrote a niece, 'it is as if my body has become a fountain of light, penetrating all... restrictions & flowing ahead with the force of the Victoria Falls. Countless women & men ~~are~~ of distinct nations are beseeching to me. "Come, come," they say, or "Stay, stay", or "Let's go, let's go". Their friendship will take me where, even I do not know.'

In San Francisco, Mary Anne's strychnine was at work. Everyone shunned & avoided her. 'I have never avoided difficulties', she wrote ^{me} at this time, 'I have welcomed their challenge & enjoyed them. We are extraordinary people, & must face extraordinary dangers. But what fear? Victory shall certainly be ours.'

Thru the International House & in Oakland, she met a beautiful, highspirited young woman, Tonía Luisa, who arranged for her to speak on India's women at the New College of California. For 3 hours Ulzana spoke & sang, tracing her story from the Vedas down thru the peasant

2 original idea - ~~was~~ ~~in the~~ ~~area~~ ~~in the~~ ~~first~~
new contribution ~~in the~~ ~~area~~ ~~in the~~ ~~first~~
Bay (SF) area in years. Phone calls requesting fresh
speaking engagements poured in. ^{- & she gave them public talks too.} An interview with her
was broadcast by The People's Radio throughout the USA,
& she appeared on TV too. The Old Wives' Bookstore in
a flyer welcomed her appearance in the Bay area.
And a new group of evergreen Indian women called
Lahevee - The Wave - formed around her in Berkeley.

That is how Ulzana broke Mary Anne's curse
& opened her first door on Turtle Island: the door to sisterhood.
With ground under her feet now, she turned ^{toward} ~~to~~ the door
to Turtle Island itself - The ~~Way~~ ^{Way} to Native America. The
American Indian Movement's (AIM)'s global wing, the Inter-
national Indian Treaty Council (IITC), had an office in San
Francisco, but they paid her no mind. AIM's bloody trail of
victory & selfsacrifice thru the 1970s had raised the
IITC to observer status in the UN, with access to funds &
international support & even foreign govt. backing - who
has the time for an unknown Indian woman?

So be it. Ulzana went to seek the entrance to the
Way to the place where it was ~~the~~ ^{the} hottest ^{the} touch -
the tense, war- & - uranium scarred Dakota (Sioux)
Indian reservations in S. Dakota, where firefights
between AIM warriors asserting national sovereignty
& U.S. armed forces ^{could} ~~might~~ ^{might} break out any moment.

S. Dakota is America's S. Africa & hottest ^{struggle} Indian zone,
but right then - March '86 ^{two} ~~the~~ coldest too. As Ulzana
landed in Minneapolis, Minnesota after a flight across
the Pacific, the snowflakes had begun falling & airways
were closing down all flights to S. Dakota where
blizzards ~~were~~ ~~raging~~ ^{were} ^{raging} ^{raging}. She drove thru the night
in a car with ~~the~~ ^{the} Sioux - Comanche family of her host,
Charon Asetoyer, Health Director of Dakota Women of All
Red Nations (WARN). Morning found her in a new world
- snow-covered plains stretching far into the horizon
dotted with trees, native cottages & village dogs. - The shore
of Lake Andes on the Yankton Sioux Rez. The People's land

beautifull women sunk in the Fetal Alcoholic Syndrome (FAS) with ~~these~~ deformed, retarded kids looking half their ^{actual} age, Native communities far from ^{becoming} sovereign, with their defenders, the AIM & WARM warriors, dependent on external funds & divided against themselves. Charon, Comanche woman of the People whose last war chief Quanah the Eagle stared at Ulzana from ~~all photos~~ with unseeing vision struck eyes from old photos on Charon's ~~own~~ apartment walls - Charon was intent only on how to procure funds, & changing as the weather on the question of whether to let Ulzana ~~be~~ do work among the People.

Then they went to a ^{WARN} meeting at Porcupine. Strong & astonishing WARN sisters ~~were~~ ^{came} there. They unleashed a storm of criticism ~~on~~ on Charon, ~~changing her style~~ ^{accusing} her of a dictatorial workstyle, arbitrary spending of funds, & a European ~~attitude~~ attitude towards 3d. World women. Devastated by the mass critiques, Charon subsequently improved much in her ways.

One night, returning home, she asked Ulzana, 'Can you hear it?' Then Ulzana heard. Drums beating. A tipi glowing with light stood among the trees, & the drumbeats came from within. The tent flap blew aside as longhaired figures came & went. Drums - the Turtle's heart throbbing - communing with the night.

She sat with the People on the blankets inside the tipi, feasting, her name announced in honor ^{amidst the wild singing & drumming}. She mixed with the proud & majestic Sioux, beaded & feathered, at their powwow or tribal festival, ^{she} & loved them. She saw that, thru the blizzard of Europeanisation, the old ways still seeded & emerged like blades of green grass coming up every spring.

One night, two Indian men took her to the deserted plain in Vermillion, to the sweat lodge of the medicine woman Alice New Holy Blue Legs. The Blue Legs drew her to her bosom. And when Ulzana undressed & crept into the darkness of that tiny lodge made of white willow wands & sat on the carpet of sage, & rubbed the smoke of red bark tobacco into her body, the door of Turtle Island opened for her, & she was inside the entire universe teeming with the spirit of all living things. White steam hissed up from glowing red-hot rocks, scorching her body ^{& mind} & burning away all that is impure, Earth-Power entering her pores, the hut vibrating

cluded with a song to Wakan Tanka, the Great Mystery, & the expression of harmony, 'Mitakuye-yasi' (All my relations). It was an hour after midnight when she came out & scrubbed herself dry with sage leaves.

Everyday they prayed together, everybody praying for her.

She travelled over that Sitting Bull country, writing, making contacts, speaking on Indian's women at the University of S Dakota. In ^{late} April, ^{the} Moon when The Geese Lay Eggs, she returned to San Francisco & threw herself with recharged energy into woman-work, giving talks, appearing with her own women's song group on stage at various places, her recorded songs spreading across the land. At Nairobi she'd participated in the formation of the Indigenous Women's Network spearheaded by the N. American Indians; now the IITC, the International Indian Treaty Council, officially invited her Tribal research group to their 11th. global conference in Big Mountain, Arizona. 'Spring is in the air. There are flowers, flowers everywhere,' she wrote. 'My life circle is flowing with a tremendous surge.' She sang: 'Come death-conquering hope, destroyer of apathy! ~~Let's~~ Away with weeping! Let all bonds evode!'

There was yet a third door for her to open. It had opened to her, once, on a solitary birdsong noon ^{back} in 1982, & she'd seen a vision of a new world, not far away at all, where she could go without human memories following. She anticipated a

Sister would ~~be~~ come & lead her there by the hand, a Sister she only knew as the Mysterious One, 'without clothing & without desires'. She planned to go there soon, while life is ^{still} young & strong.

May was her busiest month ^{of work} so far. 'The Power of the walk shall make the way,' she sang. On the night of May 25, ~~at~~ in her sleep, the Mysterious One came & embraced her in Sisterhood. There was a sudden jolt of surprise, & as they plunged together the torrent was icy, life's last icemelt - & then she was in Outer Ocean, swimming submerged with powerful strokes, & as she emerged into the light & liberation, it was a new world all around, the Milky Way stretched out ahead. And the Wild Woman who walks struck out on a journey even greater than the ones she'd known.



Uzana was cremated in San Francisco in early June, in the

a mighty warrior, Eagle Robe, mourned Ulzana, fasting
4 suns, singing & offering flesh from her arms in the
ancient Way. And when the 4 days had passed, the ~~Sage~~
Sundancer emerged with her bodily light, her arms raw -
& her spirit strong.



Once, about '82, i'd asked Ulzana, in a moment of my own
quiet desperation: 'How do you get thru to people? How
do you ^{reach them &} move them?' And she'd said, gracefully & firmly, -
'Be free of ~~all~~ illusions, & all doors will open.'



Last time i saw Ulzana was in the car driving her to the
airport en route to Nairobi. Apart from the chauffeur
there was only the two of us in the car. She almost
never spoke or turned to me, but gazed straight ahead,
aquiline profile firm on the way ahead; Nairobi, & the
women of the world. When she got down at the airport
she walked inside unhesitating & erect, without a word
of parting or farewell, leaving me at the entrance -
i couldn't enter due to special security at that time.
After waiting alone about an hour; turned back.



A 1982 poem by her, translated for all of you by me.

I Am Alive -

this is my name.

my house is everywhere & permanent

the wind instructed me & brought me

to you

i feel the touch of feathers in the pale clouds
& bow before the Sun
who spies on me

thru the folds in his light blue blanket.
in a soft whirlwind

i quivered & saw Earth in many ways,

& when in wonder my lips parted

i have drawn in deep the smell of rich, red humus.

that aroma lingered across many days

the drink i have tasted

waters of a crystal stream

~~that~~ i alone have seen.



- son of her soft belly
child of her dreams

A. Gupta
27 Moore Avenue
Calcutta - 40

BOOK POST

Arvind Gupta
46, Vidyanagar
509 Area, Air Force
PUNE 4110 032

Xeroxed
Matter



Dear Arvind:

Meant to invite you long ago to this. by the time Max Mueller Bh - got there ready, it seemed too late. Then your friend Vishva Gangadharan said, you were in a tight spot with a family Crisis - a sick brother - I think. Anyway she came to this, very sweetly, although she was hardpressed for time. Dr. Panikkar has been very busy with several Peace Movements in the Europe + America and was a key speaker with Dr Raja Raman (The Nuclear Manipulator) - on a Space Seminar in Delhi. He spoke in a practical way of what mankind was heading for, - if we did not start a revolution to dis- mantle the industrial Civilisation and the machination of economics - & the powers that be - too much Specialisation, etc.

Wonder how to animate and mobilise this - the pollution, the greed, the power-groups in govt - etc. all seem too big - to dismantle. Communes of a kind have come up and broken apart! Do you know of 'Siddhartha' and his 'Pipal Tree' project in Bangalore? There are 2500 organisations anyway in India working against the "network" of "systems" that throttle freedom of the individual and Society: I have not sent you a New Year Card Greeting. This also wishes you, your wife and family, endeavours for 1987.

m also tried to a domestic Crisis - my mother has been with me - after 2 mths of being dozed with radiation - for lung cancer (tumour). with no body else - no slave - I am so busy - nothing gets done though I function like a 6-handed - Durga here.

March 15th
for Dr. K. Kumar
out C.D.E.C.

Feb. 7/87.
Bombay

Dear Arvind:

Thank you for your letter, and the interesting picture. Was that birdy walking on wheels? I did enjoy Weisenbaum's article. I've heard him being interviewed on T.V. along with Wald of Harvard. Who is going to heed his warning here with our PM going right ahead into the moronic Computer age! I feel so stupid when just about every young and middle aged thing is going into Computer Programming or Computer Science. Kids tell me its the only area where the job-market is open! In the West - its War industry. Weisenbaum was saying that all the high-paid jobs are in the weapons industry - he admitted his son for dropping out for a lower-pay job that was not war-oriented. People like me will soon starve & be homeless, not being able to conform to the established society. Pity that your Xeroxing comes so faint. I would like to Xerox this and send it to others - but I doubt if it will come out, being so faint! Can't they add more ink to their great machine! Did I tell you that your friend S. Khanna had phoned from Powai - would like to meet him some day. Must have some earth shattering Seminars with you, him, Dr. K. Kumar - Frances etc

My mother has been out of the hospital since Dec 4th and ^{is} with me - it's why I'm so tied down, coping with all her missing - etc. Have Oxygen handy in the house as she nearly went ~~off~~ once. How is your mother?

Dr. Krishna Kumar is coming for some TIFR Seminar - mid-March. He is going to spend Sunday at our CDE-Center - now housed in Doctor Hec. opp: Jaslok Hospital - (March 15) He'll stay the day with Roshan Mundkur's family. My house has no comforts ~~these~~ serious patients in it just now. Can you come? We've invited Principals of Schools & Teacher Training Colleges - Don't know if they will respond! Come if you can OK. Phone me - 8125531 or Mrs. Punja - 8225569. All the best. (Pune's Manning's has good books doesn't it?) Sincerely, Dina Guha
 fd stuff there unavailable in Bombay.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Arvind Gupta.
 201/D6 - Yogi Park
 12-A, - Koregaon Park
 PUNE
 Maharashtra
 पिन 411001

पिन कोड प्रथम फोल्ड

एन क्लोजर के साथ लिखें NO ENCLOSURES ALLOWED
 पत्र में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
 भेजक का नाम और पता : - SENDER'S NAME AND ADDRESS :-

DINA GUHA
 1/4 Ben Nevis Rd
 B. Deoni Rd
 पिन 400035
 Bombay



पिन कोड द्वितीय फोल्ड

मराठी विज्ञान परिषद

"विज्ञान भवन", वि. ना. पुरव मार्ग, शिव-चुनामट्टी, मुंबई-400 022.
दूरध्वनी : 524714 • 526268

Feb 27, 1987

Ref No MVP 04/III

Shri Arwind Guptaji

congratulations for writing
a beautiful booklet by name "Khele
Khele me" in Hindi. We liked it
very much. It creates enough
provocations among students.

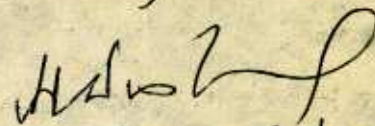
Prof B.M. Wagaonkar, our
President, tried to get it published
thru' Granthali a library readers
movement group. Secretary of Granthali
wrote me that they can publish
this booklet in Marathi provided they
get 'Negatives' of all diagrams.
Could you please write to me whether
or you can spare Negatives/~~stocks~~

Still one point has to be clarified whether the Marathi version of booklet is to be done by us or by Granthali or through any of your friends. But we will clarify it soon.

In the meantime please write to us about Negatives.

Thanking You,

Truly Yours


(A.P. Deshpande)
Hon Sec.

का प्रभाव बनाता है। इसलिए बोधिया को
देती।

बोधू, श्री लॉरेन्स का नहीं है - जगद
माया में ऐसी कल्पना नहीं है कि हाथी
मैत्री दिनांक की छोटी छपाई पढ़
सकें। अतः इसे लक्ष्य पर जारी जारी
बनाकर भेज दें ताकि श्री तत्त्वलीप
प्रभाव हो जायेगी।

My friend Mr. Leary का हिंदी
रुग्ण नहीं कि जगद की प्रभावना
है?

इसे दो लोग छपे हैं - प्रोफेसर के
(4 मई) का हिंदी में - पर यह
लोग उस माध्यम का हिंदी है जिसे
हाथ यह पुस्तक है - इसका 7 वें अध्याय
हाथ लेना है जगद की प्रभावना पर।
मैं भिन्न ता शब्द देता। दुनिया की
दोनों दिनांकों का खराब जल्दी ही शब्द
होता है। मुझसे वो भी कहवाए है।
मैंने,
कृष्ण

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

अरविन्द गुप्ता
201/D6 योंगी पार्क
12-A कोरेगाव पार्क
पूना 411 001

पिन PIN

THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS

पिन PIN



अस्पृश्यता ईश्वर और मा
के प्रति अपराध है।
UNTOUCHABILITY IS A
AGAINST GOD AND MAN

Shanta Rameshwar Rao

235146

Office: ~~235146~~

Tel:

Res : 235070

3-5-820, HYDERGUDA,
HYDERABAD - 500 001.

Arvind Gupta
201/D6 Yogi Park,
12A Koregaon Park.
Poona 411001.

Dear Arvindji,

I was away from Hyderabad for three weeks and came back on the 10th to find ~~your~~ the typescript of the translation of Diva Swapna as well as the book Toto-Chan. I am happy that you enjoyed reading Toto-Chan. I myself have not been able to go beyond a few pages owing to frequent interruptions, but I hope to read the book through during this vacation.

I shall also go through Shri Pathak's English translation of Diva Swapna and according to your suggestion, make any small changes that I might feel are necessary. Naturally any changes made would have to be approved by the

writer. After ~~has~~ going through the
Typescript I shall submit it to
the publisher.

I shall be in Poona from May 18
to about May 24. My address in Poona
is c/o Shri Kday Puthli, 4 A Satēsh St.,
Prabhat Road, Lane 15, Poona 411004.
I shall not have access to a telephone
where I stay - but I shall try and
come over and meet you at the
address you have given - if I may.
Please drop me a post-card addressed
to the above address.

With regards & love,
Shanta

My dear David, I read out your letter to all friends associated with our upcoming programme and you should be able to guess what spirit it infused into all of us.

For me personally the real firecracker was the recent (2) acquisition of IIE - when I read what they had received, my heart suddenly leapt like a green-tinted fish. Of late, I've really been high on Illich & Jan's sister's introduction to 'After Deathening What'.

I discovered only two months ago that J-Frank & Illich were close friends. That discovery too was accompanied by a miniature cardiac arrest.

Of course, I'm rising to the bait. Elavaya didn't nibble at it. I'm so recent in this field that my ears reddened at

There's no much to talk about that even inkblots will give up their ghost. But do keep them alive until it is possible to meet and talk ourselves to death. Do forgive my rhetoric, please. Much love to you all. 1971

What is your working equation with IIE - I mean in terms of your access to the library?


The thought of my own ignorance. I really need to study & travel and meet kindred spirits both in eastern and neophyte zones. At the same time sporadic activities in K.B. mobile programme need to be kept alive. Literally thousands of ideas about the children's poetically neofetor - about how it can become a real process - float across my mind.

If you've received your recent review you'll notice that most of these are two papers - one from the village-based mobile programme & the other (a 1st International) from Siparia Centre. Narendra was happy to hear that you like the paper. In fact I met him this morning & handed you letter for him.

But letters are REAL EVENTS for us you know.

Yes, Iona should be on my immediate schedule, I guess. In fact even

Radhana was planning a visit. I was desperately hoping the film appreciation course in the Institute coincides with my visit. There are about 30 films I'm yearning to see with my blood and marrow. After confirming the course dates, I think I will make up my mind about Pune. Is it possible for you to suggest a place where Radhana & I can ~~spend~~ stay for a month?

31st Oct, even if it is impossible for you to join the K.B. programme & Sunita's deputation is more or less finalised, can you think in terms of spending a few months in K.B.? I mean let the workshop be a relaxed, prolonged affair rather than a one-week ~~on~~ hectic, tightly packed thing. In fact you could all come & stay for a few weeks ~~when~~ during Sunita's holidays. I'm not planning for you, I hope. I'm only suggesting wishfully. August - September - October - anything that suits the three of you. Can you write to me when all this is possible?  try and tempt Viju, too, for joining you in the workshop.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Arvind Gupta

201/26, Yogi Park

12A Koregaon Park
Pune

पिन PIN

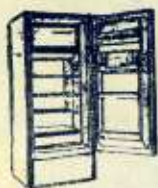
4 1 1 0

तीसरा फोड़ THIRD FOLD

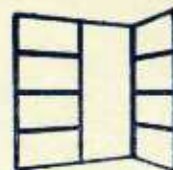
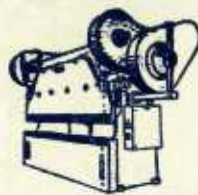
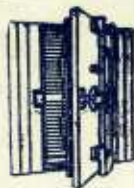
इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS

पिन PIN

4 1 1 0



Godrej[®]



GODREJ & BOYCE MFG. CO. PVT. LTD., PIROJSHANAGAR, VIKHROLI, BOMBAY-400 079.

EST.: 1897 PHONE: 582621-586361 (For Purchase Office 582857 also) GRAMS: (WORKS) GODREJVIKH

TELEX: 011-71502 (GOVK)

(MARKETING DEPT.) GODREJMARK

Reg. Office: Godrej Bhavan, Home Street, Bombay-400 001.

Ref. No. UPS and UPPS

Date 29-4-87

Please address your reply to UDAYACHAL PRIMARY AND PRE-PRIMARY SCHOOL

Mr. Arvind Gupta,
201/D6, Yogi Park,
Ra Koregaon Park,
Poona - 411 001.

Dear Arvind Gupta,

I was pleased to receive your letter.

May I fix 27th June (Saturday) for your talk at 9.00 a.m.
I will be happy to show you round the school on Friday 26th
June. Will you stay with us on 26th? Thank you very much
for sending the Marathi translation. I would be interested in
the original book in English. It is easier for me to read.
We will pay for the same, please send it to me. No, I have
not read Divakhapan but I'll certainly do so.

Do send me your bio-data too, so that I can introduce
you to our teachers.

Thanking you.

With warm regards

Yours sincerely,
For GODREJ & Boyce Mfg. Co. Pvt. Ltd.,

Shirin Choksey

(Miss S. Choksey)
PRINCIPAL

science age

SA/1633/87

5 May 1987

Mr Arvind Gupta
46 Vidyanagar,
509, Area Air Force,
POONA - 411 032

Dear Arvind,

Thanks for the letters and the contributions.

The piece on structures will make a very interesting beginning for the series on engineering problems, concepts, etc. I hope you can send us at least three more instalments within, say, about 15 days. There is a possibility of repetition -- matchstick mecano, too, goes into structures like triangles, tetrahedrons etc. So please try to avoid such repetition, unless something new -- experiments, for example -- is involved.

About soap bubbles and cranes, I don't think Science Age reproduces book extracts. So I don't think we can use these pieces.

With regards,

Yours sincerely,



(REX D'ROZARIO)



Lean Around.

That's the official letter. This is personal.
We might just take you up on the offer
to spend some time in Pune. The problem is
that Alekha is expecting (July) and so
we can't go anywhere. So why don't you
come to Bombay sometime? If you do,
bring 'soap bubbles' with you. Or else xerox
it cheaply & send a copy to me VPP.
I want to read it. I also want to get
it translated for Chakmak (can you do
it?) It's perfect for that magazine.
Here people don't seem to distinguish between
content and method, so the stress is more
on information giving than on doing and
learning. My love to all at home -
your wife Sunita & daughter (what's her
name?) What are you doing nowadays?
Working? or still free-lancing? Do keep in
touch. I might just go back to Bhopal
since I've had nothing but trouble (at my job)
since coming to LA Age. Lots of love.

LEX

3-5-820 Hyderguda,
Hyderabad 500029
Feb. 15. 1987.

Dear Arwindji,

I got your letter many days ago and also the xeroxed copy of the review of the book 'Totto-Chan'. Please forgive me for the delay in answering - I enjoyed your letter (as usual) and felt very grateful indeed that I am able to keep up a contact with you - a contact I greatly value and cherish. I was very happy to hear about Diwaswapna, and I hope I shall be able to acquire copies of it.

By a most remarkable coincidence, shortly after I got your letter and the review of 'Totto-Chan', a friend from the USA sent me the copy of the book. Naturally I was delighted. As usual, however I have still not been able to read the book, because other members of my household pounced on it and began to read it. I am at present reading a book called "City of Joy" about the enormous Shum Anand Nagar in Calcutta. It is rather a depressing book and I would like to read it through quickly and start off on something happier. I wonder if you have read it.

I think I wrote to you about attending a course in Training the Trainer in Madras. It was an exhilarating 6 weeks and I learnt many many things. I am now attending a course at the Bharatiya Vidya Bhavan for Teachers of Primary & Preprimary Classes. So far I have felt rather lukewarm about it. ^{maybe because I am comparing} I hope with others who took the Madras Course with me I shall be able to have a worthwhile workshop on language teaching soon. With good wishes,
Shantak Rao

भारतीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Shri Harmand Gupta,
201-D/6 Yogi Park
12 A Koregaon Park
PUNE

पिन PIN 411001

पिन को धीरे से फोड़ें

इस पत्र के भीतर कुछ न रखें NO ENCLOSURES ALLOWED

पत्र में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

S. Rameshwar Rao

3-5-820 Hyderabad

Hyderabad
पिन PIN 500029 A.S.

असह्य श्रमता ईश्वर और मानवता
के प्रति अपराध है।

UNTOUCHABILITY IS A CRIME
AGAINST GOD AND MAN



२६ अप्रैल '८७

प्रिय काविन्द माई,

आपकी १६ की चिठी मिली। इस लोग, एक हाथ से मुझे यूँ ही छोड़
इस पक्ष तनाव कुछ कम है पर अभी क्या होगा, यह नहीं पता।
बहुत मोन के साथ मुनील को सहोदर से दारिद्र्य कराया था।
हाथी का पैसा ही जी-जी कलिय का रहा था, और तब
बहुत था एक था - कहीं पीठ से उलट होना, कहीं ठोके से;
नीचे तो गापन ही थी। पूरी कार्य-वाहियाँ हुईं। KG के लिये
मी ३५/- की पाठ्यपुस्तकें थीं। (KG से दारिद्र्य ही हमलिये
काम था कि छोटे बच्चे क्या। से दारिद्र्य के तब यह
अभिमान गोब्यालिय नहीं होत, कुछ भित्तन था सक्ती थी।)
उसे कुछ से तायन के लिये ८००/- था।

पैसा ही लूटन की तरह था हुआ। अन्धकार गीत कोहली
लेने में तो मुनील को आश्रित की तब यह तरह अगाध ले
गईं जीते परी पर परी बूझ की गई हो। बेटे। से अब
। कजे लगे पहुँचा तो दोर गाड़ी गुल गुली थी। मुनील ने
कहली है ही कपन था पर मेरा लगन था जो बच्चे
हमलिये था है। पाठ्यपुस्तक से ही bat mat hat लिये
वा, १-१-१-१-१, २-२-२-२-२ लिये वा ही था। बच्चे
कहाही नहीं, कहित नहीं। दीप ने मुझे बिराम कपन कि वह
किताब लिखा हुआ है; मुझे क्या-क्या तुल्य मिलाना पड़ेगा।
१० कारियाँ भी लीली होनी, प्रतीति ले जानी ...

जबकि, तब मुनील वापस आए नहीं जायेगा। तब चले किने
माती से या हिसाब से तब किताब पढ़े या गीत
से या छिटा तब से मजना पड़े। से उभे प्रतीति पड़ी
से कोहलिय हवा वा विमान नहीं होत है। इस मल
तब प्रतीति से मरे यह बेटे होना।

०००

पूरा पान्दी ने Teacher सापन की कही है। तब यह वपन विमान

Indraje Bhattacha
Apr 9, 1987.

Dear Arvind Gupta,

(MS)

Let me introduce myself quickly. I'm Ignace, working at present in Kichare Bhattacha.

Have been at sea in K.B. from July '86 up to Apr. 8, 1987. Part of the Mobile Library Programme of K.B. got extremely interested in developing children's activities in mobile programme. Started building up, along with them - notes a reference library of children's literature - with special, emphasis on digging out ancient gems - summing up about among crowding, out-of-print books & magazines of veteran publishers, now dead or scarce behind many shelves.

Just got a letter from Vign - a friend you & I have in common. Have been after his blood to get us in touch with dynamic people for our programme. He himself is one, I know. There are others in K.B. & Eklauga who keep mentioning you at the drop of a hat. You know what I'm getting at, of course. Workshop, yes, but also much more than that. CAN YOU CONSIDER WORKING IN K.B. MOBILE LIBRARY

AND CHILDREN'S ACTIVITY PROGRAMME) A meeting knocked up proposal is being sent to the Min. of Education. The text of the proposal has a discussing tentativeness about it, because the person who wrote it is devoted to a career of lifelong (creative) doubt about everything she undertakes.

Also, if your wife is in a position to get a UIC fellowship to work here, don't you think we could all get into an extremely adventurous possibility of developing the programme towards an 'open school'? A lot is possible as long as Bodalia is in chair. I'm being told I ought to co-ordinate this programme - and the thought gives me butterflies in the stomach. So you must, that a letter like this, can ever be put into K.B. file? If the answer is no, second question is an easy guess.

Vign's address to me that you have agreed to conduct a workshop in K.B. So I suggest (convenient to you?) Please write details about the kind of workshop close to your heart.

As soon as the proposal is ready, I'll send you a copy of it. This text is a thing that ought to be subverted at the earliest opportunity. Throw the text to dinosaurs, but do, please consider the possibility of spending a minimum of 2 years in the programme.

I have a feeling that K.B.'s malaise is almost over. Things have started looking more cheerful of late. Mira's Fertility Awareness Programme is also shaping up well. Sadhana & Anil are studying 'literacy'. Piparia Centre has got full bloodedly into children's activities. I only hope you get a copy of the fortnightly newspaper written by children. There are 2 at present. Village edition & Piparia edition.

This letter is a 'scream' of consciousness. So please turn it over in your mind & drop me a quick line. Also give convenient workshop dates & your requirements of structuring it.
Love — Teji Grover.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

Arvind Gupta

201-3/6, Yogi Park

12A Koregaon Park

PUNE

पिन PIN

411

तीसरा फोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURE
घते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS

Teji Grover, Kis

P.O. Bankheri, Dist

पिन PIN

46199



३ जून १९८७

प्रिय अरविन्द भाई, सन्नेह वन्दे!

आपकी समय से आपका कोई लगाव नहीं है - आशा है, आप सब अच्छी तरह होंगे? इन दिनों क्या चल रहा है। लगता है, कई दिनों से आपका बम्बई काना भी नहीं हुआ है।

मेरा काम यहां ठीक चल रहा है। पिछले महीने मैं इन्दौर रहा - २६ को ही वापस लौटा हूँ। इन्दौर से जोडाल भी गया था - विनोद से मिलने - लेकिन वहां कोई मिल नहीं पाया। विनोद होशिंगनगर गए हैं।

मार्च में अखिल जेली स्कूल गया था - वहां की गतिविधियों को देखने। आपकी अच्छा कबुल रहा। वहीं पता चला कि नील बाग में David Hornbush का जो स्कूल चल रहा था - उस बन्द कर दिया है - और अखिल जेली फाउंडेशन को सौंप दिया गया है। वे लोग नील बाग में क्या किया जा सकता है - इस बारे में चर्चा करने के लिए मुझे नील बाग भी ले गये थे। नील बाग स्कूल की पूर्व प्रमिसरी और वहां के सुन्दर वातावरण के परिप्रेक्ष्य में मैंने कुछ सुझाव दिए थे - नील बाग में एक Design School शुरू करने के लिए। सुझाव की रिपोर्ट की एक xerox copy मैं साथ में भेज रहा हूँ। बाद में इस विषय में सीनियर प्रमुख जयकर से व्यक्तिगत चर्चा भी हुई थी।

नील बाग स्कूल के प्रविष्ट और वहां की गतिविधियों की नई दिशाओं के बारे में चर्चा करने के लिए, वे लोग जुलाई २५-२६ को एक वर्कशॉप नील बाग में करना चाहते हैं। मैंने Mr. Radhika Herzberger - जो अखिल जेली स्कूल की Director of Studies हैं - को आपका नाम/काम से परिचित है - को निरवा है कि इस वर्कशॉप के लिए अगर आपको भी आमंत्रित किया जा सके तो अच्छा है। वे आपको लिखेंगी। आशा है, आप समय निकाल कर वहां पहुंच सकेंगे।

एक दाश दिसम्बर तक राजस्थान में राजलक्ष्मी में रहेंगे। वे
वहां लेकर स्व गिजुआई की पुस्तकों में से कुनी हुई १५ पुस्तकों
का अनुवाद करवा कर उनका प्रकाशन गिजुआई ग्रंथ-माला के रूप
में करवा रहे हैं। ३ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अगर आप
उन्हें लिखना चाहें - तो उनका पता है:

श्री काशिंगाथ निवेदी
८० श्री कुन्दन मल जी रोड
पो० राजलक्ष्मी ३३१ ८०२
जिला - चुरू राजस्थान.

जनवरी-फरवरी में मैंने दूरी की 'बाल वैज्ञानिक' की डिजाइन करके
कोशल भेजी थी। इस माह के अन्त तक छपना चाहिए।

शेख कुशल। अच्छे आने का कार्यक्रम आने तो अवश्य
सूचना मिलेगी।

आपका,

अनुराग सिंह

June 21, 1987

Dear Arvind,

I've just come back from
Bhopal after having been
disappointed at you not being there
on June 16 & 17. ~~xxx~~ Vijn told
me you'd be there for sure. So I
thought it would be a good idea to
meet you and fix the workshop in
August.

Anyway, I'm writing in a
hurry to ask you whether Aug.
16-23 will be alright for the
workshop. We're also inviting a
wonderful clay artist from
Bharat Chavan, whose student
criticism of B.B.'s politics is

you that I'm not a demanding guest and will be as
unobtrusive as possible. Don't pressure yourself, if you
think it's not possible. We'll see. — • ~~an~~ alternatives

an added attraction for us.
Being an insider, his insights
are valuable. His name is
Devilal Lalidai. You'll like
him. He's modest and values
anonymity like you.
Radhara Rao dropped her
plans of visiting Pune. I'm not
too sure myself, tho' I'm going
to try getting outta here around
the end of June. K.B.'s EC
meet on 25, 26, 27 is going to
be a grand historical event,
and I'll look on like a footnote
at what has been rolled over &
above me. I try to lift my

if you can spare a corner of your own
house for 15 days. Since I'm uncertain I can't
ask if it's all right or not because
I'm a suggestion that I should ask you

spirit here, but feel rather isolated in what I want to do here. I'm hoping like hell that Krishna Kumar finally says yes to school. Yes, by the way, can you read my comments on the mobile library proposal since you? I'm not too happy with it but it had to done quickly for the funding agencies. I'm trying to read a little these days, but there are far too many hurdles & distractions.

Do let me know whatever etc etc. I've mentioned above. At times I feel I'm pathologically enthusiastic about my programs. At times that I'm a fraud.

अन्तर्राष्ट्रीय एअर कार्ड
INLAND LETTER CARD

TELEPHONE EX 497

R. V. Kelkar
Karanjakar Nivas.
Opp. Paud Phata Police Chakr
Paud Phata. PUNE-36



Prasad Gupta

20/1/76 'yogi' Park
12A Kasegaon Park

Pune

पिन 411001

दोम का तृतीय फोल्ड

इस पर के भीतर कुछ न लिखें NO ENCLOSURES ALLOWED
यहाँ से पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS : —

For 10 B's P.O. Bankhead H. had

पिन 46119920

Ravindra Kestkar
St. Xavier Inst. of Engg.
Mahim, Bombay-16.
455937.



Near Bus Stop.
12/460 MHB colony.
(Fisher men's colony)
Mahim; B'bay-16.

दोम का दूसरा फोल्ड

F-14/15, 1st Floor
Connaught Place
New Delhi-110001
Phones 3316357, 3315801-4
Telex 31-61245 INTO IN
Cable: LIVMEDIA, New Delhi

June 26, 1987

Mr. Arvind Gupta
201-D/6 Yogi Park
12-A Koregaon Park
Poona-411001

Dear Arvind,

I'm so sorry not to have responded to your card, or made use of your book before this. Frankly, your books were 'lost'. There was panic when I asked for them, and they couldn't be found. Nothing is ever 'lost' here, though - only put away too safely to find. Yesterday your books were traced to the library. I shall now get down to reading them and look for what we could use in Target, perhaps in our special birthday issue.

The interview with David Horsburgh was very badly edited, I'm afraid, but he was such a fine man and original thinker that his philosophy and practical wisdom does come through. I shall send you a photocopy of the interview shortly.

Sorry for being such a bad correspondent.

Best wishes,

Yours sincerely,



Rosalind M. Wilson
Magazine Editor

Prof. P. KRISHNA, F. N. A.
RECTOR

3908

Phone : 62717 Off.
53818 Res.

RAJGHAT EDUCATION CENTRE

RAJGHAT FORT
VARANASI - 221001 (U. P.)

June 3 1987

Dear Arvind,

I am sorry for the delay in responding to your letter of 9th May, but I was away on a vacation. Thank you for suggesting the name of Sri R.N.Kapoor to whom I have sent the enclosed letter.

Unfortunately Rajesh Dalal is not joining us. His wife does not wish to leave Rishi Valley. Thank you for sending me your booklet entitled 'Khel Khel Mein' which I found very interesting. I will pass it on to the Headmistress of our Junior School who may find it useful for the children. Please do drop in and see me whenever you can come and visit Varanasi.

We have a Rural Centre at Rajghat with a village Primary School, a small 30-bed hospital, a dairy with 40 jersey cows and an agricultural training centre. For all of these I am looking for a dedicated person who would be interested in devoting himself to working for the neighbouring villages. If you know of anyone who would be suitable, please do suggest.

With best wishes,

Yours sincerely,

Krishna
(P.Krishna)

Encl: Copy of letter addressed
to Sri R.N.Kapoor.

Mr. Arvind Gupta
201/D6, Yogi Park
12A, Koregaon Park
Poona-411001

Prof. P. KRISHNA F. N. A.
RECTOR

Grams : KFI RAJGHAT
62717 Off.
Phone : 53818 Res.
54304 Res.

RAJGHAT EDUCATION CENTRE
KRISHNAMURTI FOUNDATION INDIA

RAJGHAT FORT
VARANASI - 221001 (U. P.)

June 3 1987

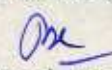
Dear Mr. Kapoor,

We are interested in installing solar water heaters for producing hot water for our students in winter. We have about 500 students resident on the campus in twelve different buildings. Can you advise me whom I should contact for this purpose in our country and what would be the approximate cost of such a project.

We also have a Rural Centre with an Agricultural School, a small hospital, a village primary school and a dairy. If you think we can usefully utilize solar energy for our Rural Centre, I would be very interested in receiving your advice.

With best regards,

Yours sincerely,


(P. Krishna)

Sri R.N.Kapoor
Director
Institute of Engineering & Rural
Technology
(Allahabad Polytechnic)
26, Chatham Lines
Allahabad-211004

Copy to:

Mr. Arvind Gupta
201/D6, Yogi Park
12A, Koregaon Park
Poona-411001

Srijana School,
Pallipadu, Indukurpet Tq
Nellore Dist, AP 524314
13th June '87

Dear Arvind,

We were delighted to receive your book and letter. I had indeed heard of you and had asked for your address but it couldn't be found till day I met Shanta and Lulu when last in Hyderabad.

You're of course welcome to come and see us and work with the children if you'd like to. I should warn you that we lead a rather uncomfortable life by city standards and don't have servants. But if you're prepared to brave carrying water, biting the odd scorpion and being very quiet of an evening, we'd love to have you here for a short or long stay.

It's a primary school as you probably know and is now in Telugu medium, though the older children can manage pretty well in English (I teach through English all the time). Do let us know when you're coming, as I'm occasionally away, and I'll then give you details of how to reach the village.

I'll send you a copy of our three newsletters - very poorly typed and hand out but we're hoping to do better next time.

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



Avinid Gupta,
201/D6 Yogi Park,
12A, Koregaon Park,
Poona
Maharashtra PIN 411010

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता : — SENDER'S NAME AND ADDRESS

पिन PIN



असृश्यता ईश्वर और मान
के प्रति अपराध है।
TRANSCENDENTALISM IS A
AGAINST GOD AND MAN



पहला मोड़ FIRST FOLD

Though none of us is very hot in Hindi
we've already got some good ideas for your
book. The valve tube is obviously of a value
I'd never imagined - we'll be getting some on
Saturday and we've already tried out the
meaning of m/s with old match boxes and a
jar - worked nicely.

Do try and come. People who are really
interested in changing primary education are
also very hard to find.

Warm regards from us both,
Eleanor.

Vidyaranya High School
For Boys and Girls

Green Gates, Saifabad, HYDERABAD 500 004. A.P.

Phone : 35146

Date June 10.
'87.

My dear Arvindji,

I re-read 'Dwaswapna' translated by Chitranjan Bhatak, and worked on it quite industriously until I was satisfied. I then sent it to the office of Orient Longman to get their opinion. I rang up a little while ago and was immensely pleased that the editor who went through it felt that it was very very worth publishing. She has told me she will have it re-typed and forwarded to the other offices. I think we could now sit back for a while and wait.

School opened this morning and I am back in the office. Do keep me informed about your doings and your whereabouts. i.e. Please keep in touch.

It was nice to meet
you in Poona.

Yours
Shanta.

I was just going to post a letter to you when yours arrived. I wish I was slightly more healthy and cheerful to write a long, full letter to my heart's content. I'm suffering from malaria & the medicine is having horrendous side-effects.

I'm sorry to hear that you can't make it for the workshop. I couldn't make it to Pune because of the chaos at K.B. This institution seems to be in a permanent state of emergency. We've all been through hell lately & Anil's personal crisis and instability coupled with his notion that the organization will go to dogs once he quits, has made some of us extremely unhappy. Besides, my reading is that Anil hates dissent, independence and outspokenness. He does have the reputation of being a banyan tree, but now even the hanging roots are desperate to uproot the tiniest sapling that stirs up from the empty soil below. I'm writing in fever, anger and anguish. Frankly, I think, Anil will not let the institution continue once he quits. His games are revolting, yet totally transparent. His overweening ambition ^{and} of emerging as a powerful political leader in the Bhopal agitation has been thwarted completely. "Scientific understanding of human beings," he used to say, "can help build up a movement." But all of us know that if one doesn't have the sensitivity to dip beneath the surface, alternative rhetoric doesn't have much of a chance. That this blah-blah about scientific understanding is not only vulgar but insults pity, beauty, pain and life. These window-dressings are nauseating. Frills, icing and nothing below. Irrationality is welcome, but in the garb of rationality, it disgusts violently. What irritates most of all is that the moment you begin to express what you think and feel, you come up against a wall. Absolutely impermeable. It stares at your words and silences. Even if you are being asked about your personal life, it is done in

is a questionnaire (sp?) - either you fill it or you don't

Anyway, all this won't go into letters however feverish they are. I don't think K.B. will survive. The giant has been tottering for years & has killed the potential of marvellous people. I haven't heard from Krishna Kumar either - I mean he has written but not about the school. I think even if Anil quits gracefully and stops playing his petty power games, K.B. will have to fight his shadow for years. I'm also interested in working with KK but can't we think of another place? As far as the 'mobile' proposal is concerned, it will be scaled down considerably. I've also realized that the present scale is insane. But I've lost the will to work, caught up as I have been in K.B. style bickering & crises. It's like falling into a drum of coaltar. I want to run for life and peace. I can't waste my life fighting someone like Anil. In any case, I've come to the conclusion that it is dangerous to work in close proximity with somebody whose dream has been corrupted. Specious and pernicious logic is the tattered trail behind the sour dream. Ugh!! It hurts to write on stuff like this.

I'm leaving for Delhi and Chandigarh tomorrow. If you write to me at Vijn's add. I'll get my mail. I'll be North until ~~the middle~~ of ~~the~~ Aug. 5 or thereabouts. I don't know when we all can meet - I mean KK, Vijn, you & other kindred souls - to feel alive once again. I can't live in too much negativity for too long. And this place is made of heartbreaking (pseudo-scientific) stuff. I'll meet KK on July 18. I remind him of school again. I hope his eyes light up again & we can all have some hope, brother. Fever and peace. To

7. Golf links

Khar.

Bombay 52

12.5.88

Dear Anvind,

How are you? I am so happy that I know you. It is a delight to know people who share, and you share so beautifully.

Long back you had sent to me Totto-clan. I treasured it and to-day since I've finished reading I am going to treasure it more than gold. It was a delightful book, so alive, so vibrant, truly a dream come true. I am trying to make my school like that. I fervently hope I'll succeed. Truly, there is so much to do, and so far to go. I wish my school was small.

It is that personal touch that makes so much of a difference. It's a great achievement to be able to touch so many lives positively, as Kobayashi did. And to think of it so many people can influence others but how often is it positive? How often is it for the benefit of both?

I am glad I know people like you. Reflecting on it makes me happy. When you come to Bombay, do come and visit us. It will be wonderful to have you with us for a few hours.

Looking forward to meeting you

Shirin. Chawsey.

Telephone :
Telegram : SCIENCTECH
Telex : { 61805-DST IN
 { 66096-DST IN

राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
संचार परिषद् (सचिवालय)
NATIONAL COUNCIL FOR
SCIENCE & TECHNOLOGY
COMMUNICATION
(SECRETARIAT)



भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

BY SPEED-POST

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
टेक्नोलॉजी भवन
नया मेहरोली मार्ग
नई दिल्ली-110016
DEPARTMENT OF
SCIENCE & TECHNOLOGY
Technology Bhawan
New Mehrauli Road
New Delhi-110016

Dr Narender K. Sehgal
Director (NCSTC)

February 19, 1988.

Phone: 65 23 18

DO NO. CO/IN/J03/87.

Dear Shri Arvind Gupta,

I am happy to be able to convey that you have been selected as the winner for the NCSTC's *inaugural Jawaharlal Nehru Award for Science Popularisation among Children* on a recommendation of a Selection Committee for this award which picked you for the honour out of the nominations received. This award carries a prize of Rs 50,000/-, a bronze medal and a scroll.

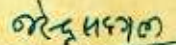
The award will be given away on February 28, 1988 (the National Science Day) in New Delhi.

This is also to invite you to please be present on the occasion in New Delhi to receive the award and deliver a talk (of around 15-20 minutes) on a relevant topic of your choice. If possible, please send a transcript of your talk as soon as possible. A copy of the programme proposed for the National Science Day Function in New Delhi is enclosed for your kind information.

I look forward to receiving your confirmation and to seeing you in Delhi.

With kind regards,

Yours sincerely,


(Narender K. Sehgal) 19/2

Shri Arvind Gupta,
201-D/6 Yogi Park,
12-A, Koregaon Park,
Poona-411001.

dear Arvind,

Must begin by saying how very sorry I am to have delayed so long in replying to your most interesting letter of 22/10. I received it on 27/10 and marked it for reply on 1/11! But all last month I was more overwhelmed than ever (if such a thing can ever be) and I just could not give your project the attention it so thoroughly deserves. The most I could have done was to send you a bare acknowledgment, but even this I did not find the time to do. The knockout blow to my work was given by a cassette recording program to which I agreed to lend my voice, on the supposition that it would take not more than 12 hours or so, and only 2 or 3 days. Instead, it went on and on for days, consuming so many hours of my time that at last I had to say I would do no more; and now I am rid of it and able to turn to many other neglected matters. After this explanation and deep apology, let me get down to your letter.

Glad to know the workshop was going so well that you could get home; yes, it is good to renew touch with one's origins.

Am delighted to know that you will bring out an illustrated booklet on your toys and experiments and working models. Clear drawings will be much better than a lot of words. By now you have probably completed the text and drawings, so that anything I may say about the Tipper Truck model ~~will~~ will now come too late; I am sorry for this, because I do have one or two criticisms. Well, let me give them for whatever little use they may be. Here in brief are my criticisms:-

Let the drawings be numbered in order of the action to be taken. Let the order be: (1) Truck Body, (2) Cutting the driver's cabin with hole for the lever, (3) Cutting the Tipper body, (4) Assembly of all the above (shown in the centre of your page, half enclosed by the curved line), (5) and (6) How the lever works.

Problem: how do you prevent the Tipper body from slipping off at the back of the truck? Somehow you must anchor it to the rear end of the truck body. If the small length of match-stick shown in No. 3 above is intended for this purpose, I don't think it will be effective. But what else is the intended use of the small piece of match-stick?

Suggestion: could we copy the Nut-and-bolt technique by a short length of babhul thorn (the thick end of it) and a small lump of babhul gum, perhaps after splitting the inserted end?

I don't like your proposed use of 5-paise coins, simply because at present there is such a serious shortage of small coins. I have myself made letters for these word games (which are excellent and highly educative) by cutting out identical pieces of white cardboard and writing the letters on each piece. If white cardboard cannot easily be had, you can get brown cardboard (tailors always have pieces to spare) and sticking white paper on to it.

Bamboo ball-point pens are a wizard idea.

How I wish I could get the time to try out your experiments for myself. That leisure will not come soon, but I hope it will come one day in my lifetime. With this inflation, I have to spend far too much of my time simply in trying to earn enough for our daily food.

Very glad to know that Sunita is with you; that is after all her proper place. I hope she soon learned how to cycle, without too many spills and bruises. Yes, cycling is a skill that everyone should know. So is swimming!

Now here is a suggestion which I hope will be found helpful. A public spirited friend of mine gives me Rs50 (fifty) every month to be spent on helping poor young persons, or any deserving purpose. I would like to send you the Rs.50 for this present month, to help you a little with the costs of your booklet. You may send me a few copies in return, if you wish; or otherwise just use the money to help finance this most excellent project.

How shall I send it to you? By cheque, or MO? Let me have your Bank account No. if you want a cheque. If a MO, I suppose the address



सचिव
SECRETARY

D.O.No. 263/BS/90

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शिक्षा विभाग
भारत सरकार
नई दिल्ली - ११०००१
MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
DEPARTMENT OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI

May 8, 1990

Dear Shri Anand Sarup,

I am thankful for your letter No.F.CM-3/90/300 dated May 7, 1990, regarding **Divasvapna**.

I was delighted to see this publication, although had been hearing about its coming for a long long time. Its popularisation has to be among teachers and hence bringing it out in Hindi and other Indian languages has to receive due attention of NBT.

With kind regards,


Yours sincerely,


(Anil Bordia)

Shri Anand Sarup,
Chairman,
National Book Trust, India,
A 5, Green Park,
NEW DELHI-110 016

Copy to:

1. Professor Krishan^a Kumar, Central Institute of Education
University of Delhi, Delhi.
- ✓ 2. Shri Arvind Gupta, 46, Vidyanagar, 509 Area Air
Force, Poona-400 032.


(Anil Bordia)

DEPARTMENT OF EDUCATION

(Central Institute of Education)

University of Delhi,

33, Chhatra Marg,

DELHI-110007



March 18

Dear Sudarshan,

As I started to do the work I think your script needs I discovered that there is far more than I can afford to do. So I decided to write a letter instead, indicating what the problems are. I'm sorry to know that there's very little time left to make any changes. If this is so, much of what I have to say will be pointless, for if you wish to take my advice you'll have to delay the final version by several weeks. Basically I ~~don't~~ feel that you've not yet established contact with your reader, and that's the aim you ought to have in your book. On p. 2 of the preface you say that your first audience is 'children'. If that's true your descriptions of nearly all the toys will have to be simpler and printed in bolder type. By simple English I mean a diction with no three-syllable words. And no long sentences. Take the paper/leaf flute for example. Your audience is the child who hasn't made this thing on his own. Most likely this is the kind of child who hasn't been using his hands and fingers at all for making or breaking things. Or else we shouldn't have this simple toy described in the book at all. I feel there's a large population of children in our society who haven't been encouraged to use their hands, eyes, at all to make things. Now that kind of child needs help. He/she won't know what you're talking about if you say: 'Glue the ends of the paper such that the pipe does not open out. Now flatten one end of the pipe, preferably the one with a smaller diameter.' I'm underlining the words that the child, even his teacher, is unlikely to understand, but the overall syntax itself is too complicated. It needs to be straightforward, and each step in ~~the~~ your instructions needs to be written out as a separate sentence, printed as a separate, numbered line in bold print. Now I know this is going to be time consuming process to alter all texts in this direction. I'm afraid the unattractive, rather unsmooth nature of your present texts will seriously detract from your beautiful effort and limit its success. In the flute text you next say that the leaf flute is 'quite similar to the paper flute, both in construction and play'. The quality of sound is different though.' Once again you're assuming that the child knows what you're talking about. From the child's point of view, folding a peepal leaf into a funnel cannot be the same as folding a paper. Your diagram for the leaf flute is confusing. Where do the folds on the pipe come from if the rolling has been straight all the way through? The initial picture shows that the leaf is being rolled straight down, not slightly sideways.

This is just an example. I feel you need to show this work to an editor or sit down with one yourself or by yourself you can tidy up the English with slow, patient work. You could take out the sentence that comes at the start of many descriptions with tedious repetitiveness, that 'it is a simple/fascinating toy to ~~be~~ construct etc. For your audience, every toy is fascinating, and its simple nature can be appreciated only after it has been successfully made. You've to be careful that you don't pre-empt the challenge of making the toy carefully/.

As I said to you, I am worried about your preface. It doesn't read smoothly. Who are the 'academicians' and 'pedagogues' you're talking about? Why not use your preface to say clearly what kind of toys

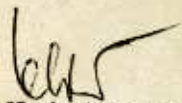
2.

these are, why they are important to ~~talk~~ ~~xxx~~ be presented this way today, and how you went about collecting these designs? ~~if~~ I don't feel your present preface will be read at all. The list you make ~~about~~ of the scientific principles on p. 5 that can be learnt from these toys is quite impressive. But how does a reader go about linking this list with individual toys? You've not given any clues in your descriptions ~~what~~ ~~the~~ ~~ans~~ how to find answers to your 'find out' questions (by the way, ~~find~~ 'find' and 'out' are separate words, not combined). I doubt if most children and teachers will be able to make further experiments or investigations to find out what you want them to. Perhaps you should provide some brief statement of the problems and principles involved in a toy, on the page facing the description, or ~~making~~ ~~it~~ on the back of it.

Excuse me if I sound harsh. Your brother is coming in 10 minutes, so I couldn't polish my own language!

With regards and best wishes,

Sincerely,



Krishna Kumar



Cham: 282836 / 282893 (line)
282910 (PBA)

Res: 393948

Box 282887

My dear Anand,

15.20/6/96

It seems such a long time since we met. I tried to get in touch with you on the phone, but your number seems to have changed. So dear friend how are you?

A couple of days ago I was in Ahmedabad with an old friend from IIM, Sunil Handa. Already firmly in the pharmaceutical sector and packaging industry, he now set to working on a school through his B. K. V. Educational Foundation. The school, being set up by 4 IIM MBAs after quitting their private sector jobs and studying education round the world, promise to be quite something. And the person who would find it exciting and would have as much to contribute, is you. So I strongly recommend your association.

With this letter, I'm enclosing
a mass of papers detailing the
Beklaya foundation.

What a lovely little
charm, "the man who loved
planting trees." It might be
made a compulsory feat. or perhaps
no for that word compulsion
goes against the spirit of the
book. And thanks to little
Cho-cho san, my own little
'Cho-cho san' (Devika) would find
a better, happier world.

Looking forward to meeting
you, and I hope soon.
With love to dear Dulani
and regards to the family.

Ranjana Duvosli
DIG (VK)
1 Gokhale Marg
Lucknow - 226001.

Yours affectionately
Ranjana

Rs. would you believe I'm off tea! It's
been about 2 months now.
Ranjana

June 18. 1996.

Dear Aawindji,

It's a long time since we've met or written to each other. I hope you and your family are well and all is well with you.

Our School has re-opened after the summer holidays — and there's a lot of coming and going and seeming confusion. It always happens every year. I'm now 72 and beginning to feel my age and wishing I could rest my weary head! But just now I'm going along with the current. I'm glad that I've been able to get a very good band of Teachers. School is an on-going thing, isn't it?

If you at all have time to drop a line and tell me about yourself. How is the Blackboard Book coming along?

With much love

Shanta.

3-5-820 Hyderabad,
Hyderabad 50029 (Rameshwar Rao.)

Dear Arvind,

July 14 '95

Thanks for your letters from Pune! But

since our departure schedule kept changing from minute to minute I couldn't answer your letters. We're finally leaving on July 23 with no stopover at Delhi.

Since we're nearly moving home we're suspending short jaunts for the time being. I was in Delhi in the first week of this month but the pollution levels in the city were so high that I fell ill immediately. I was hoping to finish all my work in Delhi but I managed to meet only Krishna Kumar.

Rudran & I decided to pass on the translation of TC. To a friend of ours who will be able to do a better job of it. He's a very fine poet & knows 30 (or 40) languages. TC needs that kind of a style.

Our language may be turned out to be too close to Hindi. I've seen the first few pages he has done. I'll write to Arvind Kumar about this new arrangement. I'll see the final draft of course, before submitting it to NET, for my own satisfaction.

Rudran's plans about Ujjain are still uncertain due to the continuing ill-health of his father. On second thoughts our earlier decision about taking him along with us to Ujjain does not seem so desirable. Without any solid support structures, the combination of a new city & concern about an ailing parent's health can be a tall order. So Rudran may try free-living with more determination & stay on in Utd. if he can manage financially. I may have to settle for a meagre honorarium in Ujjain instead of a salary. But I hope to manage. There is a possibility that Rudran will handle a CSS project in Delhi. I'll send you my Ujjain add. as soon as I acquire one - so you can all come & spend some time with me there (if you like the idea). I'm already crazy about that city except that the prospect of living alone there is very depressing.

I'm happy to hear about The Man Who Planted Trees. I have a feeling that it is as great a classic as One Straw considering the impact it can have. ~~an~~ Deeply spiritual experience. Like Fukuoka, this man too seems to be engulfed in a mystery akin to Nature's. If the messages of these two books were to be absorbed by the readers, why - the world could live after all! The end-of-the-world images in which we are steeped all the time need precisely these antidotes - otherwise the guilt of anthropocentrism remains a soul-killing emotion.

How is Dulari doing on her two-wheelers? Did Sadhana contact you for a reading list for Cheenu? He badly needs one. I wish there was some way he could benefit from the rich treasures you^{all} have. I'm only hoping his trip to Australia has enlarged his library & that he's high on the travel.

More later - Love to Sunita & Dulari, Teji

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

ARVIND GUPTA

C-7/167 S.D.

New Delhi

पिन PIN

1 1

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS

Teji, 142/36 A
(H)

पिन PIN

1 6 0 0 3



यहाँ पत्र काटने के लिए TO OPEN CUT HERE

Richard Bach

Box 1089, Woodway, WA 98020
Phone: 206/546-9498 FAX 206/546-0273

June 13, 1996

Binaya Krushna Pattanayak
Baramunda, Bhubaneswar
Orissa, India

Dear Mr. Pattanayak:

Thank you for your kind words for *Jonathan Livingston Seagull*! I'm delighted that you have found him, and that his adventures can be an inspiration to you and your friends.

Please consider this letter to be your permission and authorization to translate the book into the Oriya language, provided:

That there be no more than 1,000 copies printed for sale on a non-profit, cost-sharing basis to your group only;

That the book will not to be offered for sale to the general public or used for any commercial purpose.

If you wish the translation to be for sale at a later date, we must discuss broader authorization and copyright fees.

If you decide to make the translation, I would be most happy to receive one copy of the book.

Thank you again, and best wishes for your continuing success.

A handwritten signature in black ink, appearing to be 'Richard Bach', with a long, sweeping horizontal line extending to the right.

Richard Bach

तेजी ग़ोवर

निदेशक

प्रेमचन्द सृजनपीठ

विक्रम विश्वविद्यालय परिसर

विक्रम वाटिका के सामने

उज्जैन (मध्यप्रदेश)

456 010

दूरभाष : 0734-27811

Dear Arvind,

APR 17/1996

Mabel Dennison! Just that name sent me off on an hour-long trip of soul-stirring memory. This morning I rummaged thro' my papers only to find that I don't have my file marked 'Education' here in Ujjain. Now all you've to do is either call Sunjit (6854504) & take Mabel's address from him or write to Holt Associates with a letter for Mabel ^{George Dennison} they'll pass it on immediately - that's what they did with my letter to ~~her~~ c/o H.A. Later, ~~that~~ I realized that that was the least embarrassing & painless way of getting in touch with ^{Mabel} ~~her~~. I was told by H.A. that Dennison had been dead for 2-3 years. The rest is history. Our correspondence with Mabel turned out to be a most rewarding spiritual experience. All the codes were there in the book (Lives) & ~~it~~ with just 2 words life & love, with all their heat, simplicity and complexity, we wrote to her & she to us. I only hope she's still there, to give you a feeling of the same tenderness, and a feeling of those times in the streets of NY.

I have a feeling this letter is ~~sure~~ wishing to prolong itself. But before it does, let me tell you not to translate any of the ~~stories~~ stories to Haldane stories before checking with me first. Rats has already been published in Hindi - either in ~~रात~~ or in a rotten magazine ~~रात~~ रात - a short lived experiment by M.P. Edu. Dept. No - your translation must have given you great joy! I know exactly - but ^{then} there's so much to translate & share! ~~that~~ I've done 4-5 stories from that collection - my great favourite. All of them have been published. If NBT could procure copyrights, that's one book that needs to be seen in Hindi.

KK told me about ~~मेरे~~ मेरे ~~रात~~ रात when I called him

last night. We were supposed to meet at Baroda - & were supposed to visit the Narmada Andolan's schools together from there. This morning. I had to cancel my programme at the last moment due to health reasons. Amibiosis. Finally diagnosed. Very painful bladder & the parasite has caused a sharp drop in my Hb. I'm undergoing ^{last night} homeopathic treatment here at Ujjain. But a friend warned me, ^{that} since this problem has persisted o'er 2 months, I need to cure it quickly before it gets my liver. It all happened because of my month-long stay in Delhi (Film Festival & Book Fair). So Delhi is ruled out completely. The end-of-the-world sensation wipes out my soul. Rustam - poor soul - is in a real fix. He was supposed to quit Delhi next month & join the Simla Institute (Advanced Studies) as a Fellow. But his father is very ill & with him in Delhi. Rustam can't cope with the strain - CSDS & all the household chores + sleepless nights with his father, who gets worse during the night. Allopathy doesn't suit him. Rustam has studied homeopathy & is treating him himself. So he'll have to forego the Simla Fellowship, which means - forego his own work & work on the Centre's sundry projects which rub him the wrong way, intellectually & emotionally. And these long distance relationships - they exhaust you completely. They're teaching us things about life, we could well do without.

But then there's some joy, too. I have a small centre here for children - along the lines of our night school ~~agel~~ in 4/24/24. 15 kids. But I don't have any finances, whatsoever. I'm making do with a little help from ~~xxxx~~ - mostly in terms of occasional visits by Anni, who's a great one for puppets, masks, origami. But with my measly honorarium here, I find it hard to keep the library going. I think I'll request Sheila Sandhu for books.

सिख मेडिया by NBT is GREAT news & so is Fun Playground. I've
xeroxed copies of both and I'm sure for a few people - who'll love it!

And that brings me to another thing that occupies me these
days. Did I tell you that I have a regular correspondence course with
4 kids being home-schooled? Two of them are in Dharamshala (H.P.) —
Asen (8) and Coonie (5). ~~to build~~ Their parents aren't mobile — they
can't leave the place at all — so I built up their library over the last
few years. I visit them whenever I can manage to — but now it's
turning out to be more difficult. Asen's amazing reading skills keep
me gasping for breath. He's become such a passionate reader that I
can't keep pace with him anymore. I got the most heart-breaking SOS
calls from the children. I kept thinking of you & of Rishi Keshkar.

Not thinking, but dreaming. If these kids could somehow meet you
& spend a few hours with you, it'll be ^{nothing short of a miracle} ~~amazing~~ for them. But I can't
see how I can arrange this meeting & where. But IN CASE — H.P. or
Dharamshala ever figures in your itinerary, do please know. Otherwise
I'll have to bring them with me to Delhi. But when I visit Delhi
in May (this time) I'll have to borrow books (for 2-3 hours) from
you, get them copied & mail a huge package to them. Their
mother is keeping detailed records of their learning
process — very poetic! Remember Gays at Work? She's strict —
Those diaries need to be published, they're so good! I spent the
whole of last night play-acting with Asen & Coonie in my
dreams. I only hope I find you in Delhi in the 2nd week
of May. I'll try calling you before I leave here for

Delhi.

Thanks for the letter, Arund. Perhaps you can imagine all the joy & cheer it brought me. I must make it point to see you in Delhi. But once I hit Delhi, all beauty vanishes & I only keep dreaming of meeting my friends.

Do give my love to Sumita & Dulari.

Hoping to see you soon,

Tiji

Shobha Bhagwat
505 Shaniwar Peth
Pune 411030.

Tel : 450036.

28.6.1998

Dear Arvind,

Received your letter and the set of books. Thank you very much for this surprise. I liked the books. I would like to have ten sets for myself and ten for Balbhavan. You can send the books together. I am enclosing two cheques with this letter.

I am glad you are translating अविर्ग यज्ञ in Hindi. One of my friends has done the translation but it requires some corrections. Shall I send you that script?

'यज्ञा ने गीत यज्ञ' had been published long back in दत्तात्रेय. It is too good!

I have written a book for UNICEF. The title is 'अविर्ग यज्ञा'! It is for primary teachers and describes 20 activities which can be easily done in a school.

At present I have started working on a book on 'Rights of a child'. Though these rights have been published many times the inner meaning is never understood.

Did you not come to Pune this summer? This summer with all other activities our children made cloth bags and wrote messages like अविर्ग यज्ञा. Say no to carrybag, अविर्ग यज्ञा, sunset of carrybags for ever. They also sang a song I made about this and some parents also took a vow not to use carrybags.

The song is like this -

करीबों करीबों करीबों नको सामान करीबों नको.

करीबों वापरता (चप्पा चप्पा चरवा चरवे)

जिकडे जिकडे राकता

आणि कयवा हा करता

किती वेडेपणा करता

आजो कधी होणार ? - 1

भूमीमावा म्हणते आहे (सिंदरो आगे है -)

वेडेपणे थांबवा हे.

आज कलं देऊ नको

आशी रहाऊ तुम्ही

आजो नरा वहा वा हो - 2

देवा तुम्ही किती

पुनर ही भूमी

मिल जाऊ आम्ही

आजो तुम्ही - 3

करीबों करीबों करीबों नको सामान करीबों नको.

This year also children are busy with agriculture. Last year they experienced the whole process. It was a great joy!

Shonil is in Oxford at present. He is doing his Ph.D. in Biodiversity conservation in Forest Ecology. He wants to do his fieldwork in India for one year. Actually he has been travelling a lot for last five years through almost all states of India. He needs your guidance about whom to approach for his fieldwork expenses. You may suggest some names in institutions like Capart where you have good contacts. Dept of science & technology can also help! Please write to me about this.

Abha has completed her M.A., now she wants to work with Chandralekha in Madras. She is an unusual choreographer.

Love to Sunita & Dulari.

Shobha.

3-5-820 Hyderguda,
Hyderabad 500029AD
Sept: 26. 1997

Dear Arvind,

I was delighted to get the poem on the tree — and even more delighted to hear from you after all this long while.

I hope you are well and that all is well with you.

I had read the tree poem before, but that did not prevent me from ~~to~~ enjoying it all over again — as if it was totally new.

This morning I was in our school library and I found a book I had never seen or heard of before — Ophelia's Shadow Theatre, by

2/

Michael Ende — a hauntingly beautiful and most sensitive-ly & written book. It made me think of many, many friends I would like to share it with. — one of them being you.

Another book I've reread — and recently been reading out to some children — is "The Silver Sword" by Jan Serralleir. It's about ^{three} children in Europe ~~so~~ and what happens to them in the years immediately after the second world war — I thought of you many times as I read the book, wishing you could translate it. Have you read it? I shall be coming to Delhi about the 1st or 2nd of October and

3

shall bring it, with me
when I come. I would like
very much to meet you —
will you be in Delhi? I'll stay
till about the 9th — most
probably at the IDC.

What's happened to the
Hindi version of the
Blackboard book which
you were translating?
I'll find out tomorrow
from O L Hyderabad.
I hope there has been
no hitch.

with love to you —
& family

Shanta

P K Srinivasan Ph: 2346813
New No. 14 Old No. 20
25th St., Thillaianga Nagar
Chennai 600 061 INDIA

01	03	20	01
04	07	04	18
13	05	09	02
15	10	08	08

Dear Sri Arvind Gupta,

Greetings. I have your p.c. dt 22.02.01 received today. Since my interests are safe in your hands, I accede to your suggestion to have my CIET-NCEAT published books in English translated into Hindi by your good self and published by EKALAVYA for distribution at low cost, so long as no commercial publisher comes forward to take them for marketing. In case a commercial publisher services interest, I will refer him to you as copy right would continue to rest with me. By the by, the books as printed by CIET have numerous errors. So I would like to see the translations & check if the errors have been removed, before they are printed.

You may be interested to know that I have been entertained as Hon. THINK-TANK DIRECTOR OF INTELEXON EDUCATION SYSTEMS PRIVATE LIMITED, ADYAR, CHENNAI since Sep 2000 to provide inputs in non-routine thinking in instructional strategies of handling school mathematics in UK. Nirmala is serving as its coordinator.

My major contribution is school algebra from LKG, a veritable revolution of world wide importance as a continuation of centrally funded project in early 90s to empower children and save them from math phobia, avoidance, overstrain, etc. With warmest regards,
Cordially yours,
P K Srinivasan (77)



लोक जुम्बिश परिषद Lok Jumbish Parishad

क्षी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र,
जयपुर - 302004
B-10, Jhalana Institutional Area,
Jaipur-302004

अनिल बोर्दिया
अध्यक्ष

अ.शा.पत्रांक: लोजुप/जय/97/ 14170
फरवरी 17, 1998

प्रिय अरविंद

अभय बंग का "मेरा जादुई स्कूल" पढ़कर विभोर हुआ। अभय ने जिस तरह सीखा वह तो चमत्कारिक है ही, उनके लिखने का ढंग भी कमाल का है।

मैंने इसकी प्रति सभी स्थानीय साथियों को दी है, पढ़ने-सीखने के लिए। सुष्मिता बेनर्जी को भी भेजी है - हो सकता है वे इसे "संप्लव" में छापना चाहें। मैंने सुष्मिता को एक बात और लिखी है - वह यह कि मेरा स्कूल (विद्या भवन, उदयपुर) शायद किसी मायने में अभय के स्कूल से कम नहीं था। उसी पढ़ाई ने मुझ मध्यवर्गीय निखटू को छोटा मोटा शिक्षाविद् बना दिया। शिक्षाविद् इस मामले में कि मुझमें अच्छी शिक्षा / अच्छे शिक्षक की पहचान की तमीज़ आ गई। मैंने सुष्मिता से पूछा है कि अगर मैं भी इस तरह का स्मरण - आख्यान लिखू तो क्या वे उसे एडिट कर के पठनीय बनाकर संप्लव में छापेंगी।

भाई अरविंद आपके मुझ पर हजार ऋण है - अभय का यह लेख भेजना उनमें से किसी से कम नहीं है। कृपा बनाए रखें।

साभार,

(अनिल बोर्दिया)

श्री अरविंद गुप्ता,
सी 7/167 सफ्दरजंग डेवलेपमेंट एरिया,
नई दिल्ली- 110016

प्रतिलिपि :- डा. अभय बंग, चेतना विकास, वर्धा (महाराष्ट्र)

जयपुर 5/3

प्रिय अश्विनी-

आज ही आपका फी. का. मिला। कई-चांस
आज समय का पत्र भी पहुँचा - मुझे माहूम
जा के समय दोहरानी गढ़ायेरीली
-पत्रे गए हैं, परन्तु इतका लही पत्र
माहूम न होने से ठाकुरदासजी के पत्रे जा
उन्हे लिखी भेज दी।

श्रीमा भागवत जी के लिखन के मजुब
भी प्रतीक्षा रहेगी।

गुरुदेव
आपका



How Tel. No. (STD) 07138
[OH.] 5406, 7, 8
(Res) 5412

सर्व

ग्रामीण आरोग्य सेवा, शिक्षण व संशोधन संस्था

रजिस्टर्ड सोसायटी क्र. महा.३५/८५ गड. सार्वजनिक न्यास क्र. फ-२२४, गड.

शोधग्राम, पो.जि. गडचिरोली (महाराष्ट्र) पीन-४४२ ६०५ / फॅक्स : ०७१३२-२२४०३, फोन-०७१३२-४४०६/७/८ (कार्या) ४४१२ (निवास)

श्री. अनिल बोर्दिया
लोक जुंबिश परिषद
बी-१०, झालाना संस्थागत क्षेत्र
जयपूर - 302 004

संदर्भ क्र. :

ता. :

27.2.98

प्रिय अनिलजी

श्री. अरविंद गुप्ताको लिखे आपके पत्रकी प्रतिलिपी मिली। अपने लिखे लेखपर ऐसी प्रतिक्रिया पढकर खुशी तो हुअी ही! लेकिन मेरे स्कूलकी यादोंसे आपको अपनी स्कूल अगर याद आगयी तो हम अेक बिरादरीके है यह तुरंत महसूस हुआ। और चूँकि यह बिरादरी बहुतही अल्पसंख्यांक है, बडा अच्छा लगा। आपके स्मरणोंकी मैं राह देखूंगा।

पिछले 12 वर्षोंसे मैं और मेरी पत्नी रानी महाराष्ट्रके गडचिरोली जिलेमें 'सर्व' नामकी संस्था स्थापन कर कम्युनिटी हेल्थ और रिसर्च का काम कर रहे हैं। आपका पत्र वर्धा होते हुअे यहाँ पहुँचा।

आप कुशल होंगे।

सविनय

डॉ. अभय बंग

SHANTA RAMESHWAR RAO

Mr Arvind Gupta
C7/167 S D A
NEW DELHI 110 016

July 18, 1994

My dear Arvindji,

I didn't see your post card (April 27) until yesterday. It had arrived perhaps just after I went away from Hyderabad for the summer vacation and was unfortunately not redirected. While it waited for my return it was misplaced and was discovered only yesterday (with some other letters). I am making haste to reply.

I am very happy that you think so highly of Eleanor's Blackboard Book. I do too and I agree that it would be very useful if similar materials are made available in Hindi (and other Indian languages). We in Orient Longman are very keen on publishing educational materials in the regional languages, and in my opinion you would be the ideal person to undertake the task given your wide range of educational skills.

There are however, a number of issues that arise in the context of regional language primary education and especially in relation to Hindi. I am sure you have addressed yourself to these and have definite opinions on the subject of Hindi (as medium first language mother tongue / second / third language) and about primary level language instruction within that policy framework. Given the complexities it is essential to evolve (if you have not already done so) methodologies of literacy acquisition. In English language teaching the alphabetical order method has, at least in progressive theory, been found less efficient than whole word / whole sentence / communicative, interactive and structural approaches. As part of the A.P. Primary Education project, categories of Telugu letters based on shape similarities are being set into a communicative and interactive context as a technique. How would this work for the Nagri script? (Refer Blackboard Book p.3, 4 & 5). The suggested language work level sections in Topic Based Work would also have to be worked out within such a framework / methodology / philosophy as also language structure (p. 69-73).

One of the instructions missing in the pre-literacy chapter p.58 Early Writing Practice is the need to connect sound and letter while using the blackboard. The book is wonderful for grammar. The problem of first / second / third language would arise especially in the context of the chapters on Mathematics, Geography, History and Science.

...2/-

One way to resolve the problem may be to think in terms of separate books or may be even a set of 4 smaller books (unless the effort is to promote integrated teaching which it must be at the primary level). You may be interested in developing a set yourself. I am sure you and the Hindi editor Ms Sugandhi Kapoor in our office in Delhi (Orient longman ltd., 1/24 Asaf Ali Road, New Delhi 110024, Tel: 734957) would be in the best position to discuss this. Orient longman publishes in Hindi from Delhi and also from Patna (where you may already be in touch with the Bihar Education Project for Primary Schools. I am passing on a copy of this letter to my husband, J. Rameshwar Rao, and I am sure he will also put you in touch with the right persons.

I really hope that you will be able to develop ideas and techniques for effective blackboard use in Hindi. Please pardon this long letter which probably only reveals my ignorance but I am excited about your project (and others) and have discussed it at length with my daughter Buchamma who is here in Hyderabad and who is deeply interested in finding valid methods of extending teaching methodologies and developing (rather than translating materials into the regional language). She too felt strongly that I must seek your help and ask you to share your thoughts and methods in relation to Hindi language teaching — All in all we are very enthusiastic about your offer and hope that it will bring about not one but many ideas and books. Perhaps you have seen our Amaltas Reader Series.

I look forward to hearing from you and re-establishing contact with you.

With regards

Yours sincerely

 Shanti Rameshwar Rao

Shanta Rameshwar Rao

cc: Mr Arvind Gupta
Plot 51, Survey 34/1
Vidyanagar 509 Area Air Force
Pune 411 032



Dr. P.J. LAVAKARE,
ADVISER

तार/Telegram : SCIENCTECH
: 662628 (PABX)
दूरभाष/Telephone : 662626 (PABX)
: 662260 (PABX)
टेलिक्स/Telex : 31-66096 DST IN
: 31-61805 DST IN

भारत सरकार
विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF SCIENCE & TECHNOLOGY
DEPTT. OF SCIENCE & TECHNOLOGY, NEW DELHI - 16.

D.O.No. 3/41/86. Adv. STP

19th November, 1986.

My dear Arvind,

Thank you for your letter dated 8th November, 1986 informing me that you have given my name as a referee for your application for the Indira Gandhi Memorial Award for Science Popularization instituted by INSA. It would indeed be a pleasure for me to write about you to INSA as and when they refer the matter to me. I am also happy to see that you are being involved in a number of national programmes of various agencies. Kindly do keep me informed as and when you find time and when you think something interesting has happened. I still remember the days when we had gone for an outing during our short visit to Pachmarhi during the All India State Council Workshop. Our stay at Pachmarhi has brought me very close to your programme and your activities. I would like to wish you ~~all~~ the best in your endeavour.

I would also like to thank you for sending me publications on Prof. D.D. Kosambi.

With kind regards,

Yours sincerely,

P.J. Lavakare
(P.J. LAVAKARE)

Dr. Arvind Gupta,
201/D6, Yogi Park,
12 A Koregaon Park,
POONA - 411 001.

Anil Bordia
Additional Secretary

Ministry of Human Resource
Development
(Deptt. of Education)
New Delhi-1

21 November 1986

Dear Arvind,

Please forgive me for the delay in replying to your letters dated 23.7.86 and 18.8.86. I did receive a copy of Kosambi's Science, Society and Peace and also your fascinating little book *संस्कृत में*.


I have been a Bhak~~t~~ta of Kosambi; but I had not read this book. I was, therefore, delighted to receive it. I would like to receive two more copies of this book and also the statement about the amount I have to pay for all the three ~~books~~ copies.

खेल खेल में is marvellous. I have requested NCERT to examine the possibility of having sufficient copies printed for circulation among all Hindi speaking teachers who will be trained during the next summer vacation. Do you have any suggestions to get it translated into other languages of the country? It would be very good if we could do that. Any suggestions of other titles which we can use as training material during the summer vacation training?

You will recall that I had had a talk with you regarding SANDHAN. The Articles of Association of SANDHAN are attached. We are now intending to participate in a large programme being taken^{up} by Government of Rajasthan for training of village youth, men as well as women, to work as Shiksha Karmis, who will replace the formal teachers. I will soon send you some more material on this subject. We will need your association with this project in a substantial manner.

With warm regards,

Yours sincerely,


(Anil Bordia)

Shri Arvind Gupta
46, Vidyanagar
509 Area, Air Force
Poona-411032.

DR. B. EKBAL
Dept. of Neurosurgery
Medical College Hospital



Calicut-673008
Phone : 61531 (Hospital)
63919 (Office)

KERALA SASTRA SAHITYA PARISHAD

8th Dec. 1986

Dear Aravind Gupta,

I was transferred to Calicut and joined here about 7 months back. Please use my new address for future correspondence. I was in receipt of your letter regarding the reprint of J.D. Bernal's Book. I had forwarded your letter to Mr. R. Radhakrishnan, who is in charge of KSSP Library in Trivandrum for necessary action.

I had seen your UGC TV Programme. It was good. A few more such programmes should be done.

We have already utilized your teaching methodology and produced a number of Kerala Guptas in KSSP !

Please keep in touch

With regards,

Sincerely yours,

DR.B.EKBAL

To

Mr.Aravind Gupta,
201-D/6, Yogi Park,
12-A, Koregaon Park
Poona-411 001.



ગિજુભાઈ જન્મશતાબ્દી સમિતિ
નૂતન બાલ શિક્ષણ સંઘ, ગુજરાત.

કાર્યાલય :-

શ્રી દક્ષિણામૂર્તિ વિદ્યાર્થી ભવન,
ગિજુભાઈ બધેકા માર્ગ,
ભાવનગર-૩૬૪૦૦૨.

બાવક નં.

તા. Nov. 11, 1986

Dear Mr. Gupta,

Thank you for your letter of the 3rd inst.

Relevant year for calculating the copy right period is 1939 and not 1928. Gijubhai died in 1939. So the copy right holds good upto 1989.

I have got some of Gijubhai's "Stories for children" translated into English. We are considering publishing them. But our resources are very limited. I shall be thankful to you if you please suggest some publishers who might be interested in undertaking publication thereof.

By the way, I never suggested that you had some financial interest in promoting Gijubhai's ~~letter~~ literature. I am sorry if my letter has given you this impression.

With regards



To
Mr. Arvind Gupta
PUNE - 411 001

Yours Sincerely

વિમુબેન બધેકા

(Vimuben Badheka)

अतियाँ मुझे मिली हैं और दूसरी-
 तृतीयाँ हैं। कुछ और अतियाँ मिलने के
 लिए मैं जाना तो है कि इसी प्रकार
 से-हिंदी प्रेक्षाओं का कार्यक्रम।

तुम दिन नाच को देखनी का
 रहे हो? इस मोग 18 से 24 वर
 गायन चली दीकसगढ़ से रहेगे।
 जाना है कि तुम 18 से शुरू पहले
 पहुँच जाओगे और हमारी प्रत्यक्षता
 होगी।

माला मकर विजय-जी और श्री
 सेयका संपादक हैं 1920-60 के
 100 पुरिदा विभिन्न विजयगीतों और
 जो की कविताओं का संग्रह
 'माला' निकालने का इरादा है
 है।
 गुरु मिलने पर।

प्रकाश
 श्रीराम

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
 INLAND LETTER CARD

Mr Arvind Gupta
 201/D6 Yogi Park
 12-A Koregaon Park
Poona 411 001

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES
 पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
 प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS

पिन PIN



Dear Arvind & Sumita
5500 TRIER an der Mosel
Karl-Marx-Haus

10 Oct 86
Cologne

Karl only lived here for a year & half
but its now a very nice (but dull)
Social-Democrat run museum. I
made the "pilgrimage" to Hitler's
stati gift with a Bangladeshi
friend after a Green Party conference
on "Women + Ecology" and we
started wondering how the Greens
might do such a "museum". Well,
they are also embroiled in con-
trovery. (I am bringing some
tapes on all of this) Anyway, there
is also an anti-nuclear, anti
US-missile movement near
here, south of Mosel. So,
life & struggle go on. See you
soon - Love, Gail

ORGA
FUNK

MIT LUFTPOST
FAK AVION



RAHMEL-VERLAG GmbH 5024

Sumita Pandya / Arvind Gupta
46, Vidyanagar
509 Area Air Force Colony
PUNE 411032
INDIA

TR 5500/28